जन-ज्ञान (मासिक)

नवम्बर 1997

वासुदेव बलवन्त फड़के

जन्म : ४ नवम्बर, १८४५ बलिदान : १७ फरवरी १८८३

ऐतिहासिक निर्णय

आज से पच्चीस वर्ष पूर्व दयानन्द संस्थान (नई दिल्ली) कार्यालय में वेदभाष्य प्रकाशन समिति की बैठक आर्य समाज के तपस्वी संन्यासी आदर्श वीतरागी स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें चारों वेदों का हिन्दी भाष्य बारह हजार पांच सौ की संख्या में प्रकाशित करने व चारों वेदों का मूल्य पैंतीस रुपये रखने का ऐतिहासिक निर्णय सर्वसम्मति से किया गया।

समिति में अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के अतिरिक्त दर्शनों के प्रसिद्ध मंगला प्रसाद पारितोषिक प्राप्त आचार्य श्री उदयवीर जी शास्त्री, गुरुकुल चित्तौड़ के आचार्य श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, प्रसिद्ध दार्शनिक प्रो० रत्नसिंह जी, पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार, वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ श्री जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती, सम्पादक आर्य मर्यादा श्री पं० बिजयपाल शास्त्री, एम. ए., श्री राजेन्द्र सिंह जी (मलिक) रा० सा० चौ० प्रताप सिंह जी, पं० मनोहर जी विद्यालंकार और आचार्य जगदीश विद्यार्थी (वर्तमान में स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती), पं० भारतेन्द्रनाथ, पंडिता राकेश रानी, पं० महेन्द्र कुमार जी शास्त्री, श्री चन्द्रमोहन जी शास्त्री, पं० देवव्रत जी धर्मेन्द्र, प्रो० वेदव्रत जी वेदालंकार सहित १७ सदस्य उपस्थित थे।

इसके पश्चात, पिछले पच्चीस वर्षों में संसार के इतिहास में प्रथम बार परमपिता परमात्मा की अमृत वाणी 'वेद' के हिन्दी भाष्य को दयानन्द संस्थान अपने सीमित साधनों व अनथक प्रयास से लगभग एक लाख घरों, मन्दिरों व संस्थाओं तक पहुंचा चुका है। संस्थान द्वारा संचालित यह आन्दोलन 'वेद भक्तों' को प्रेरित कर पाया इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

पं० राकेशरानी
अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

ओ३म्
जन-ज्ञान
कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्
वेदों!
नई दिल्ली

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

कार्यालय
2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 5724741, 5815457

प्रधान कार्यालय
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-36, दूरभाष : 7202249

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
संरक्षक : रमेशचन्द्र चोपड़ा
सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक, दिव्या आर्य
वार्षिक मूल्य - 70 रुपये
आजीवन - 501 रुपये
एक प्रति - 7 रुपये
विदेश में विमान से, 50 पौंड, 65 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
विदेश में आजीवन 5001 रुपये
नवम्बर 1997 वर्ष 32 अंक 7

सम्पादकीय

वारांगना सिद्ध हो रही है राजनीति

शताब्दियों पूर्व योगी भर्तहरि ने उद्घोषित किया था 'वारांगनेव नृपनीतिरनेक रूपा' अर्थात राजनीति वेश्या के तुल्य अनेक रूपों को धारण करती है। दूसरी ओर राजनीति का एक आदर्श रूप है, राजधर्म जिसकी सविस्तार व्याख्या महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में की है। राजनीति जब राष्ट्र विखण्डन के बीज बोने लगे तो नैतिक मान्यताएं और परम्पराएं तिरोहित होने लगती हैं। राजनीति के इस विकृत या वारांगना रूप का दर्शन तथाकथित राजनीतिज्ञों द्वारा मर्यादाओं के उल्लंघन और नियमों को निर्वसन करने के घृणित प्रयासों के रूप में हो रहा हैं हाल में घटित हुए घटनाक्रम ने जो दृश्य भारत के राजनीतिक मंच पर मंचित किया है, उसने वर्तमान राजनीति को माफिया गिरोहों की अय्याशी का अखाड़ा सिद्ध कर दिया है, जहां माफिया डान आदेश देता है और गिरोह का गुर्गा न्याय, नियम और मानवीय मूल्यों को अंगार लगाकर राष्ट्रीय ऐक्य के संहार से भी इंकार नहीं करता। कुछ ऐसा ही दृश्य उस समय घटित हुआ जब आदेश हुआ कि उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन घोषित करो अन्यथा समर्थन वापसी का ब्रह्मास्त्र दाग दिया जाएगा जो 'इन्द्रासन' को क्षार-क्षार कर देगा। राष्ट्र ने देखा कि केन्द्र की चौदह रंगी मयूरी सत्ता मुर्गा बन कर राष्ट्रपति शासन की बांग लगाने को सिद्ध हो गयी।

केन्द्र की सत्ता ने नैतिकता, लोकतन्त्र और न्याय के हित में स्वयं की बलि चढ़ा सकने की प्रेरक राजधर्म की डगर के स्थान पर सिद्धान्तों को ही अवसरवादिता की बलि वेदी पर चढ़ा देने की अपनी तत्परता का आभास दिया। राष्ट्र को गुण, गरिमा व गौरव से मंडित करने का जिन पर दायित्व है, वे सत्ता सुख से वंचित हो जाने के भय से भयाक्रांत होकर भीरुता के पुतलों में बदलते दृष्टिगोचर हुए। उनकी इस सत्ता लिप्सा को निहार, लोकतन्त्र के प्रति आस्थावान जन-जन की वाणी से धिक्कार-धिक्कार का स्वर निनादित हुआ। उसे ऐसा करने का अधिकार भी है, क्योंकि स्वदेश के जागृत मतदाता के कारण ही लोकतन्त्र चलता और पलता है। उसी के परिश्रम से बहे स्वेद से मन्त्री गण की स्वर्ण पीठिकाएं ऐश्वर्य का सुख भोग पाती हैं। यक्ष प्रश्न का सटीक उत्तर सहस्रों वर्ष पूर्व एक युग पुरुष ने दिया था। जो वारांगना राजनीति का दास कोई 'धर्म निरपेक्ष' राजनीतिज्ञ नहीं अपितु राजधर्म

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक : पंडिता राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 द्वारा डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 305/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित एवं प्रकाशित।

को व्यवहार में उतारने वाला 'धर्मराज' था। उस धर्मराज (युधिष्ठिर) ने कहा था प्रत्येक व्यक्ति को एक दिन जाना है, किन्तु फिर भी मानव स्वयं को अमर समझ कर व्यवहार करता है। ऐसे ही सामान्य जन की टोली ही आज सत्ता की हमजोली है।

खंडित भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में प्रथम बार यह परिदृश्य 'राजनीति' के मंच पर उस दिन उभरा, जिस दिन भारतीय संविधान की धारा ३५६ के अन्तर्गत किसी राज्य विधानसभा को भंग करने की केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की अनुशंसा को राष्ट्रपति महोदय ने पुनर्विचार के लिए लौटाया। राष्ट्रपति का यह निर्णय ही उन सब के लिए लज्जित होने के लिए पर्याप्त था, जिन्होंने राष्ट्र के विस्तृत हित को उपेक्षित कर अपने चाटुरंगी टोले के सत्ता हित को प्रमुख मान कर उत्तर प्रदेश में राज्य विधानसभा को भंग करने की अनुशंसा की थी।

देश की वर्तमान राजनीति में मंचित हो रहे आज के 'महाभारत' में राष्ट्रपति श्री के०आर० नारायणन ने लोकतन्त्र की द्रुपद सुता का जो चीर हरण हो रहा था, उसे रोक कर अपने पद की गरिमा को, स्वकर्तव्य पालन कर नवल धवल किया है। राष्ट्रपति नारायणन पांच हजार वर्ष घटित हुए श्रीकृष्ण तो नहीं, जो चीर में असीमित करने का 'चमत्कार' दर्शा पाते। दुःशासन के भुजबल को चुनौती देकर उसे सर्वथा शून्य कर पाने की क्षमता तो संविधान की शक्ति प्रभा ने उन्हें प्रदान नहीं की है, किन्तु असहमति का संकेत देने का जो हक उन्हें मिला है, उसे उन्होंने 'नाहक' नहीं जाने दिया। जब वर्तमान युग के भीष्म-सिंहासन के समक्ष शीश झुका लें और सत्ता आसन की चकाचौंध किसी कर्णधार को धृतराष्ट्र बना दे तो लोकतन्त्र की द्रौपदी का चीर हरण ही नियति है। स्वदेश में आरोपित प्रणाली में यह भी एक विचित्र दृश्यावली उपस्थिति हुई है कि जिसमें राष्ट्रपति महोदय न्याय की रक्षार्थ सजग प्रतीत हुए तो उन्हीं के प्रतिनिधि राज्यपाल ने न्याय की चिता सजाने में अपने कर्मनिष्ठा का दर्शन पाया। जब संवैधानिक शक्तियों से सम्पन्न और संविधान रक्षा के संकल्प से प्रतिबद्ध जन ही मर्यादाओं के वक्षस्थल पर पग धर कर नैतिकता की लक्ष्मण रेखा को लांघ कर देश में बहुचर्चित हुई 'माफिया' प्रवृत्ति के किसी दागानुदास के तुल्य आचरण करने लगें तो जनता की 'जानकी' को यदि किसी साधुवेश धारी छली-बली का स्मरण हो आए तो इसमें अचम्भा भी क्यों हो?

जो सुधिजन विपक्ष में रहते हुए धारा ३५६ को गहन गड्ढे में दफन करने के संकल्प मतदाता के समक्ष आए दिन दोहराते थे, वे ही सत्ता पक्ष में आते ही अपनी कीर्ति की सदरी (वास्केट या कोट) में उसी धारा को गुलाब के सुगन्धित पुष्प के तुल्य लगाने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभूत कर रहे हैं, यही आज की राजनीति रूपी वारांगना की मोहक अदा है। कलियुग के केहरी, समर्थन के नाखूनों की असिधारा के बल पर युग बोध के कमल को कुचलने का करिश्मा दिखाने को बेकरार हैं।

उनके इस प्रहार की धार को कुन्द करने के लिए पीड़ित पक्ष ने भी नैतिकता और सिद्धान्तवादिता तथा मर्यादा की चदरिया को उतार कर, 'शठे शाठ्यम् समाचरेत' का रक्षा कवच धारण करने को ही युग धर्म माना है। उसने भी प्रहारक के दुर्ग पर फूट के अंगार बिखराए और उत्तर प्रदेश में उसके अस्तित्व के नींव की ही बल्लियां उखाड़ दीं। उनके इस कृत्य पर अनेक न्याय, नैतिकता तथा सिद्धान्त निष्ठ जन का उन्मन होना स्वाभाविक ही है। इस पर परिवर्तन से अनेक सुहृद जन स्वाभाविक रूप से ही नैराश्य भाव से ग्रस्त हैं। वस्तुतः संयुक्त मोर्चा, कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी उन सभी को आदि शंकराचार्य की प्रश्नोत्तरी पुस्तिका के एक वाक्य पर दृष्टिपात अवश्य ही करना चाहिए। वह वाक्य है 'शल्य परं किं निज मूर्खतैव' अर्थात् सबसे बड़ा कंटक कौन है? अपनी मूर्खता ही।

घटनाक्रम में एक मोड़–सुखद मोड़ उस समय अवश्य ही आया था जब मोर्चा मन्त्रिमण्डल के अवसरवाद के कटोरे में किसी छिद्र से बुद्धि का प्रवेश हुआ और उसने उत्तर प्रदेश विधानसभा भंग करने की अपनी पूर्व अनुशंसा को दोहराने की हठवादिता नहीं दोहरायी। कल्याण की कुर्सी फिलहाल प्रेत बाधा से मुक्त है। किन्तु इस समग्र क्रम से यह सिद्ध हो गया है कि राजनीति के संबंध में आज के संदर्भ में भर्तृहरि की उक्ति ही साकार हो रही है। स्वदेश इस त्रासद स्थिति से तभी उबरेगा जब वह ऋग्वेद के उस मन्त्र को व्यवहार में उतारेगा जिसका उल्लेख देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठम समुल्लास के आरम्भ में मनुस्मृति के एक उद्धरण के तुरन्त बाद अंकित किया है।

ऋग्वेद का वह मन्त्र है–

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।

अर्थात् ईश्वर आदेश करता है कि (राजाना) राजा और

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

वारांगना सिद्ध हो रही है राजनीति
—सम्पादकीय १
सामयिक विचार ४
—. महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी ५
आपके पत्र ८
भारतीय काल गणनानुसार वेदों की उत्पत्ति
—दयानन्द सरस्वती १०
वेद का समाजवाद—*आचार्य डॉ० सत्यव्रत राजेश* १२
अमर शहीद वासुदेव बलवन्त फड़के—*नरेन्द्र अवस्थी* १४
राष्ट्रीय अस्मिता के केन्द्रों की उपेक्षा—*नरेन्द्र मोहन* १६
भारत पर चतुर्दिक आक्रमण—*आनन्द शंकर* १९
क्या १५ अगस्त भारत का स्वाधीनता दिवस है?
—हरदयाल देवगुण पूर्व सांसद २१
तिरंगे की सौगन्ध—*डॉ० विजय कुमार मेहता, न्यूयार्क* २४
भारत ने यूरोप को बहुत कुछ दिया है—*रामस्वरूप* २६
विश्व में भारतीय सर्वाधिक अग्रणी—*जितेन्द्र कुमार* ३०
चार घटनाएं—एक शिक्षा—*कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर* ३१
गणित के विकास की यात्रा कथा—*प्रेमा राय* ३३
हिन्दू राष्ट्र नेपाल में आर्य समाज की स्थिति-३ ३५
—भवानी लाल भारतीय
स्वास्थ्य चर्चा ३६
रामनारायण कावरा एक स्मृति ३७
महिला जगत् ३८
सिख भाई द्वारा आर्य साहित्य का अनुशीलन ३९
—मनमोहन कुमार आर्य
छत्रपति शिवाजी ४१
पोलो जगत् का सिरमौर रही जयपुर पोलो टीम ४६
समाचार दर्शन ४८

प्रजा के पुरुष मिल के (विदथे) सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक राजा प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में (त्रीणि सदांसि) तीन सभा अर्थात् विद्यार्य्य सभा, धर्मार्य्यसभा, राज्यार्य्य सभा नियत करके (पुरुणि) बहुत प्रकार के (विश्वानि) समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को (परिभूषथः) सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करे।

इसी समुल्लास में महर्षि ने उद्धृत किया है—

राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्रा विशं धातुकः।

विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमति न पशु मन्वत इति॥ १ ॥ शत० कां० १३/अनु० २/ब्रा० ३

अर्थात् जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो (राष्ट्रमेव विश्वाहन्ति) राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाशक होता है अर्थात् (विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति) वह राजा (शासक) प्रजा को अत्यन्त पीड़ित करता है। इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह व मांसाहारी हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे (राष्ट्र विशमत्ति) स्वतन्त्र राजा (शासक) प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देता, श्रीमान की लूट खूंट अन्याय से दण्ड लेके अपना प्रयोजन पूरा करेगा।

परिस्थितियां राष्ट्रवासियों को उपरोक्त उद्धरणों की सार्थकता का मर्म समझा रही हैं और सतर्कता का संदेश भी दे रही है। क्या राष्ट्र के प्रवुद्ध जन इन सब पर चिन्तन मनन कर राजनीति के विकृत रूप से राष्ट्र को मुक्ति दिला कर राष्ट्रधर्म का पालन करेंगे? कालचक्र इस प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा में है।

विश्व में वैदिक विचारधारा के प्रसार के लिये संघर्ष में लगे

दयानन्द संस्थान

को प्रतिमाह आपका सहयोग चाहिये।

सामयिक विचार

सधा हुआ निशाना

उत्तर प्रदेश विधानसभा में कल्याण सिंह सरकार को जब विश्वास मत प्राप्त हो गया तो कई राजनैतिक दलों के नेताओं ने कहा कि वे भौंचक और हतप्रभ हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण नेताओं ने इसके लिए भारतीय जनता पार्टी की कटु आलोचना भी की। ऐसे में भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी का यह कहना कि उनकी पार्टी अब कांग्रेस के सांसद भी तोड़ेगी और मौका मिला तो उत्तर प्रदेश की तरह ही केन्द्र में भी सरकार बनाएगी, अकारण या बिना सोचे समझे दिया गया बयान नहीं है। ऐसा नहीं है कि उत्तर प्रदेश की सरकार बच जाने से आडवाणी अतिरेक का शिकार हो गए हैं या कांग्रेस या किसी अन्य दल को चिढ़ाने की गर्ज से ऐसा कह रहे हैं। यह राजनैतिक अपरिपक्वता से नहीं, बल्कि अत्यन्त सुलझे हुए दिमाग से दिया हुआ वक्तव्य है। यह सधा हुआ तीर है जो ऐन निशाने पर जाकर लगा है। भाजपा को संयुक्त मोर्चा और उसकी सरकार को बाहर से समर्थन दे रही कांग्रेस की वास्तविक स्थिति का अंदाजा हो गया है। इनके बीच की दरार अब उनसे भी छिपी नहीं रह गई है। बसपा द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद मिले ४८ घंटों में उत्तर प्रदेश विधानसभा में कल्याण सिंह ने विश्वास मत प्राप्त कर लिया। इस पर केन्द्र सरकार में मौजूद संयुक्त मोर्चा के घटक क्षेत्रीय दलों ने प्रदेश में वही धारा ३५६ लगाने की सिफारिश की, जिसे हटाने के लिए वे लम्बा संघर्ष चलाते रहे हैं। फिर बाद में अपने फैसले को उन्होंने हास्यास्पद ढंग से वापस भी ले लिया। इस आचरण से भाजपा क्या यह नतीजा नहीं निकाल सकती है कि बुनियादी उसूलों से भी डिग जाने वाली इनमें से कुछ क्षेत्रीय पार्टियां कल उसके साथ भी आ सकती हैं। संयुक्त मोर्चा सरकार ने जिस बैठक में अपनी सिफारिश (कि उत्तर प्रदेश सरकार अब बर्खास्त नहीं की जाएगी) वापस लेने की घोषणा की उस बैठक में मुलायम सिंह गुस्से में बाहर निकल गए थे। बाहर बयान दिया कि यह एक गलत निर्णय हुआ है। वे स्वयं नाम ले कर प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल की आलोचना नहीं कर रहे हैं, लेकिन उनकी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नाम ले-ले कर दोष मढ़ रहे हैं। खुद मुलायम सिंह भी जन सभाओं में कूटनीतिक भाषा में कह रहे हैं कि 'नेता की नीयत ठीक नहीं हो तो कुछ भी हो सकता है।' माकपा के नेता हरकिशन सिंह सुरजीत पानी पी-पी कर भाजपा के इस जोड़तोड़ को और धारा ३५६ नहीं लागू करने के केन्द्र के फैसले को कोस रहे हैं। लेकिन उन्हीं के मुख्यमंत्री ज्योति बसु इसका विरोध कर रहे हैं। राष्ट्रपति के आग्रह और कानूनी दबाव के आगे कांग्रेस भी चुक गई और उसने अपने पत्ते समेट लिए। लेकिन सबको समझ में आ गया कि वह अपना घर नहीं संभाल पाने का गुस्सा दूसरे के सिर पर निकालना चाहती थी। आखिर वर्तमान दल बदल कानून उसी के शासन काल में बना है। कांग्रेस के केन्द्रीय नेता सत्ता से बाहर लम्बे समय से बनवास झेल रहे हैं। देवेगौड़ा हटाओ अभियान के समय उनमें आस जगी थी कि अब नए पार्टी अध्यक्ष उन्हें सत्ता दिलाएंगे। लेकिन वह कोशिश और उससे जुड़ी आशा बेकार साबित हुई। इस बीच उत्तर प्रदेश में नरेश अग्रवाल और उनके साथियों ने कांग्रेस से अलग होकर और भाजपा से जुड़ कर एक और नया रास्ता दिखा दिया है। भाजपा अध्यक्ष का यह बयान स्थिति के इसी आकलन से निकला है। एक तरफ संयुक्त मोर्चा के भीतर मची यह उथल-पुथल है। दूसरी तरफ बिखरती हुई कांग्रेस है। ऐसे में आडवाणी के अचानक आए इस बयान की आलोचना यह कह कर की जा सकती है कि यह दल बदल के पक्ष में ताल ठोक कर दिया गया बयान है। लेकिन राजनीति में सिर्फ प्रतिद्वंदी से ही सदाशयता की आशा व्यर्थ है, दूसरी पार्टियों को अपना घर भी सहेजना होगा। इसके बदले वे सिर्फ अपनी बौखलाहट का ही प्रदर्शन कर रही हैं। *(नवभारत टाइम्स से साभार)*

विशुद्ध राष्ट्रवादी आन्दोलन को
बलशाली बनाने हेतु
'जनज्ञान मासिक'
का प्रचार कीजिये।

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

गुण्डापन बढ़ रहा है : प्रलय कौन रोकेगा?

मानवता के खण्डहर बनाने को उत्सुक दानवता का प्रतिनिधि गुण्डापन आज अट्टाहस करता हुआ आगे-आगे बढ़ता चला जा रहा है। उसका बढ़ना विश्व के समस्त शान्तिप्रिय वर्ग के लिए जलता हुआ संकट का संदेश है। प्रस्तुत लेख में इसी संकट से छुटकारा पाने के लिए कटिबद्ध व संगठित हो इसके उन्मूलन की तैयारी करने का आमंत्रण दिया गया है। देखें कौन इसे स्वीकार करता है?— सम्पादक

मस्तिष्क की उधेड़बुन में नहीं, जीवन की वास्तविकता पर खड़े हो, जब हम चलते हैं, देखते हैं और सोचते हैं तो हमें स्पष्ट अनुभव होता है कि आज राष्ट्र में गुंडापन बल पाकर बढ़ता जा रहा है।

घूमन निकलिए, सड़क पर, आप देखेंगे कि चलने वाले मनुष्य भूखे भेड़िए की तरह कुछ निगल डालने के लिए, लपलपाती जीभ किए भौंकते गुर्राते से चल रहे हैं। शहरों में मिटी लुटी मानवता की अर्थी संजोए, अन्दर से सूखे, बाहर से हंसने का प्रयत्न करते हुए मनुष्य नामधारी जीव चारों ओर फैले दिखलाई पड़ेंगे। दूसरों के कष्टों को देखकर हंसने की प्रवृत्ति, परायी दुर्बलता से लाभ उठाने की भावना और अपनी मान मर्यादा को स्वाहा कर, दूसरों की इज्ज़त से खिलवाड़ करते रहना आज के साधारण जन का स्वभाव बन चुका है। क्या होगा इसका अन्त? हम यही सोच रहे हैं।

अगर आपको हमारी बात पर विश्वास न हो तो आप अपनी ही नजर दौड़ाइए चारों ओर, आपको लगेगा कि आत्मा शून्य नर कंकाल, अपनी बर्बादी के बाद सभी की बर्बादी चाहता हुआ अट्टहास कर रहा है। पिशाचों से चेहरे, राक्षसों सा खिलवाड़, पशुओं सी उच्छृङ्खलता मानव का स्वभाव बनती जा रही है। कहां है स्नेह, प्रेम, सौहार्द, भ्रातृत्व, नैतिकता इन सबकी तो होली जलाकर महानाश की काल घटा को उमड़ घुमड़कर आने का आमंत्रण दिया जा रहा है। जहां मानवता का अवशेष है भी, वहां भी वह सिसक रही है, चीख रही है रक्षा के लिए आर्त पुकार कर रही है। उसकी यह पुकार कहां, कब और कौन सुनेगा? यही प्रश्न है। इसके साथ ही यह प्रकट सत्य है कि इस बढ़ते हुए गुण्डेपन को यदि न रोका गया तो देश का उत्थान असम्भव है। सड़कों की गुंडागर्दी, सिनेमा हालों की उच्छृङ्खलता, तांगे और रिक्शा के अड्डों का जंगलीपन और कदम-कदम पर होने वाले अश्लील और अभद्र प्रदर्शन कैसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करेंगे? यह समझ नहीं आता! रात के १२-१२ बजे तक शराब और ताड़ी के नशे में मदहोश मनुष्य पशु राष्ट्रोत्थान में कैसे सहारा बनेंगे?

सोचिए! और सोचिए, सभ्य कहाने वाला उच्चवर्ग जिसके सम्मुख, विलासिता, फैशन, रंगरेलियों और पैसे को खर्च करने के सिवाय और कोई लक्ष्य ही नहीं है, क्या कभी भी कुछ भलाई की बात सोच सकेगा? यदि नहीं, तो क्या राष्ट्रोत्थान के लिए चिन्तित मनुष्यों का यह प्रथम कर्त्तव्य नहीं है कि वह मानवता के पतन को रोकने के लिए कोई प्रभावशाली पग उठाए।

इससे पहले हमें यह सोचना होगा कि यह राक्षसी प्रवृत्ति मनुष्य पर क्यों हावी होती चली जा रही है? मनुज के भीतर का बल क्यों पशु बनता जा रहा है? और यदि हम गहरायी से कारण की खोज करने चलेंगे तो हमें ज्ञात होगा कि सभी ने अपने लक्ष्य को छोड़ दिया है। हमें पता ही नहीं है कि हमने करना क्या है, क्यों हमें यह सुन्दर जन्म मिला है, बुद्धि मिली है, शरीर और मन मिला है? क्या इसीलिए कि हम इसके द्वारा अशांति को बढ़ाते रहें, स्वयं जल-जल कर भी दूसरों को जलाने के सामान जुटाते रहें, और चीखते चिल्लाते जिन्दगी की गाड़ी को ढकेलते रहें? पर कौन सोचे इन प्रश्नों को?

आज की शिक्षा, दीक्षा और वातावरण केवल लौकिक साधनों द्वारा अधिकाधिक आराम उठाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। उसकी प्रेरणा है शरीर को सजाओ, उसी को तृप्त करो! इसी में आनन्द है, यही लक्ष्य है और यही है उत्कर्ष की पराकाष्ठा। सारा विज्ञान, ज्ञान और बल आज अधिकार प्राप्ति, संरक्षण, और दूसरों को कुचलने में तत्पर है, और यह भी फैलते हुए गुंडेपन का आधार है।

हम पूछना चाहते हैं कि क्या शांत हरे-भरे देशों को शमशान बनाने वाले व्यक्तियों को मनुष्य कहा जा सकता है? अणु बम और उद्रजन बम जैसे विनाशकारी प्रयोगों के कर्णधार क्या किसी प्राचीन काल के राक्षस से कम हैं? क्या भूखे भेड़िए की तरह कभी मजहब के नाम पर, कभी अधिकार के नाम पर, कभी रोटी के नाम पर लाखों का रक्त बहाने वालों में मानवता का कोई अवशेष कहीं पर भी शेष है? और उत्तर में कहना होगा कि नहीं।

इस "नहीं" को "हां" में बदलने का प्रयास आज कौन करे? कौन बताए, पुकार पुकार कर मानव को कि उसका जन्म धरती के विनाश, चीत्कार, रुदन, क्रंदन की लपटों से झुलसने के लिए नहीं, अपितु शान्त, सुखी और आनन्दित हो, स्वर्ग समान पुण्यमयी धरती पर निवास कर, परम पिता परमात्मा की गोदी में स्थान पा कर लक्ष्य सिद्धि के लिए हुआ था। कौन समझाए उसे कि आज जो उसने केवल लौकिक साधनों की प्राप्ति ही को जीवन लक्ष्य समझकर दौड़ लगानी आरम्भ की हुयी है, वही अन्धकार की ओर फेंकने वाली है। संसार की समस्त वस्तुएं 'साध्य' बनकर हमें पथ भ्रष्ट कर चुकी हैं। पथ भटककर आज तक न किसी को शान्ति मिली है और न मिल सकती है। पर कौन समझे और कौन समझाए?

जो भी हो, प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते हुए, फैलते हुए इस गुंडेपन को रोकना, शांति, न्याय और सत्य के प्रसारकों का प्रथम कर्त्तव्य है साथ ही उत्तरदायित्व भी! जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आज कीचड़ भर चुका है। इस कीचड़ को निकाले बिना न हम चल सकेंगे, न कुछ कर सकेंगे, बस फिसलते रहेंगे, गिरते, डगमगाते रहेंगे? अन्त क्या होगा, यह भी कौन जाने?

किन्तु नहीं, हमने निश्चय करना है, इस गुंडेपन को समाप्त करने का! प्राणों की समिधा के बल से वह ज्योति प्रज्वलित करनी है जिसमें यह पाप ताप संताप धू-धू कर जल उठें। अनाचार, हाहाकार, अनैतिक व्यापार, छलनामयी चालें सदा के लिए स्वाहा हो जाएं, और तब हो एक नए स्वर्णिम युग का निर्माण।

आर्य समाज ऐसे युग निर्माण के लिए प्रतिज्ञाबद्ध है। उसका लक्ष्य है दानवता, गुंडापन और राक्षसी लहरों का उन्मूलन! वह किसी भी मूल्य पर इनमें से किसी के साथ भी कोई समझौता नहीं कर सकता। प्रभु पर विश्वास रख, सत्य ज्ञान के सहारे वह बढ़ता जाएगा, मार्ग के तूफान, चट्टानें और पर्वत उसके मार्ग में रोड़ा नहीं बन सकते। 'वह सभी को ठोकरों से ठुकराता आगे और आगे बढ़ता जाएगा ही, उसे विजय मिलेगी ही....।

पर जो यह समझ रहे हों, हमसे सहमत हों, कि संसार में गुंडापन बढ़ रहा है उन्हें हमारा आमंत्रण है कि वे आएं और आर्यसमाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ते हुए महानाश के अंधड़ को रोकने की तैयारी करें। सर्वग्रासी प्रलय से कोई न बचेगा, यह निश्चित है, इस प्रलय को रोकने में सहयोग दीजिए। तभी कुछ संभव है और सम्भव है स्वर्णिम प्रभात! जिसकी बाट सभी उत्सुकता से देख रहे हैं। प्रतीक्षा का अन्त होने की कल्पना क्या आपको प्रेरणा न देगी? यह प्रश्न है जिसका उत्तर सभी को देना होगा।

—भारतेन्द्रनाथ

(जनज्ञान साप्ताहिक २२ फरवरी १९७६ से उद्धृत)

क्या आप सुखी हैं?

क्या आप जीवन में आनन्द अनुभव करते हैं? यदि नहीं तो विश्वास कीजिए आप धर्म की छाया से बहुत दूर हैं। हम आपको 'धर्म' से परिचित कराने के लिए प्रयत्नशील हैं।

क्या आप दुःखों से छूटना चाहते हैं? यदि उत्तर 'हाँ' में हो तो हमारे साथ चलिए। हम, आपके जीवन को सत्य धर्म और आनन्द से परिपूर्ण कर देंगे।

—भारतेन्द्र नाथ

‘लोकार्पण’

बन्धुवर/भगिनी

‘पुष्पांजलि’ के लोकार्पण के अवसर पर आप सादर आमन्त्रित हैं। यह एक ऐसे कवि की कविताओं का संग्रह है जो सुदूर अमेरिका के चिकित्सा क्षेत्र में भी एक विशिष्ट नाम है।

अग्रणी हृदय रोग चिकित्सक ***डॉ० विजय कुमार मेहता*** की कृति ***‘पुष्पांजलि’*** में संग्रहीत कविताएं प्रतिबिम्बित करती हैं अध्यात्म एवम् भौतिकता के अन्तर्द्वन्द्व को।

‘पुष्पांजलि’ का लोकार्पण करेंगे कोमल हृदय कवि और राजनेता

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

मुख्य अतिथि	:	पूर्व केन्द्रीय मन्त्री **श्री बसन्त साठे**
विशिष्ट अतिथि	:	प्रमुख कवि **श्री मधुर शास्त्री**
कार्यक्रम अध्यक्ष	:	**श्री दाऊ जी गुप्त**, पूर्व महापौर लखनऊ
तिथि	:	**सोमवार, 17 नवम्बर, 1997**
समय	:	**सायं 5 बजे**
स्थान	:	**स्पीकर हाल, विट्ठल भाई पटेल भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली**

उत्तरापेक्षी *विनीत*

विश्वम्भर दत्त शर्मा	**वेद प्रकाश सिंह**	**बनारसी सिंह**
(आजीवन सदस्य)	(महामंत्री)	(स्थानीय प्रतिनिधि)
विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क	विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क	विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क
दूरभाष : 3862873	दूरभाष : 5509668	दूरभाष : 6821038

द्रष्टव्य : प्रवेश निमन्त्रण पत्र से।

आपके पत्र

काश्मीर को स्वायत्तता प्रदान न की जाये

आदरणीया बहन,

काश्मीर के विषय में भारत सरकार का रवैया सन्तोषजनक नहीं, वरन् आपत्तिजनक है। जिस प्रकार उदारता से काम किया जा रहा है। वह भविष्य में हमारे लिए दुःखद ही होगी। इसी उदारता के कारण हमने विभाजन की पीड़ा भोगी। पता नहीं कब हममें आत्म चेतना जागृत होगी। आज तक हमने मन्दिर मुद्दा लेकर जितना आन्दोलन किया, उसकी जगह काश्मीर आदि को लेकर आन्दोलन किया होता तो स्थिति दूसरी होती। आज हर नागरिक में उतनी धार्मिकता नहीं जितनी राष्ट्रीयता है। अतः काश्मीर को मुद्दा बनाया जाये। इसके बाद में मन्दिर को जन-जागरण का साधन बनाया जा सकता है। आज मूर्ति स्थापना का जो व्यावसायिक कार्य बन गया है। वह अवश्य ही नकारने योग्य है।

श्याम सरस आर्य, मु०पो० रेड़ा, जिला रायगढ़ (म०प्र०)

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

महोदया,

मंगलमय प्रकाश पर्व हो, हंसते-हंसते दीप जलें।
दिल्ली दिल भारत के घर-घर, सुन्दर सुरभित फूल खिलें॥
दीपावली के पुन्य पर्व पर, 'आर्या' की वाणी बोली।
ऋद्धि-सिद्धि से भर दो, मेरे जन-जन की पावन झोली॥
कदम-कदम पर खुशहाली हो, फैले अनन्त उजियारा।
उमड़े करुणा-धार सुधा, और बरसे अमृत की धारा॥
काल निशा की कोख चीर, सुन्दर भविष्य जन्मे।
पूर्ण वेग से बढ़ता तव यश, पथ में नहीं थमे॥

शकुन्तला आर्या, महापौर, दिल्ली

(२)

दीपावली एवं नूतन वर्ष का यह उज्ज्वल प्रकाश आपके एवं आपके परिवार के जीवन पथ को सदैव आलोकित करता रहे यही हमारी शुभकामना है।

प्रधान-मन्त्री, आर्य समाज पोरबन्दर (गुजरात)

(३)

अखिल भारत हिन्दुत्वनिष्ठों को जागृत कराने आर्य समाज से जुड़े सभी हिन्दुत्वनिष्ठों को अखण्ड भारत संकल्प स्वर्ण महोत्सव वर्ष पर हार्दिक बधाई। वन्दे मातरम्!

प्रमोद पंडीत जोशी, टिळक चौक, कल्याण (महाराष्ट्र)

हिन्दू को उपेक्षित करने वाले हिन्दू ही

आदरणीय बहन राकेश रानी जी,

आपका पत्र राखी के पावन धागों के साथ मिला। आपने लिखा है कि धागा बांध कर 'उन सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा का संकल्प लें' जिन्हें परमपिता परमात्मा ने वेद के माध्यम से हमें अर्पित किया है। साथ ही आपने यह भी लिखा है कि 'हिन्दू स्वदेश में ही उपेक्षित होकर रह गया है।' आश्चर्य और दुःख की बात है कि हिन्दुओं को उपेक्षित करने वाले हिन्दू ही हैं। अंग्रेजों ने तो हिन्दूओं और मुसलमानों को लड़ा कर शासन किया परन्तु अब हिन्दू ही हिन्दुओं को आपस में लड़ा कर शासन कर रहे हैं। अंग्रेज तो विदेशी थे परन्तु अभी के शासक तो स्वदेशी और भाई-बन्धु हैं। हम सभी इस परिस्थिति में संकल्प लेकर भी क्या कर सकते हैं—निरीह और असमर्थ जो हैं। अब तो किसी महापुरुष के आगमन पर ही सुधार होगा और तभी हम सभी के साथ हिन्दुत्व भी बचेगा।

शिवशरण प्रसाद, भारती भवन, कदम कुआं, पटना-३

अनोखा अध्याय

महोदया, वर्तमान सन्दर्भ में निम्नलिखित पंक्तियां प्रस्तुत हैं—

आज विश्व इतिहास में
फिर वह अनोखा अध्याय लिखा जायेगा।
जिसने वह विशुद्ध हिंसक उपाय का अवलम्बन कर
पराधीनता की शृंखलाओं को काट कर सफलता प्राप्त की।
स्वाधीनता दिवस, गणराज्य दिवस पर प्रायः जो गुंज उठती है
हमें दे दी, उसने वह आजादी बिना ढाल, बिना तलवार।
जिस महामानव में स्वातन्त्र्य अध्याय का
महान सूत्रधार था बनाया।
नतमस्तक हूं उन महान हस्तियों, राष्ट्रभक्तों का,
अपने रक्त को जला कर अस्थियों की खाद से
स्वातन्त्र्य की पृष्टभूमि को उर्वरा बनाया था।
उन स्वातन्त्र्य समर के सेनानियों, महानायकों
वीर सैनिकों को मेरा सत-सत अभिवादन है।
जो बार-बार स्मरण दिलाता उन पूर्वजों की दासता
ब्रिटिश अन्याय, अत्याचार एवं दासता के विरुद्ध हुए
महा-संग्राम के उस अध्याय का
जहाँ अपने यौवन को समिधा बनाकर
सुख-वैभव के सपनों को अंगार बना कर
राष्ट्र भक्तों ने अपने जीवन-सुमन समर्पित किए रण देवता को।
आज विश्व इतिहास में फिर वह अनोखा अध्याय
लिखा जायेगा।
जिन के रक्तदान से धरती यह, युग-युगान्तर
के लिए प्रेरणा की स्थली बन गयी।

विनय सितिजोरी, रिण्येर पोस्ट, मोरिशस

सूर्य और चन्द्र की राह पर चलो

❑ आचार्य प्रियव्रत विद्यावाचस्पति

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव
पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि ॥

अर्थ— (सूर्याचन्द्रमसावि) सूर्य और चन्द्रमा की तरह (स्वस्ति) कल्याण के (पन्थाम्) मार्ग पर (अनुचरेम) चलते रहें (पुनः) और (ददता) दान करने वाले (अघ्नता) अहिंसा स्वभाव वाले (जानता) ज्ञानी पुरुषों की (संगमेमहि) संगति करते रहें।

हम सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याण के मार्ग पर चलते रहें। सूर्य चन्द्रमा कल्याण के मार्ग पर चलते हैं, हमें भी उन्हीं की तरह कल्याण की राह पर चलना चाहिए। सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग कल्याण का मार्ग किस कारण बन जाता है? इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि सूर्य चन्द्र की गति नियमित है। इतनी नियमित कि वर्षों पहले सूर्य और चन्द्र ग्रहणों का पता लग जाता है। सूर्यचन्द्रादि पिण्ड यदि नियमित गति से न चलें तो परस्पर टकराकर ब्रह्माण्ड नष्ट-भ्रष्ट हो जाए। इनकी नियमित गति के ही कारण वर्ष में छः ऋतुएं बनती हैं— सर्दी, गर्मी और वर्षायें आती हैं। और दूसरे यह किसूर्य-चन्द्र अपनी नियमित गति से समय-समय पर जो ऋतुएं बनाते हैं उनका फल लोक कल्याण होता है। हर एक ऋतु से खास-खास प्रकार के लाभ संसार को मिलते हैं। सूर्य-चन्द्र का प्रकाश और गर्मी, उनका आकर्षण और विकर्षण सब संसार के कल्याण के लिए ही होते हैं।

हमें भी सूर्य-चन्द्रमा की तरह "स्वस्ति" के— कल्याण के मार्ग पर चलना चाहिए। हमारा जीवन नियमित हो—हममें समय पर सब कार्य करने की क्षमता हो और हमारी सब शक्तियां संसार का कल्याण करने वाली हों। पर हमारे अन्दर वह शक्ति कैसे आए जिसका हमने सूर्य-चन्द्र की तरह संसार के कल्याण में व्यय करना है। इसका उत्तर मन्त्र के उत्तरार्द्ध में दिया गया है। हमें अपने अन्दर योग्यता हासिल करने के लिए ऐसे पुरुषों का संग करना चाहिये जो दानी हों— अपनी शक्तियों को संसार के उपकार में लगाते हों, जो अहिंसाशील हों, संसार के प्राणियों के दुःख-दर्द मिटाने की भावना से जो धर्म करते हों, जो ज्ञानी हों— तरह-तरह की विद्याओं का तत्त्व-उपदेश हमें कर सकते हों। ऐसे लोगों की संगति में पड़ने से हमें शक्ति प्राप्त होती है जिसका हम सूर्य चन्द्र की तरह लोक-कल्याण में व्यय कर सकेंगे।

वेद ज्ञान बिन जीवन सूना

सत्य सनातन प्रभु भजन ही जग असार में सार॥
वेदज्ञान बिन जीवन सूना, सूना हरि बिन प्यार॥
यज्ञ हवन, सोडष संस्कार वेद मंत्र बिन सूना जान।
विश्व बन्धुत्व, एकत्व, सत्य बिन सूना सदा उत्थान।
राष्ट्र प्रेम, रक्षा बिना सूना आन-मान और भान।
वेद ज्ञान, संस्कृत, हिन्दी बिना सूना हिन्द महान।
मानवता बिन सकल विश्व में सूना प्रेम व्यवहार॥
वेद ज्ञान बिन जीवन सूना, सूना हरि बिन प्यार॥ १॥
सुना सद्गुण आत्मसात बिन नर तन श्रेष्ठ महान।
तप-त्याग, अपनत्व, अनुराग बिन सूना है बलिदान।
परहित, प्रीति, रीति बिन सूना जीवन में मुस्कान।
सेवा, सत्संग, सहयोग बिना सूना रहता ज्ञान।
प्रेम श्रद्धा, विश्वास आश बिन सूना सत्य प्रचार॥
वेद ज्ञान बिन जीवन सूना, सूना हरि बिन प्यार॥ २॥
परोपकार बिन पुण्य हैं सूना समता बिन संसार।
सत्य धर्म सद्भाव, चाव बिन सूना है उपकार।
सतत सतर्क सदा परहेज बिन है सूना उपचार।
अचूक वेदज्ञान रश्मि बिन सूना है उजियार।
निज पर साधन बिन सूना है जगत बीच अधिकार॥
वेद ज्ञान बिन, जीवन सूना सूना हरि बिन प्यार॥ ३॥
धन दान बिन तन प्राण बिन वाणी सत्य बिन बात।
संयम नेम बिन सद्गुण प्रेम बिन दृढ़ त्याग बिन तात।
मीन जीवन जस जल बिन सूना है तरूवर बिन पात।
भक्ति भाव बिन, स्नेह लगाव बिन सूना श्रेष्ट यह गात।
कर्मयोनि ही 'बाबूराम कवि' लख चौरासी सार॥
वेदज्ञान बिन जीवन सूना, सूना हरि बिन प्यार॥ ४॥

बाबूराम सिंह 'कवि', सुगर मिल मारोली
(कल्याणनगर) गुजरात

वैदिक चिन्तन

भारतीय काल गणनानुसार वेदों की उत्पत्ति

❑ दयानन्द सरस्वती

एकअरब, छियानवे करोड़, आठ लाख, बावन हजार, नौ सौ, छियत्तर (१९६०८५२९७६) वर्ष वेदों की और जगत् की उत्पत्ति को हो गए हैं और यह संवत् ७७वां वर्त्त रहा है।

यह जो वर्तमान सृष्टि है, इसमें सातवें (७) वैवस्वत मनु का वर्तमान है, इससे पूर्व छः मन्वन्तर हो चुके हैं। स्वायम्भव, स्वारोचिष, औत्तमि, तामस, रैवत, चाक्षुष, ये छः तो बीत गए हैं और ७वां वैवस्वत वर्त्त रहा है, और सावर्णि आदि ७ मन्वतर आगे भोगेंगे। ये सब मिलकर १४ मन्वन्तर होते हैं और चतुर्युगियों का नाम मन्वन्तर धरा गया है, सो उसकी गणना इस प्रकार से है— (१७२८०००) सत्रह लाख अट्ठाईस हजार वर्षों का नाम सतयुग रखा है, (१२९६०००) बारह लाख छियानवे हजार वर्षों का नाम त्रेता, (८६४०००) आठ लाख, चौंसठ हजार वर्षों का नाम द्वापर और ४३२००० चार लाख बत्तीस हजार वर्षों का नाम कलियुग रखा है। आर्यो ने एक क्षण और निमेष से लेकर एक वर्ष पर्यन्त भी काल की सूक्ष्म और स्थूल संज्ञा बांधी है। उन चारों युगों के (४३२००००) तैतालीस लाख बीस हजार वर्ष होते हैं, जिनका चतुर्युगी नाम है ७१ चतुर्युगियों के अर्थात् (३०६७२००००) तीस करोड़ सड़सठ लाख बीस हजार वर्षों की एक मन्वन्तर संज्ञा की है, और ऐसे-ऐसे छः मन्वन्तर मिल कर अर्थात् (१८४०३२००००) एक अरब चौरासी करोड़, तीन लाख बीस हजार वर्ष हुए और ७वें मन्वन्तर के भोग में यह २८चतुर्युगी है। इस चतुर्युगी में कलियुग के (४९७६) चार हजार नौ सौ छियत्तर वर्षो का तो भोग हो चुका है और बाकी (४२७०२४) चार लाख सत्ताईस हजार चौबीस वर्षो का भोग होने वाला है। जानना चाहिए कि (१२०५३२९७६) बारह करोड़ पांच लाख बत्तीस हजार नौ सौ छियत्तर वर्ष तो वैवस्वतमनु के भोग हो चुके हैं और (१८६१८७०२४) अठारह करोड़ इकसठ लाख सत्तासी हजार चौबीस वर्ष भोगने के बाकी रहे हैं। इनमें से यह वर्तमान वर्ष ७७ सतहत्तरवां है, जिसको आर्य लोग विक्रम का (१९३३) उन्नीस सौ तेंतीसवां संवत् कहते हैं।

जो पूर्व चतुर्युगी लिख आए हैं, उन १००० चतुर्युगियों की ब्राह्मदिन संज्ञा रखी है और उतनी ही चतुर्युगियों की रात्रि संज्ञा जाननी चाहिए। सो सृष्टि की उत्पत्ति करके हजार चतुर्युगी पर्यन्त ईश्वर इसको बना रखता है, इसी का नाम 'ब्राह्मदिन' रखा है और हजार चतुर्युगी पर्यन्त सृष्टि को मिटा के प्रलय अर्थात् कारण में लीन रखता है, उसका नाम 'ब्राह्मरात्रि' रखा है। अर्थात् सृष्टि के वर्तमान होने का नाम दिन और प्रलय होने का नाम रात्रि है। यह जो वर्तमान ब्राह्मदिन इसके एक अरब, छियानवे करोड़, आठ लाख, बावन हजार, नौ सौ, छियत्तर वर्ष इस सृष्टि की तथा वेदों की उत्पत्ति में भी व्यतीत हुए हैं, और दो अरब, तैंतीस करोड़, बत्तीस लाख, सत्ताईस हजार, चौबीस वर्ष इस सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे हैं। इनमें से अन्त का यह चौबीसवां वर्ष भोग रहा है। आगे आने वाले भोग के वर्षो में से एक-एक घटाते जाना और गत वर्षो में क्रम से एक-एक वर्ष मिलाते जाना चाहिए, जैसे आज पर्यन्त घटाते-बढ़ाते आए हैं।

ब्राह्मदिन और ब्राह्मरात्रि अर्थात् ब्रह्म जो परमेश्वर है उसने संसार के वर्तमान और प्रलय की संज्ञा की है इसीलिए इसका नाम ब्राह्मदिन है। मनुस्मृति में दैववर्षो की गणना की है, अर्थात् चारों युगों के बारह हजार वर्षो की 'दैवयुग' संज्ञा की है। इसी प्रकार असंख्यात मन्वन्तरों में जिनकी कि संख्या नहीं हो सकती अनेक बार सृष्टि हो चुकी है और अनेक बार होगी। सो उस सृष्टि को सदा से सर्वशकितमान जगदीश्वर सहज स्वभाव से रचता, पालन और प्रलय करता है और सदा ऐसे ही करेगा। क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति, वर्तमान, प्रलय और वेदों की उत्पत्ति के वर्षो को मनुष्य लोग सुख से गिन लें, इसीलिए यह ब्राह्मदिन आदि संज्ञा बांधी है। और सृष्टि का स्वभाव नया पुराना प्रति मन्वन्तर में बदलता जाता है, इसीलिए मन्वन्तर संज्ञा बांधी है। वर्तमान सृष्टि की कल्पसंज्ञा और प्रलय की विकल्पसंज्ञा की है।

और इन वर्षो की गणना इस प्रकार से करनी चाहिए कि (एकं दश शतं चैव....) एक, दस, शत, हजार, दस हजार, लाख, नयुत, करोड़, अर्बुद, वृन्द, खरब, निखर्ब, शंख, पद्म, सागर, अन्त्य, मध्य और पराद्धर्य और दश-दश गुणा बढ़ाकर इसी गणित से सूर्य सिद्धान्त आदि ज्योतिष ग्रंथों में गिनती की है।

(सहसत्रस्यप्र) सब संसार की सहस्र संज्ञा हैं तथा पूर्वोक्त

ब्राह्मदिन और रात्रि की भी सहस्र संज्ञा ली जाती है, क्योंकि यह मंत्र सामान्य अर्थ में वर्तमान है। सो हे परमेश्वर! आप इस हजार चतुर्युगी का दिन और रात्रि को प्रमाण अर्थात् निर्माण करने वाले हो। इसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र में यथावत् वर्षों की संख्या आर्य लोगों ने गिनी है, सो सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज पर्यन्त दिन-दिन गिनते और क्षण से लेकर कल्पान्त की गणित विद्या को प्रसिद्ध करते चले आते हैं, अर्थात् परम्परा से यही व्यवस्था सृष्टि और वेदों की उत्पत्ति के वर्षों की ठीक है, और सब मनुष्यों को इसी को ग्रहण करना योग्य है। क्योंकि आर्य लोग नित्यप्रति 'ॐ तत् सत्' परमेश्वर के इन तीन नामों का प्रथम उच्चारण करके आर्यों का आरम्भ और परमेश्वर का ही नित्य धन्यवाद करते चले आते हैं कि आनन्द में आज पर्यन्त परमेश्वर की सृष्टि और हम लोग बने हुए हैं, और बही खाते की नाई लिखते-लिखाते पढ़ते-पढ़ाते चले आए हैं कि पूर्वोक्त ब्राह्मदिन के दूसरे प्रहर के ऊपर मध्याह्न के निकट दिन आया है और जितने वर्ष वैवस्वत मनु के भोग होने को बाकी हैं, उतने ही मध्याह्न में बाकी रहे हैं, इसीलिए यह लेख —(श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे)।

यह वैवस्वतमनु का वर्तमान है, इसके भोग में यह अट्ठाईसवां कलियुग है। कलियुग के प्रथम चरण का भोग हो रहा है तथा वर्ष, ॠतु, अयन, मास, पक्ष, दिन, नक्षत्र, मूहुर्त्त, लग्न और पल आदि समय में हमने फलाना काम किया था और करते हैं, अर्थात् जैसे विक्रम के संवत् १९३३ फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठी, शनिवार के दिन चतुर्थ प्रहर के आरम्भ में यह बात हमने लिखी है, इसी प्रकार से सब व्यवहार आर्य लोग बालक से वृद्ध पर्यन्त करते और जानते चले आए हैं। जैसे बहीखाते में मिती डालते हैं, वैसे ही महीना और वर्ष बढ़ाते-घटाते चले आते हैं। और यही इतिहास आज पर्यन्त सब आर्यावर्त्त देश में एकसा वर्तमान हो रहा है। और सब पुस्तकों में भी इस विषय में एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है, किसी प्रकार का इस विषय में विरोध नहीं है। इसीलिए इसको अन्यथा करने में किसी का सामर्थ्य नहीं हो सकता। क्योंकि जो सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर बराबर मिती वार लिखते न आते तो इस गिनती का हिसाब ठीक-ठीक आर्य जनों को भी जानना कठिन होता, अन्य मनुष्यों का तो क्या ही कहना है। और इससे यह भी सिद्ध होता है कि सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज पर्यन्त आर्य लोग ही बड़े-बड़े विद्वान् और सभ्य होते चले आए हैं।

जब जैन और मुसलमान आदि लोग इस देश के इतिहास और विद्या पुस्तकों का नाश करने लगे तब आर्य लोगों ने सृष्टि के गणित का इतिहास कण्ठस्थ कर लिया और जो ग्रंथ ज्योतिषशास्त्र के बच गए हैं उनमें और उनके अनुसार जो वार्षिक पञ्चाङ्गपत्र बनते जाते हैं इनमें भी मिती से मिती बराबर लिखी चली आती है, इसको अन्यथा कोई नहीं कर सकता। यह वृतान्त इतिहास का इसलिए है कि पूर्वापर काल का प्रमाण यथावत सबको विदित रहे और सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय तथा वेदों की उत्पत्ति के वर्षों की गिनती में किसी प्रकार का भ्रम किसी को न हो, सो यह बड़े उत्तम काम हैं। इसको सब लोग यथावत् जान लेवें। परन्तु इस उत्तम व्यवहार को लोगों ने टका कमाने के लिए विगाड़ रखा है, यह शोक की बात है। और टके के लोभ ने भी जो इसके पुस्तक व्यवहार को बना रखा, नष्ट न होने दिया, यह बड़े हर्ष की बात है।

जो अध्यापक विलसन साहेब और अध्यापक मोक्षमूलर साहेब आदि यूरोपखण्डवासी विद्वानों ने बात कहीं है कि — वेद मनुष्य के रचें हैं किन्तु श्रुति नहीं है, उनकी यह बात ठीक नहीं है। और दूसरी कि— कोई कहता है २४०० वर्ष वेदों की उत्पत्ति को हुए, कोई २९०० वर्ष, कोई ३००० वर्ष और कोई कहता है ३१०० वर्ष वेदों को उत्पन्न हुए बीते हैं, उनकी यह भी बात झूठ है। क्योंकि उन लोगों ने हम आर्य लोगों की नित्यप्रति की दिनचर्या का लेख और संकल्प पठनविद्या को भी यथावंत् न सुना और न विचारा है, नहीं तो इतने ही विचार से यह भ्रम उनको नहीं होता। इससे यह अवश्य जानना चाहिए कि वेदों की उत्पत्ति परमेश्वर से ही हुई है और जितने वर्ष अभी ऊपर गिन आए हैं उतने ही वर्ष वेदों और जगत् की उत्पत्ति में भी हो चुके हैं। इससे सिद्ध हुआ कि जिन-जिन ने अपनी-अपनी देश भाषाओं में अन्यथा व्याख्यान वेदों के विषय में किया है, उन-उन का भी व्याख्यान मिथ्या है। क्योंकि जैसा प्रथम लिख आए हैं जब पर्यन्त हजार चतुर्युगी व्यतीत न हो चुकेंगी तब पर्यन्त ईश्वरोक्त वेद की पुस्तक, यह जगत् और हम सब मनुष्य लोग भी ईश्वर के अनुग्रह से सदा वर्तमान रहेंगें।

यह लेख महर्षि दयानन्द प्रणीत 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' ग्रंथ का एक अंश है। जिसकी रचना विक्रमी सम्वत् १९३३ (सन् १८७६ ई०) में हुई।

वेद का समाजवाद

❑ आचार्य डॉ॰ सत्यव्रत राजेश

आजकल समाजवाद का बहुत शोर है। राजनीतिक जगत् में दो शब्दों की भरमार है— सम्प्रदायवादी और समाजवादी या धर्मनिरपेक्ष। हिन्दुओं का नाम लेने वाले सम्प्रदायवादी हैं तथा हिन्दुओं से चिढ़ने वाले समाजवादी या धर्मनिरपेक्ष। भाजपा सम्प्रदायवादी है तथा मुस्लिम लीग असम्प्रदायवादी या समाजवादी। राजनीतिक दल तो समाजवाद का ढिंढोरा पीटते नहीं थकते। एक तो पार्टी ही समाजवादी है। बसपा ने भी अपने साथ समाज शब्द को बांधा हुआ है। जब हम बच्चे थे और गांव में रहते थे तो वहां आर्यसमाज के साथ तो समाज शब्द सुनते थे शेष लोग समाज शब्द से अपरिचित थे किन्तु थे सच्चे समाजवादी। हम अपने घर में देखते थे कि हमने अपनी भूमि से कुछ भाग निवास के लिए मुसलमान तेलियों को तथा कुछ हरिजनों को, जिन्हें उन दिनों चमार कहते थे, दिया हुआ था। वे सब भूमिहीन थे किन्तु सबने भैंसे रखी हुई थीं। उनके घर से पुरुष या स्त्रियां हमारे खेतों को अपना समझ कर घास काटते थे तथा अपना समझकर उनकी रखवाली करते थे। जब तक वे वहां रहते तब तक किसी की हिम्मत नहीं थी कि हमारे खेतों में हानि पहुंचा सके। हमारी ओर से भी उनके प्रति पूर्ण अपनत्व था। किसी कारण कोई अन्य उन्हें कुछ कह देता तो वे हमारे पास शिकायत लेकर आते थे तथा हमारे घर वाले उनका पक्ष लेकर उनसे लड़ने जाते थे कि हमारे व्यक्ति को आपने ऐसा क्यों कहा? न ब्राह्मण-चमार का झगड़ा था न हिन्दू-मुसलमान का। जो लोग यह कह कर लोगों को बहकाते हैं कि वे उन्हें अपने बराबर नहीं बैठने देते थे। उनसे पूछना चाहिए कि क्या आपने आज इस प्रथा को समाप्त कर दिया है? क्या हरिजन अधिकारी की कुर्सी पर ब्राह्मण चपरासी बैठ सकता है? अपने कार्यालय में अधिकारियों का शौचालय पृथक रखने वाले कभी अपने घर में भी झांक लिया करें।

हमें याद है कि हरिजनों के विवाह में बहू को अवश्य कुछ देते थे तथा ईद से पहली सायं बच्चों के लिए दूध रखकर शेष सारा दूध तेलियों के यहां भेज देते थे। ऐसा पीढ़ियों से होता आया था। कोई नहीं सोचता था कि यह मुसलमानों का त्यौहार है, हमारा नहीं। वे भी देवबन्द की ईदगाह से सायंकाल जब लौट कर आते थे तो सूखी मेवा हमारे घर देकर तब जाते थे। मानो हम उनके पर्व में सहयोगी हैं और वे अपने पर्व की प्रसन्नता को बांटकर अपनत्व दिखाते हों। यह हमारे गांव के सभी लोग करते थे। आज वे दिन स्मृति शेष बन गए हैं। राजनीति के चक्कर ने भाई-भाई में फूट डाल दी फिर अन्यों की कौन कहे। लोग कहते हैं कि मान्य वी॰ पी॰ सिंह यदि कुछ दिन और प्रधानमंत्री पद पर बने रहते तो पति-पत्नी भी अलग-अलग रहते। हिन्दू-मुसलमान, अगड़े-पिछड़े, अल्पसंख्यक बहुसंख्यक, बहुत नारे हैं, इनके पास आपस में बांटने के। ईश्वर की कृपा है कि स्त्री-पुरुष का नारा इनके ध्यान में नहीं आया अन्यथा पुरुषों को चूल्हा फूंकना पड़ता तथा स्त्रियों को हल चलाना। वैसे भी आजकल वर्ष में अनेक चुनाव होते हैं जिन्होंने सबको महत्त्वाकांक्षी बना दिया है। दादा पोतों में भी संकोच नहीं करते। मैं सोचता हूं कि आज के लोग समाजवाद का नारा लगाते हैं किन्तु समाजवादी नहीं जब कि पहले लोग समाजवाद का नाम न लेते थे किन्तु थे पक्के समाजवादी।

मैं भी कहां से कहां चला गया। विषय था वैदिक समाजवाद और ले बैठा ग्राम्य समाजवाद। वस्तुतः वेद तो मानववाद का उद्घोषक है। वह तथाकथित जातिवाद का समर्थक नहीं। जाति तो सब मानवों की एक है और वह है मनुष्य। वेद का सन्देश है कि तुम सब मानव बनो, मानवता के रक्षक बनो।

मनुर्भव ॥ ऋ॰ १०-५३-६

प्रवृत्ति की दृष्टि से वेद मानवों को दो प्रकार से मानता है। आर्य तथा दस्यु। आर्य, परोपकारी, श्रेष्ठ, सदाचारी तथा उच्च विचारों वाले वेदानुयायी को कहते हैं एवं दस्यु, स्वार्थी, दम्भी, छली, कपटी, परपीड़क को कहते हैं। वेद इन दोनों को जानने का आदेश देता है।

विजानी ह्यार्यान् ये च दस्यवः ॥ ऋ॰ १.५१.८

किन्तु वेद दस्यु से भी द्वेष की शिक्षा नहीं देता अपितु सबको आर्य बनाने का उपदेश देता है। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** ॥ ऋ॰ ९.६३.५

सबको आर्य बनाते चलो। आर्यवेदानुयायी है। उसके सामने व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व है। उन्हें खाने के लिए मुंह बाये खड़े अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा असहयोग को मिटाने के लिए शिक्षक, रक्षक, पोषक तथा सेवक की नितान्त

अपेक्षा है। इस कार्य करने वाले को क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र कहते हैं। पुरुष सूक्त में इन्हें अंगों से उपमा देते हुए मुख, बाहू, ऊरू तथा पग बतलाया है। जैसे शरीर के इन अंगों में से एक के न होने से शरीर का अस्तित्व समाप्त हो जाता है अथवा वह अपंग हो जाता है तथा चारों का अपने-अपने स्थान पर महत्त्व है इसी प्रकार समाज संचालन के लिए इन चारों का अपने-अपने स्थान पर महत्त्व है समाज व्यवस्था के लिए कहा है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरु तदस्य यः पद्भयां शूद्रो अजायत॥ *यजु० ३१.११*

इन चारों को अपने कार्यों का रुचि तथा सामर्थ्यानुसार वरण करने से चुनने के कारण वर्ण कहा गया है। इनके कार्य भिन्न हैं किन्तु इनमें आचार भेद नहीं। लोक परलोक की उन्नति के लिए सब सतत् प्रयत्नशील है। ये सब एक ही समाज रूपी शरीर के विभिन्न अवयव। एक-दूसरे से सुख-दुःख के साथी। जैसे कांटा पैर में लगता है किन्तु उस पीड़ा को सारा शरीर अनुभव करता है। आंखें आंसू बहाती है। तथा हाथ कांटा निकालने में जुट जाते हैं। यही स्थिति समाज-शरीर की है। एक की पीड़ा को सब अपनी पीड़ा मानते हैं। वेद में जब ज्ञान की दीप्ति तथा प्रिय बनने की कामना की है तो वहां यह प्रार्थना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों के लिए की गई है। यथा—

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि। रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥ *यजु० १८.४८*

प्रभोः हमारे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में ज्ञान का तेज भर दो तथा उसी तेज से मुझमें भी कान्ति भर दो।

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणुं। प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये॥ *अथर्व० १९.६२.१*

'हे प्रभोः मुझे देवों'— विद्वानों, ब्राह्मणों, क्षत्रियों में प्रिय बनाओ। सब देखते हुओं का प्रिय बनाओ तथा शूद्र एवं वैश्यों का भी प्यारा बनाओ। कितना प्रेम और अपनन्त का लहराता सरोवर प्रत्येक आर्य के हृदय में हो भी क्यों न, जब वेद का सन्देश है कि मैं तुम सबको सबका दुःख अपना समझने वाला, समान विचारों वाला तथा द्वेष रहित बनाता हूं। एक दूसरे से ऐसे प्रेम करो जैसे गाय सद्योजात बच्चे से करती है

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमिवः। अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाध्न्या॥ *अ० ३.३०.१*

वेद तो आदेश देता है कि मानव, मानव की सब प्रकार से रक्षा करे। दुर्गुण से भी, दुर्व्यसन से भी, पाप तथा अपराध से भी तथा बाह्य शत्रु से भी।

पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः॥

भेदभाव की दीवारों का वेद समर्थन नहीं करता। वह तो विश्व बन्धुत्व का प्रतिपादक है। बन्धुत्व की चरम परिणति मैत्री में है। मैत्री में न बड़े छोटे का भाव रहता है और गरीब-अमीर का। वेद इसी मैत्री का सन्देशवाहक है। एक मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि —हे पापनाशक प्रभो! आप मुझमें दृढ़ मैत्री भर दो कि विश्व के सब प्राणी मुझे मित्रदृष्टि से देखें, मैं भी मित्र दृष्टि से सब प्राणियों को देखूं। हम सब परस्पर एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते रहें।

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥ *यजु० ३६.१८*

वेद समता का सन्देश देता हैं उनके अनुसार—देने में दोनों हाथ एक जैसे लगते हैं पर वे कार्य में एक समान व्याप्त नहीं होते। एक मां से उत्पन्न दो गाएं एक समान दूध नहीं देती। जुड़वां दो भाइयों में समान सामर्थ्य नहीं होता। एक ही घर परिवार या वर्ण के दो लोग बराबर नहीं होते। फिर दो भिन्न वर्णों के लोगों में यदि असमानता पाई जाए तो उसमें आश्चर्य की क्या बात है। कैसी उदार दृष्टि है वेद की। असमानता में भी समानता।

समौचिद्धस्तौ न समं विविष्टः सं मातरा चिन्न समंदुहाते। यमयोश्चिन्न समावीर्याणि ज्ञाती चित् सन्तौ न समं पृणीतः॥ *ऋ० १०.११७.९*

वेद के अनुसार तो— "न कोई बड़ा है और न कोई छोटा, सब परस्पर भाई है। सौभाग्य के लिए तथा सुख समृद्धि के लिए सब मिल कर बढ़ें।" न जाने यह ऊंच नीच की भावना मनुष्यों में कहां से आ गई। वेद के शब्दों में तो—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एवेसं भ्रातरो वावृधुः सौभागाय॥ *ऋ० ५.६०.५*

वर्ण का आधार भी वेद जन्म को नहीं मानता अपितु कार्य को मानता है। एक ही घर में विभिन्न कार्य करने वाले वर्ण से भिन्न होते हुए भी प्रेम पूर्वक रह सकते हैं। वेद के अनुसार माता जिस प्रकार के कार्य करती है उसका वही वर्ण है फिर भी वह पूज्य है माता है ऐसे पिता पुत्र भी भिन्न कार्य

(शेष पृष्ठ १५ पर)

४ नवम्बर जन्म दिवस पर विशेष

अमर शहीद वासुदेव बलवंत फड़के

□ नरेन्द्र अवस्थी

वासुदेव बलवंत फड़के ने देश को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराने के लिए आजीवन संघर्ष एवं प्रयत्न किया। निःसन्देह वासुदेव बलवंत फड़के का त्याग देश की समस्त स्वदेशानुरागी जनता को राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर करने की सतत प्रेरणा देता रहेगा।

इन्होंने सन् १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के बाद सर्वप्रथम भारत में ब्रिटिश शासन सत्ता को शस्त्रबल से चुनौती दी थी। वह प्रथम भारतीय क्रान्तिकारी थे जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने उनके राष्ट्रवादी कार्यों के लिए आजीवन कारावास की सजा दी थी। इस स्वदेशाभिमानी राष्ट्रसेवी नेता की मृत्यु भी उस समय हुई जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अभी जन्म भी नहीं हुआ था।

इनका जन्म ४ नवम्बर, १८४५ को पुणे के निकट कोलावा जिला (अब रायगढ़) स्थित सिरटोड ग्राम में हुआ था। पिता बलवंत तथा माता सरस्वती बाई ने अपनी सामान्य स्थिति के बावजूद पुत्र के जन्म पर अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट की। श्री फड़के को पढ़ने लिखने में रुचि नहीं थी। शारीरिक व्यायाम, आखेट तथा दौड़धूप सम्बन्धी कार्यों में ही इनका अधिक मन रमता था। कल्याण के एकप्राइमरी स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वासुदेव को डॉ० विल्सन इंगलिश स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भर्ती कराया गया। इसके पश्चात उन्होंने पुणे और बम्बई के एक कालेज में शिक्षा पायी।

अभी वह मैट्रिक की परीक्षा पास ही कर पाए थे कि इनका विवाह साईबाई नाम की एक कन्या से हुआ। विवाह के बाद वासुदेव ने पुणे स्थित जी. आई. पी. रेलवे के लेखा परीक्षा कार्यालय में नौकरी प्रारम्भ कर ली। लेकिन प्रधान लिपिक का व्यवहार इनके प्रति ठीक न होने से इन्होंने तत्काल नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। इसके बाद पुणे के ही ग्रांट मैडिकल कालेज में तीस रुपए प्रति माह पर नौकरी शुरू की और यहां पर दो वर्ष से भी अधिक समय तक काम किया। वासुदेव फड़के ने पुणे के सैनिक वित्त कार्यालय में काम प्रारम्भ किया और वे इस पद पर देशहित के लिए कार्य प्रारम्भ करने के समय तक बने रहे। इसी समय उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया, लेकिन शीघ्र ही इन्होंने गोपिकाबाई नामकएक अन्य स्त्री से विवाह कर लिया। वासुदेव फड़के इस पत्नी के गुणों से अत्यधिक प्रभावित थे क्योंकि वे प्रगतिशील विचारों की महिला थीं।

वासुदेव फड़के जिस समय सरकारी नौकरी में थे, तभी से देशभक्ति संबंधी कार्यों में अधिक दिलचस्पी लेने लगे थे। उन्होंने पूर्ण रूप से विदेशी वस्त्र का त्याग कर स्वदेशी वस्त्रों को अपना लिया था। विदेशी वस्तुओं का उपयोग करना वे एक अपराध समझते थे। उन्होंने अपने सहयोगियों से भी प्रार्थना की कि वे स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करें। उन्होंने स्पष्ट रूप से उंद्घोषणा की कि आपकी बुराइयां बगैर स्वराज्य के समाप्त नहीं हो सकती।

क्रान्तिकारी के रूप में जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से वासुदेव फड़के ने शारीरिक व्यायाम, कुश्ती, तलवार चलाना, घुड़सवारी करना, बंदूक एवं पिस्तौल आदि चलाने का अभ्यास प्रारम्भ किया। पुणे नगर की जनता जब रात में सो जाती थी, तब वे तथा उनके गुप्त संगठन के सदस्य नगर की सड़कों पर तेजी के साथ घोड़ों को दौड़ाते थे। उन्होंने जन-जन को ललकारा और कहा— सहनशील बने रहना अब सम्भव है। अब उपयुक्त समय आ चुका है। अपने शस्त्रास्त्र उठाओ और युद्ध स्थल के लिए रवाना हो जाओ।

इस प्रकार फरवरी १८७९ अर्थात् ३४ वर्ष की उम्र में वासुदेव फड़के ने अपने साथियों के साथ विद्रोह का नारा बुलंद कर दिया और अधिक शस्त्रास्त्र प्राप्त करने के लिए पुलिस थानों तथा अन्य धनिक लोगों के घरों पर आक्रमण करने का निर्णय किया। उन्होंने अपनी पत्नी को माता-पिता केघर पहुंचाने की व्यवस्था कर दी और कहा— "हमारा देश शीघ्र ही स्वतंत्र हो जाएगा और उसके पश्चात हम पुनः एक दूसरे से मिलेंगे।"

२१ फरवरी १८७९ का दिन। उनका दल स्वतंतत्रा के अभियान पर निकल पड़ा। इस दल नें सबसे पहले धमारी

नामक गांव पर आक्रमण किया और इस गांव के धनिकों के घरों को लूट लिया। इसके बाद एक-एक करके अन्य गांवों के धनिकों को लूटना तथा रुपया एकत्र करना प्रारम्भ किया। पुलिस थानों पर भी हमला करके यह दल शस्त्रास्त्र एकत्र कर लेता था। उनके इस विद्रोह की भनक ब्रिटिश सरकार को लगी। उसने इस दल को समाप्त करने के लिए पूरी ताकत के साथ कार्रवाई प्रारम्भ कर दी। इस दल में एक सौ से अधिक देशभक्त थे। यह अपनी जान हथेली पर रख कर पूरी मुस्तैदी से काम करते थे। इन्हें पकड़ने के लिए सेना को आदेश दिया गया। मेजर डेनियल को यह काम सौंपा गया।

दक्षिण भारत की जनता वासुदेव बलवंत फड़के को शिवाजी के अवतार के रूप में संबोधित करती थी। वासुदेव बलवंत को पकड़ने के लिए एक हजार रुपए के पुरस्कार की घोषणा कर दी गयी। इसी बीच पुणे के होल्कर बाड़ा और बुधवार बाड़ा नामक दो बड़ी इमारतों में अग्निकांड की घटनाएं हुई जिनमें ये दोनों इमारतें जल कर नष्ट हो गयीं। ब्रिटिश सरकारी अधिकारियों को ऐसा विश्वास हो गया कि इस कार्य के पीछे वासुदेव फड़के केदल का हाथ है। इसी बीच एक स्थान पर ब्रिटिश सेना से हुए युद्ध में वासुदेव का एक विश्वस्त सरदार दौलतराय मार डाला गया। इस पराजय से उनके दल को अत्यधिक धक्का लगा और उनके दल के लोग छिन्न-भिन्न हो गए।

फड़के भाग कर कुछ दिनों इधर उधर घूमते रहे, लेकिन अंत में निजाम राज्य के क्षेत्र में गंगापुर स्थान पर पहुंचे। यहां उन्होंने पुनः अपने आंदोलनकारी कार्यों को प्रारम्भ किया। उन्होंने एक अच्छी खासी घुड़सवार तथा पैदल सेना भी तैयार कर ली और पुनः विद्रोह का झंडा फहराने की योजना बनायी जाने लगी। इसी बीच ब्रिटिश सरकार को उनके बारे में पता चल गया और निजाम सरकार की अनुमति प्राप्त कर उसके क्षेत्र में इन लोगों के दल की धरपकड़ शुरू कर दी गई। मेजर डेनियल ने वासुदेव फड़के का लगातार चार दिन तक पीछा किया और अंत में एक मन्दिर में २० जुलाई, १८७९ को रात के समय सोते हुए वासुदेव फड़के को गिरफ्तार किया।

इन पर मुकदमा चलाया गया और इन्हें आजीवन काले पानी की सजा दे दी गयी। पहले तो इन्हें अण्डमान भेजने का निर्णय लिया गया, पर बाद में उन्हें अदन भेज दिया गया। अदन के जेल में इन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी गयीं। इस कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। फलतः १७ फरवरी, सन् १८८३ को संध्या सवा चार बजे करीब इन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सांस ली।

इस समय वहां पर उनके बंधु-बांधवों एवं सगे सम्बन्धियों में से कोई भी ऐसा मौजूद न था, जो इस शहीद के शोक में दो आंसू भी बहा सके। उनका कोई भी सगा सम्बन्धीउनकी अन्त्येष्टि में शामिल न हो सका और अदन जेल के अधिकारियों ने उनकी चिता में आग लगाकर उनके पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार कर दिया।

भारत मां के इस अनन्य सपूत को शत-शत प्रणाम।

१, आर्य समाज मार्केट, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-६५

(पृष्ठ १३ का शेष)

के करने के कारण वर्ण से पृथक् होने पर भी पिता पुत्र हैं। एक मन्त्र में कहा है— मैं शिल्पी हूं, पिताजी वैद्य हैं तथा माता पत्थर का कार्य करती है। विभिन्न ज्ञान-कर्म वाले, धन के इच्छुक हम ऐसे मिल कर रहते हैं जैसे गौशाला में विभिन्न वर्ण की गाएं।

कारुरहं ततो भिषगुपलप्लक्षिणीनना। नानाधियो वसूयवोऽनुगा इव तस्थिम०॥ ऋ० ९.११२.३

छूतछात, ऊंच नीच का वेद प्रतिपादक नहीं वह कहता है— तुम्हारा जल पीने का स्थान एक हो, भोजन-स्थान एक हो, कर्त्तव्य के जुए में भी तुम्हें एक साथ ही जोतता हूं। कैसा एकता तथा समानता का उपदेश है। यथा हि—

समानीप्रपासह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि॥ अथर्व० ३.३०.६

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद के अनुसार चारों वर्णों के लोग कार्य भिन्न होने पर भी अपने को एक समझते हैं। वे एक समाज-शरीर के विभिन्न अंग हैं। सब में तेजस्विता व प्यार हो। सब सहृदय, समान विचार वाले, द्वेष रहित होकर प्रेम से रहें। सबका मैत्रीभाव हो, एक-दूसरे के सर्वथा रक्षक बनें, ऊंच-नीच की भावना रहित होकर भाइयों की भांति रहें। समाज तथा अपने सौभाग्य के लिए मिलकर आगे बढ़ें। एक दूसरे के मार्ग के कण्टक न बन कर एक-दूसरे को आगे बढ़ाएं। सबका खानपान साथ हो। तुम सब मनुष्य हो केवल मनुष्य। यह है वेद का मानववाद, जिसे समाजवाद कह सकते हैं। ❑

विचार-प्रवाह

राष्ट्रीय अस्मिता के केन्द्रों की उपेक्षा

❑ नरेन्द्र मोहन

यह चिन्ता की बात है कि रामजन्मभूमि पर भारत की अस्मिता के प्रतीक राम मन्दिर के निर्माण को पुनः प्रबलता के साथ चुनौती दी जा रही है। इस चुनौती का सामना यदि नहीं किया गया तो राष्ट्र के समक्ष अनेक गम्भीर समस्याएं पैदा तो होंगी ही, साथ ही साथ राष्ट्रबोध के प्रति समर्पण की जो प्रक्रिया है वह भी अवरुद्ध हो जायेगी। अयोध्या, मथुरा और वाराणसी भारत की अस्मिता के केन्द्र बिन्दु हैं। औसत भारतीय केलिए ये केवल तीर्थस्थल ही नहीं, भारतीय संस्कृति के मूल केन्द्र बिन्दु भी हैं। भारतीय संस्कृति का कोई एक नाम नहीं, कोई एक रूप नहीं, कोई एकस्वर नहीं, फिर भी वह अपने आप में अद्‌भुत और अनूठी है और उस सरीखी कोई दूसरी संस्कृति है ही नहीं। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है, क्योंकि इस संस्कृति में सभी के लिए सम्मांन है, स्थान है, प्रेम है, सद्‌भाव है। भारतीय संस्कृति में तो प्राणिमात्र के लिए भी सद्‌भाव है। घृणा तथा विद्वेष से तो उसका कोई संबंध है ही नहीं, लेकिन इस उदारता और सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं हो जाता कि विदेशी आक्रान्ता आयें और भारतीय संस्कृति को पद दलित करें, अपमानित करें, खण्डित करें और फिर भी इस संस्कृति पर आस्था रखने वाले व्यक्ति मौन बने रहें या विदेशी आक्रमणकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दें। ध्यान रहे, भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है बलोपासना। आक्रान्ताओं और आक्रमणकारियों का विरोध करने के लिए इस संस्कृति ने महाकाली को जन्म दिया है। यह वह संस्कृति है जो काल की उपासना करती है और मृत्यु को भी चुनौती देती रहती है।

अब भारत पराधीन नहीं

यह ठीक है कि पिछले लगभग डेढ़ हजार वर्षों तक भारत पराधीन रहा, पर आज हम पराधीन नहीं हैं, अतः यदि हमारी अस्मिता और हमारी सांस्कृतिक चेतना के केन्द्रों को किसी ने भी पददलित करने की चेष्टा की तो उसे किसी भी मूल्य पर सहन नहीं किया जायेगा। यह अनिवार्य हो चुका है कि भारतीय संस्कृति पर होने वाले नवीन आक्रमण के विरुद्ध राष्ट्र में चेतना जाग्रत की जाए। यह सांस्कृतिक चैतन्य ही राष्ट्रबोध का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह सांस्कृतिक चैतन्य ही राष्ट्र की समस्त समस्याओं का समाधान खोजेगा। यह कोई नहीं कहता कि विदेशी आक्रमणकारियों ने जिन स्थलों को अपमानित और विनष्ट किया उन सभी स्थलों का हम पुनरोद्धार करें। यह सम्भव नहीं है। भारतीय संस्कृति का विश्वास प्रतिशोध नहीं है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि हमारी सांस्कृतिक चेतना के जिन केन्द्र बिन्दुओं पर जो शूल चुभे हुए हैं, उन्हें भी हम न निकालें और मर्मान्तिक पीड़ा को जानबूझकर सहन करते रहें। यह भुलाया नहीं जा सकता कि अयोध्या, मथुरा और वाराणसी को राजनीतिक कारणों से पददलित किया गया? यह बात तो वे इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं, जिन्हें इस्लाम का संरक्षक माना जाता है। इस्लामी जगत् में नदवा तुल-अलेमा, लखनऊ का विशेष स्थान है। इस विश्व प्रसिद्ध केन्द्र को इस्लामी जगत् में बहुत बड़ी मान्यता प्राप्त है। इस संस्था की ओर से एक पुस्तक १९७२ में प्रकाशित की गयी थी। उस पुस्तक का नाम है, "हिन्दुस्तान इस्लामी अहद में"। इस पुस्तक में यह लिखा है कि किस प्रकार अयोध्या, मथुरा और वाराणसी में उन मन्दिरों को गिराकर वहां मस्जिदें बनवायी गयीं जो भारतीय संस्कृति के चेतना केन्द्र थे। अयोध्या में यह कार्य बाबर के सिपहलसलार मीर बाकी ने किया, बाराणसी में यह कार्य आलगीत औरंगजेब ने किया। मथुरा में औरंगजेब ने गोविन्ददेव मन्दिर को गिराकर उसे मस्जिद के रूप में परिवर्तित किया।

सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र

वैसे तो हर मन्दिर उपासना और सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र होते हैं, लेकिन कुछ स्थल ऐसे होते हैं जो उपासना के केन्द्र कम, सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र अधिक होते हैं। हमारे कुछ मन्दिर ऐसे हैं जो राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं और जिनके कारण राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हुई है। ये वे मन्दिर हैं, जहां देश के कोने-कोने से भक्त आते हैं और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते

हैं। इन मन्दिरों के पीछे जो भावना है उसका किसी भी मजहब से कोई विरोध नहीं है। उसका इस्लाम से तो तनिक भी विरोध नहीं है। विदेशी आक्रमणकारियों ने इन सांस्कृतिक मन्दिरों को इसलिए विनष्ट किया, ताकि भारत की अस्मिता को पददलित और अपमानित किया जा सके। प्रश्न यहां यह है कि क्या स्वाधीनता के बाद भी इस ओर ध्यान नहीं दिया जायेगा? भारत की सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीयता के जो महान केन्द्र हैं, उनके पुर्ननिर्माण का विरोध भारतीय संविधान नहीं करता। जहां से भारतीयता अर्थात् भारतीय एकता निसृत होती है, जहां से भारतीय चेतना का विकास होता है, जो भारतीयता के लिए प्राण शक्ति की तरह कार्य कर रहे हैं, ऐसे केन्द्रों का पुनरोद्धार न कराया जाए, इसका क्या औचित्य? विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा जो कार्य भारत को मानसिक रूप से या सांस्कृतिक रूप से बंधक बनाने के लिए किये गए, उनका प्रतिकार करना क्या राष्ट्र धर्म के अन्तर्गत नहीं आता?

राष्ट्रबोध का क्षरण

राष्ट्रधर्म यह तो नहीं कहता कि विदेशी आक्रमणकारियों ने जहां कहीं भी राष्ट्रीय अस्मिता के केन्द्रों को बंधक बना लिया है, उनको मुक्त न कराया जाए। सच बात तो यह है कि राष्ट्रधर्म यही कहता है कि राष्ट्र के जो अस्मिता केन्द्र हैं, वे विदेशी आक्रमणकारियों के बंधन में न रहने पायें और वे एक बार पुनः स्वाधीन होकर सांस्कृतिक चेतना के विकास में सहायक बनें। यह कार्य कैसे किया जाए इस पर भारत सरकार को विचार करना चाहिए। वर्तमान में भारत की सबसे बड़ी समस्या राष्ट्रबोध के क्षरण की है। अगर यह क्षरण नहीं रुका तो धीरे-धीरे करके नित्य नयी समस्याएं उत्पन्न होती चली जाएंगी। राष्ट्रबोध के अभाव में जो नयी समस्याएं जन्म लेंगी वे पुरानी समस्याओं से भी अधिक व्यापक और अनिष्टकारी होंगी। यह दुर्भाग्य की बात है कि राष्ट्रबोध के क्षरण के प्रति देश के अधिकांश राजनीतिक दल चिंतित नहीं हैं और कम से कम वे राजनीतिक दल तो बिल्कुल भी चिंतित नहीं हैं जो आज सत्ता में बैठे हुए हैं। यह अपने आप में एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि भारत सरीखा पुरातन राष्ट्र अपनी अस्मिता केलिए स्वयं अपने से ही संघर्ष कर रहा है और उसे अपनों से भी लड़ना पड़ रहा है। आज भारत की अस्मिता के सबसे प्रबल शत्रु बाहरी लोग नहीं, बल्कि वे हैं जो भारत के नागरिक तथा राष्ट्र के स्वघोषित कर्णधार हैं। यह कुछ वैसी ही स्थिति है, जैसे कि राजकोष की चोरी स्वयं राजा केद्वारा की जाए। निःसंदेह जहां कहीं भी ऐसी स्थिति होती है वहां जीवन-मूल्य प्रधान और आदर्श प्रधान नहीं हो पाता। भारत के वर्तमान चारित्रिक पतन के मूल में यही है। राष्ट्र का जन्म किसी राजनीतिक प्रक्रिया मात्र से नहीं होता और न राजनीतिक प्रस्तावों से वास्तविक राष्ट्र का जन्म सम्भव है। राजनीतिक प्रस्ताव किसी भी राष्ट्र का न तो निर्माण कर सकते हैं और उसे विनष्ट कर सकते हैं। अगर राजनीतिक प्रस्ताव किसी राष्ट्र को विनष्ट कर सकने में समर्थ होते तो इजरायल का उदय ही नहीं हो सकता था। इतिहास साक्षी है कि सैकड़ों वर्षों तक इजरायल नाम का कोई राष्ट्र दिखाई ही नहीं दे रहा था, सिर्फ वह यहुदियों के हृदय में बसा हुआ था। वह उनकी आत्मा का अंग था और इसीलिए उनका पुनर्जन्म हुआ। आज इजरायल एकसशक्त राष्ट्र के रूप में तेजस्वी नक्षत्र की तरह अन्तरराष्ट्रीय समुदाय में चमक रहा है। सत्य यह है कि राष्ट्र का जन्म आस्थाओं और परम्पराओं से होता है। समाज में बाह्य स्तर पर कितनी ही विभिन्नता क्यों न हो, लेकिन जिस समाज का अंतस सामान्य आदर्शों पर विश्वास करता है उस समाज में राष्ट्र के बीज अंकुरित हो उठते हैं। इस प्रक्रिया का जन्म कोई दस-बीस-पचास वर्षों में नहीं होता। इस प्रक्रिया केजन्म लेने में अनेकशताब्दियां लग जाती हैं।

भारत का अंतस

भारत का जन्म हजारों वर्ष पुरानी परम्पराओं से हुआ है। इन परम्पराओं का आधार वे आदर्श और मान्यताएं रहीं जो आज भी जीवित हैं। अगर इन मान्यताओं और परम्पराओं को हटा दिया जाए तो भारत का जो अंतस है वह बिखर जायेगा। जिस क्षण भारत का अंतस बिखर जायेगा वह खंडित हो जायेगा और भारत भाव का लोप भी हो जायेगा, लेकिन ऐसा हो नहीं सकेगा— भले ही शत्रुओं की आकांक्षा यही हो कि ऐसा हो जाए। आज विभ्रमवश भारत में रहने वाले अनेक भारतीय नागरिक भारत के मूल में जो परम्पराएं और मूल्य हैं, उन्हें न समझ पा रहे हों, पर इससे कोई अंतर पड़ने वाला नहीं है, क्योंकि भारत का जो अंतस है वह आज भी पूर्ण रूप से शक्तिमान है तथा स्वयं के आदर्शों और मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध भी है। जिस समाज के पास एकता के आधार नहीं होते वह समाज राष्ट्र के रूप में कभी भी न तो विकसित हो पाता है

और न फलफूल पाता है। राष्ट्रीय एकता के सूत्र राजनीतिक प्रस्तावों से जन्म नहीं ले सकते। उनका सीधा संबंध सांस्कृतिक चेतना से होता है। उनका संबंध होता है, उन महान आदर्श पुरुषों से जिनके कारण उस राष्ट्र की कीर्ति ध्वजा फहराती है। यदि किसी भी राष्ट्र से उनके उन प्रतीकों को हटा दिया जाए जिनसे वह सदियों से प्रेरणा लेता रहा हो तो फिर राष्ट्रभाव का क्षरण होना शुरू हो जाता है। प्रतीकों के विनष्ट होने से पहले राष्ट्रभाव को क्षति पहुंचती है और फिर राष्ट्रीय एकता को। इसके साथ ही राष्ट्रधर्म का लोप हो जाता है।

प्रतीकों का महत्त्व

जो राष्ट्र अपने प्रतीकों का सम्मान करना नहीं जानता वह अधर्म के एक ऐसे पथ पर चल निकलता है जो उस राष्ट्र को पतन की ओर ले जा सकता है, उसका उत्कर्ष नहीं कर सकता। धर्म से आशय यहां किसी कर्मकाण्ड से नहीं, बल्कि उस कर्त्तव्य भाव से है जिसका जन्म राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति पूर्ण समर्पण द्वारा ही होता है। यहां धर्म शब्द से बोध है उस भाव से, जिस भाव को लेकर संविधान निर्माताओं ने न्यायपालिका के लिए **"धर्मा रक्षति रक्षितः"** के उद्घोष का चयन किया और लोकसभा के अध्यक्ष की पीठ पर स्वर्णाक्षरों में अंकित किया–**धर्मचक्र प्रवर्तनाय"**। जो धर्म के इस मर्म को जानते हैं, वे ही राष्ट्रधर्म के मर्म को समझ सकते हैं। जो इस धर्म के मर्म को नहीं जानते वे न तो **'वन्देमातरम्'** के महत्त्व को जान-समझ सकते हैं और न ही उन्हें राष्ट्रीय मूल्यों, परम्पराओं और सिद्धान्तों का ही बोध हो सकता है। यह असम्भव है कि राष्ट्रीय प्रतीकों का, राष्ट्र के महान आदर्श पुरुषों का कोई अपमान भी करे और यह भी दावा करे कि वह राष्ट्रीय मूल्यों, आदर्शों के प्रति समर्पित है। किसी राष्ट्र के जो मूलभूत प्रेरणा स्रोत और आदर्श होते हैं वे समय के साथ बदलते नहीं क्योंकि उनका संबंध तो राष्ट्र की मौलिक प्रकृति से होता है। काल कितना ही प्रबल एवं सक्षम क्यों न हो, उसमें यह सामर्थ्य नहीं होती कि वह किसी राष्ट्र के मौलिक मूल्यों, उसकी उदारता और मान्यता को नष्ट कर दे। किसी राष्ट्र के मौलिकमूल्य, मान्यताएं और आदर्श उसकी नींव होते हैं। कोई भी राष्ट्र तभी तक जीवित रह सकता है जब तक उसकी नींव के पत्थर अडिग बने रहते हैं। भारतीयता ऐसे ही नींव के पत्थरों से प्रसूत हुई है। कौन हैं नींव के पत्थर, कहां से प्रसूत हुई है भारतीयता, कहां है वह गोमुख जहां से भारतीयता की रसधार प्रारम्भ होती है– इस सब पर विचार किये जाने की आवश्यकता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसा नहीं किया जा रहा है।

राष्ट्रीय कर्त्तव्य

आज हमारे अनेक राजनीतिक दल वोट बैंक के लिए राष्ट्रीय मूल्यों, आदर्शों और परम्पराओं के साथ समझौता करने के लिए तैयार रहते हैं। निसंदेह ऐसा नहीं होना चाहिए। राष्ट्रीय मूल्यों और मान्यताओं के साथ समझौता करने का अर्थ है राष्ट्रबोध के साथ समझौता करना और जब राष्ट्रबोध के साथ समझौता किया जाता है तो फिर उससे राष्ट्रधर्म अपवित्र होता है। जो भी राष्ट्रीय मूल्यों के सम्वर्धन में सहायक है उसकी रक्षा करना राष्ट्र का कर्त्तव्य है इस राष्ट्रीय कर्त्तव्य को भी राष्ट्रधर्म कहा जायेगा। इस कर्त्तव्य की पूर्ति से भी राष्ट्र भाव का पालन संभव है। अगर राष्ट्र भाव ही नहीं रहेगा तो फिर इसका अर्थ होगा भारतीयता का क्षरण और जब भारतीयता का क्षरण होगा, उसके प्रति मोह भी नहीं रहेगा तो फिर भारतीय संस्कृति अपना मूल स्वरूप खो बैठेगी। ऐसा होने पर भारत का जो राजनीतिक स्वरूप है वह भी अंततः विखंडित हो जायेगा। निसंदेह अयोध्या, मथुरा और काशी भारत के आध्यात्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के प्रतीक और केन्द्र हैं। इन केन्द्रों के साथ विदेशी आक्रमणकारियों ने जो कुछ किया वह भारतीयता के शरीर में चुभे हुए शूल के समान है। इन शूलों को कैसे हटाया जाय और सांस्कृतिक अस्मिता के इन केन्दों का पुनरोद्धार कैसे हो, इस पर यदि राष्ट्रीय सहमति प्राप्त की जा सके तो यह एक श्रेष्ठ कार्य होगा। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए सभी राजनीतिक दलों को आगे आना होगा और उनके साथ सभी को यह स्वीकार करना होगा कि अयोध्या, मथुरा और काशी भारतीय संस्कृति व अस्मिता के केन्द्रबिन्दु हैं और उनका पुनरोद्धार होना ही चाहिए।

('जागरण' से साभार)

जो भी है हिन्दू का घर,
गूंजे वहां वेद का स्वर।

भारत पर चतुर्दिक आक्रमण

❑ आनन्द शंकर

आश्चर्य की बात है कि परमवीर, तेजस्वी परन्तु अपने दुश्मनों को हमेशा क्षमा करने वाले हिन्दू समाज पर ७०० वर्ष से बीच बीच में आक्रमण होते रहते हैं, उसका कत्लेआम होता है, उसे लूटा जाता है। उसके हजारों मन्दिर तोड़े जाते हैं।

दुर्भाग्य से आजादी के बाद भी विदेशी विचार के समाजवादी, सेक्युलरवादी, राजनैतिक दलों के कुछ जयचन्दवादी, अवसरवादी और असत्यवादी नेता अपनी कुर्सी के लिए ८० करोड़ हिन्दुओं के साथ वर्षों से विश्वासघात कर रहे हैं जिससे विदेशी शक्तियां पुनः भारत पर अनेक आक्रमण कर रही हैं।

१. पाकिस्तान, बंगला देश व काश्मीर के हिन्दुओं पर भयंकर आक्रमण व अत्याचार किये जा रहे हैं। सारे भारत में शस्त्र संग्रह और बम विस्फोट किये जा रहे हैं। सारा देश बारुद के ढेर पर बैठा है। सेना के भेद पाकिस्तान पहुंच रहे हैं।

२. बंगला देश के डेढ़ करोड़ घुसपैठिये भारत में दंगे, अपराध व गरीबी बढ़ा रहे हैं। दुबई के गुंडों व स्मगलर्स का भारत में वर्चस्व हो रहा है क्योंकि इन्हीं की मदद से सेक्युलर कहलाने वाले नेता चुनाव जीतते हैं।

३. समाचार पत्रों, फिल्मों व दूरदर्शन के द्वारा विदेशी संस्कृति, विचार, वेशभूषा व भाषा का आक्रमण– हिन्दुओं को सेक्युलर बनाने केलिये उन्हें जो धर्महीनता सिखलाई जाती है उससे सारे देश में जलगांव और तंदूरकांड जैसे दुराचार व बलात्कार के कांड हो रहे हैं। सेक्युलरवादी नेताओं केशासन में भारत का जितना नैतिक पतन हुआ उतना गुलामी के ७०० वर्ष में भी नहीं हुआ।

४. धर्मनिरपेक्षता तथा धर्महीनता से उत्पन्न भयंकर भ्रष्टाचार का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर आक्रमण हो रहा है। चरित्रहीन, धर्महीन नेता देश को लूटकर हजारों करोड़ रुपया हजम कर गये। बोफोर्स, एनरान तथा शेयर घोटाले जैसे अनेकों कांड हुए, गरीबी व बेकारी अंधाधुंध बढ़ी। २० गुनी महंगाई बढ़ी जिससे लाचार गरीब लोग घुटघुट कर नर्क का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। काले धन व कुर्सी के लिये देश को बेचा जा रहा है।

५. भारत को लूटने के लिये विदेशी पूंजीवाद के द्वारा विदेशी कम्पनियों का आक्रमण हो रहा है।

६. विदेशी धर्मों का आक्रमण– लाखों हिन्दुओं का बड़ी तेजी से धर्मपरिवर्तन किया जा रहा है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार "हिन्दू आवादी २३ प्रतिशत बढ़ रही है जबकि मुस्लिम आवादी ३३ प्रतिशत बढ़ रही है। पर मतान्तरण के कारण वह हरियाणा में ४६ प्रतिशत और दिल्ली में ८४.६ प्रतिशत बढ़ी है। श्री अरुण शौरी के अनुसार "यदि हिन्दू अभी नहीं जागे तो हिन्दुस्तान में कई पाकिस्तान बन जायेंगे।" (पांचजन्य ६.८.९५) ऊपर से कांग्रेस नेता सीताराम केसरी कहते हैं कि हिन्दू दलितों को मुसलमान या ईसाई बन जाना चाहिये। (दैनिक जागरण दिल्ली २२.८.९५)

वोट बैंक प्रेरित सेक्युलरिज्म के नतीजे

१. काश्मीर व डोडा में कई हिन्दुओं के हाथ पैर काट दिये गये, उनकी आंखें निकाल ली गईं, हजारों हिन्दुओं को बेघरबार कर दिया गया। पर एक वर्ग के वोट लेने के लिये बिकाऊ सरकार ने न उनकी कोई सहायता की न उनकी रक्षा के लिए कोई सेना भेजी।

२. मुल्लावादी इमामों को ३०० करोड़ की मुफ्त तनखाह बांटने की कथित योजना चर्चित है पर गरीब अहिंसक, देशभक्त हिन्दू धर्माचार्यों को कोई भी आर्थिक सहायता नहीं दी जाती।

३. अनेक स्कूलों में कुरान, बाईबिल पढ़ाई जा सकती है पर वेद, गीता, रामायण नहीं पढ़ाई जा सकती क्योंकि वो हिन्दुओं के ग्रंथ हैं। गोवंश का विनाश करने से देश का आर्थिक विनाश हो जायेगा पर तुष्टीकरण के लिये उन गायों की भयंकर अत्याचार द्वारा हत्या हो रही है।

४ स्टेटसमेन १५.७.९५ के अनुसार बिहार में सिर्फ मन्दिरों की १५ एकड़ से अधिक जमीन लेंड सीलिंग एक्ट के द्वारा जब्त की जा रही है। मस्जिद और गिरजाघरों की नहीं।

५. ३ वर्ष में हिन्दुओं के सैकड़ों मन्दिर काश्मीर और बंगला देश व पाकिस्तान में तोड़ दिये गये पर जब सिर्फ एक बाबरी ढांचा हिन्दुओं ने तोड़ा तो उन पर बहुत जुल्म किये गये। हिन्दू आज दुनिया की सबसे अधिक सताई हुई और अपमानित जाति है। पर कोई सेक्युलरवादी, गांधीवादी, साम्यवादी और मानवतावादी हिन्दू तथा समाचार पत्र इसका विरोध नहीं करते। संघ और विश्व हिन्दू परिषद् इन सब अन्यायों

का विरोध करते हैं अतः सेक्यलुर सरकारें उन पर बार-बार प्रतिबंध लगाती हैं। पाखंडी राजनैतिक दलों का राज्य हुआ तो भारत में अनेक बोफोर्स कांड, नागपुर कांड, जलगांव कांड, तंदूर कांड भयंकर भ्रष्टाचार, दुराचार और गरीबी बढ़ती रहेगी। ऐसे सेक्युलरवादी दलों को चुनाव में मदद करना देश के साथ विश्वासघात है।

दलितों पर अन्याय

कांग्रेस, जनता दल जैसे ढोंगी सेक्युलरवादी दलों ने देशभक्त दलितों का हक छीनकर ४५ वर्ष में एक लाख करोड़ रुपया काश्मीर के पाकिस्तान समर्थक अलगाववादी नेताओं को दे दिया (इंडियन एक्स.) जिससे दलित लोग गरीब रह गये पर आतंकवादी ताकतवर हो गये।

धर्मनिरपेक्षता व तुष्टीकरण

राष्ट्रवादी मुसलमानों को दवाकर पाकिस्तान द्वारा प्रेरित मुल्लावादी मुसलमानों को हिन्दू मुसलमानों में नफरत फैलाने के लिये अपार धन और पद दिये जा रहे हैं इस तरह हिन्दू और मुसलमान दोनों को धोखा दिया जा रहा है। कई अन्य कार्यों द्वारा हिन्दू समाज में आपस में घृणा फैलाई जा रही है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राष्ट्रीय झंडा फहराने वाले स्वदेशी, स्वराज्य और स्वधर्म की बात करने वालों पर गोलियां चलाई जाती हैं। भाजपा की ४ प्रांतों की सरकारों में कोई दंगे नहीं हुए फिर भी सेक्युलरवादी नेताओं ने उसे सांप्रदायिक कहकर भंग कर दिया किन्तु मुस्लिम लीग से राजनैतिक गठबंधन किया गया। ऐसा अंधेर दुनिया में कहीं नहीं है। ऐसे तुष्टीकरण से सैकड़ों जयचंद पैदा हो गये।

हिन्दुओं की आत्मघाती मानसिकता

वर्तमान स्थिति का दोष हिन्दुओं पर है विश्व बंधुत्व व सर्वधर्म समभाव की अति के कारण हिन्दुओं में देशबंधुत्व व धर्मबंधुत्व जाग्रत नहीं हो सका। भोले हिन्दू कभी खतरे की ओर नहीं देखते इससे उनमें एकता नहीं है। हिन्दू लोग धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भ्रष्ट, अपराधी व धोखा देने वाले हिन्दू विरोधी नेताओं से चावल, चीनी, बच्चों के मुफ्त भोजन आदि की कुछ भीख लेकर उन्हें लगातार देश का शासन सौंप रहे हैं पर अपने सच्चे शुभचिन्तकों को साम्प्रदायिक कहकर उनकी मदद नहीं करते। वे भाग्यवाद व अवतारवाद में अन्धविश्वास के कारण अपने लोकतांत्रिक, राजनैतिक व धार्मिक अधिकार भी नहीं मांगते। **हिन्दुओं ने जितनी शांति की भीख मांगी उतने ही आतंकवादी शक्तिशाली हो गये।**

अपने समाज की सेवा व रक्षा के लिये मुस्लिम, ईसाई, यहूदी तथा अन्य धर्मों के लाखों-करोड़ के फंड हैं पर अभागे हिन्दुओं के पास २५ करोड़ का भी फंड नहीं है। अधिकतर धनवान हिन्दू व्यापारी सब धन अपने भोग विलास पर खर्च करते हैं। उन्हें समाज की कोई परवाह नहीं पर ये धन उनके पास बचेगा नहीं।

हिन्दू क्या करें? हिन्दू वोट बैंक बनेगा तो हिन्दू, सिख, ईसाई, मुस्लिम एकता होगी, भारत की गरीबी व भ्रष्टाचार की समस्याएं हल होगी, पाकिस्तान दोस्ती का हाथ बढ़ायेगा, भारत विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र व जगद्गुरु बनकर परम वैभव प्राप्त करेगा तथा विश्व में शांति स्थापित करेगा। हिन्दुत्व बिना सिर्फ देशभक्ति भारत का कल्याण नहीं कर सकती। इसका उदाहरण कांग्रेस है। **७०० वर्ष की दासता में हिन्दू अधर्म, असत्य और अन्याय के सामने संघर्ष करना भूल गये हैं। इस दोष को सिर्फ हिन्दुत्व ही दूर कर सकता है। 'भारत इसलिये धर्मनिरपेक्ष है क्योंकि वो हिन्दू है।' भारत परमतेजस्वी व शक्तिशाली ऋषियों का देश है। स्मगलर्स, भ्रष्टाचारी व गोहत्यारों का नहीं।**

कैसा हो राजनैतिक दल

आप ऐसी पार्टी को शासन में लावें जो देश की आजादी तथा स्वदेशी उद्योगों की रक्षा करे। ३७० धारा हटाकर काश्मीर को बचावे, समान नागरिक कानून लावे ताकि बहुसंख्यक, अल्पसंखक का भेद मिटे, गोहत्या बंद करे, दूरदर्शन पर युवकों को चरित्र व देशप्रेम की शिक्षा दे। लोकतंत्र में राजनीतिकदल में मतभेद होना स्वाभाविक है पर शासन उसी दल को सौंपना चाहिए जो भ्रष्टाचारियों, आतंकवादियों, अपराधियों तथा विदेशी घुसपैठियों को अपने गले ना लगावे बल्कि उन्हें सजा दे। जो पार्टी यह भिन्न मार्ग अपना सके अब उसकी बारी है। देश में सच्ची स्थिरता वही ला सकेगी। वोटों का सदुपयोग होगा तो यह देश स्वर्ग बन जायेगा। अमेरिका, जर्मनी, जापान में यही किया जाता है। लोकतंत्र में वोट सबसे बड़ा वरदान है। सच्चे लोकतंत्र में जनता स्वामी और शासक सेवक होते हैं यही रामराज्य है। अब देश को बचाने की सारी जिम्मेदारी जनता पर है।

हमारा कर्त्तव्य है हम जागृति उत्पन्न करें ताकि देश में पुनः विवेकानन्द, हेडगेवार तथा सावरकर जैसे देशभक्त उत्पन्न हों।

विश्व हिन्दू परिषद, फीरोजा मेशन, ग्रांटरोड स्टेशन (पूर्व) मुम्बई-७

कपोल कल्पना अथवा वास्तविकता

क्या १५ अगस्त भारत का स्वाधीनता दिवस है?

❑ हरदयाल देवगुण पूर्व सांसद

हरदयाल देवगुण पूर्व सांसद हैं, पत्रकारिता के क्षेत्र में भी वे वर्षों 'वीर अर्जुन' दैनिक और उर्दू प्रताप के साथ जुड़े रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक और अ० भा० हिन्दू महासभा के मंत्री के नाते हिन्दुत्व के प्रचार और प्रसार में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जनसंघ के दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में उनके संगठन कौशल से राजधानीवासी अवगत हैं। स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के दर्शन के वे प्रभावी व्याख्याकार हैं। चिंतक और सिद्धान्तकार श्री देवगुण के स्वाधीनता संबंधी विचार यहां प्रस्तुत हैं। इन पर अपेक्षित है पाठकों की प्रतिक्रिया भी।—सम्पादक

"२५ नवम्बर, १९४९ की संविधान सभा में संविधान के अन्तिम प्रारूप पर चली लम्बी-लम्बी बहस का समापन करते हुए संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष डॉ० भी०रा० अम्बेडकर ने घोषणा की थी कि "२६ जनवरी, १९५० को भारत एक स्वतंत्रत देश हो जाएगा" (सं० स० बहस खंड ११, पृ० ९७७) मगर १५ अगस्त को "भारत के स्वतंत्रता दिवस" के रूप में मनाकर इतिहास और राष्ट्रीय मानस एवं देशभक्ति की भावनाओं के साथ एक प्रचंड प्रवंचना की जा रही है। वस्तुतः यह स्वतंत्रता दिवस नहीं है। अब केन्द्र सरकार वर्ष भर चलने वाले स्वर्ण जयन्ती समारोहों का आयोजन कर रही है और राज्य सरकारें भी उसका अनुगमन कर रही हैं। देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति अथवा संवैधानिक किसी भी दृष्टि से १५ अगस्त को "भारत का स्वतंत्रता दिवस" सिद्ध नहीं किया जा सकता।

मात्र कल्पना

शायद यह कल्पना जान बूझकर फैलाई गई है कि वर्तमान भारत ने इसी दिन १९४७ में पूर्ण स्वातन्त्र्य का अर्जन किया और इस कल्पना को केन्द्र विन्दु बनाकर इसके चतुर्दिक एवं भावातिरेक और उन्माद का ताना-बाना जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दू विरोधी और मुस्लिम समर्थक अंग्रेजी प्रेस, छद्म राष्ट्रवादियों, थके हारे और आयु वार्धक्य अशक्त होते जा रहे सत्ता के भूखे राजनीतिज्ञों तथा राज्य-नियंत्रित इलेक्ट्रोनिक मीडिया के सशक्त समर्थन से पूरा था। इस कल्पना का उपयोग उस राजनीतिक सत्ता को नाटकीयता तथा रोमांचक आवरण प्रदान करने के लिए खंडित भारत के भारतीय नेताओं ने किया था। इस सत्ता की प्राप्ति उन्हें ब्रिटिश स्वामियों से 'अनुग्रह' के रूप में हो रही थी ताकि वे इस दिवस से जुड़ी भयावह जमीनी हकीकतों पर पर्दा डालकर उनसे जनमानस को आंदोलित न होने दें। इस कल्पना के प्रसारण के पीछे जो अन्य कारण रहे, उनमें आत्मा के कलुष पर पर्दा डालना और अहम् की संतुष्टि तथा स्वयं को गौरवान्वित करने की तुच्छ प्रवृत्ति भी है।

मगर इस कल्पना को सतत प्रचारित कर इसे एक वार्षिक अनुष्ठान का रूप प्रदान किया गया और इस दिन से संबंधित अन्य तथ्यों को दर किनार करते हुए उपेक्षित और प्रायः विस्मृत ही कर दिया गया। आत्म-हंता सरीखी प्रवृत्ति से ग्रस्त हिन्दूजन, जिनका स्वभाव ही झूठे देवताओं की वंदना और अर्चना बन गया है और जो एक प्रकार से मरण का वरण करने को लालायित हैं, उनके लिए ऐसी कपोल कल्पनाओं पर विश्वास कर बैठना कोई अप्रत्याशित बात नहीं है। **विमत व्यक्त करने वाला अकेला व्यक्ति कहे जाने का जोखिम उठाकर भी लेखक अपने इस आग्रह पर डटा हुआ है कि १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्रता दिवस की संज्ञा दिया जाना यथार्थ से परे है। क्योंकि वर्तमान खंडित भारत, जो उसी दिवस की देन है, उस दिन यह एक "संप्रभु और स्वतंत्र राष्ट्र" उस रूप में नहीं था, जो इसे २६ जनवरी १९५० को तथा बाद में मिला।** उस दिन भारत स्वतंत्र नहीं हुआ, जैसा कि जताया जाता है, अपितु यही वह दिवस था, जब ब्रिटिश संसद के एक कानून भारतीय स्वातन्त्र्य अधिनियम १९४७ के तहत जो उस दिन से प्रभावी हुआ था "ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत एक अधिराज्य (डोमिनियन)" का रूप ही ग्रहण कर पाया था। इस अधिनियम के क्रियान्वयन के फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को व्यापक रूप में (१) साम्प्रदायिक आधार पर प्राचीन भारत के विभाजन (२) खंडित भारत को 'अधिराज स्तर' की मंजूरी, (३) पाकिस्तान में गए क्षेत्रों में हिन्दुओं और सिखों के जघन्य नरसंहार तथा (४) ५५६ भारतीय देशी राज्यों की पूर्णतः

"स्वतंत्र संप्रभु राज्य" बनाकर भारत के खंड-खंडन की ब्रिटिश दुरभिसंधि का परिचायक दिवस ही कहा जा सकता है। हमें तथ्यों का खुलकर सामना करना चाहिए। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम की धारा एक में कहा गया है—१. नए अधिराज्य : पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को भारत में दो स्वतंत्र अधिराज्य स्थापित होंगे, जो भारत और पाकिस्तान केनाम से जाने जाएंगे। इस धारा के दो अवयव हैं; एक था (ब्रिटिश) भारत अथवा हिन्दुस्थान, जैसा कि वह तब जाना जाता था, उसे दो भागों में खंडित होना था जैसा कि १५ अगस्त, १९४७ के अशुभ दिवस हुआ और दूसरा था यह कि अलग हुए भाग अधिराज्य (डोमिनियन) होंगे जो भारत और पाकिस्तान के नाम से जाने जाएंगे।

धारा २, ३ और ४ के तहत पाकिस्तान को एक खालिस मुस्लिम राज्य बनाने के लिए मुस्लिम बहुल क्षेत्रों का निर्धारण किया जाएगा। अधिनियम की इन धाराओं की परिणितिओं को देशभक्ति विहीनता की भाव भंगिमा सी अपनाते हुए स्वतंत्रता का घोषणा पत्र कहा गया और ऐतिहासिक भी बताया गया। जबकि देश को अनेक शताब्दियों पूर्व से ही पुराणों जैसे प्राचीन ग्रंथों में, जिनमें विष्णु पुराण और ब्रह्म पुराण आदि हैं, इस रूप में वर्णित किया गया है;

उत्तरम् यत् समुद्रस्य हिमाद्रिश्चैव दक्षिणम्। वर्षम् तद् भारतं नाम, भारतीय यत्र संतति॥

अर्थात् सागरों के उत्तर से लेकर हिमालय के दक्षिण तक भारत भूमि है और उसकी संतति भारती है। भारत अथवा हिन्दुस्तान की इस शताब्दियों पुरानी कल्पना को ब्रिटिश वधिकों ने जिन्ना के साथ सांठगांठ कर और वस्तुतः महात्मा के आशीर्वाद और नेहरू, पटेल एवं अन्य कांग्रेसी नेताओं की सहमति से जिबह किया गया है।

भारतीय राष्ट्रीयता का वध

अब शायर इकबाल की "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां" की अवधारणा विलुप्त हो चुकी थी, रवीन्द्र नाथ ठाकुर के जन-गण-मन में भारत का जो भूगोल वर्णित है, वह कायम नहीं रहा और सुब्रह्मण्यम भारती का यह सपना कि जब भारत स्वतंत्र होगा तो केरल कुमारी तेलुगु गीत गाते हुए सिन्धु सरिता में अवगाहन करेगी खंड खंडित हो गया। गोखले, तिलक, लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल की बाल, पाल और लाल के रूप में स्वाधीनता संग्राम में विख्यात हुई त्रिमूर्ति, श्री अरविन्द घोष और खान अब्दुल गफ्फार खान सरीखे स्वातन्त्र्य आराधकों और मदन लाल ढींगरा, लाला हरदयाल, वीर सावरकर, कन्हाई लाल दत्त, खुदीराम, बिस्मिल, अशफाकुल्ला, भाई परमानन्द, भाई बालमुकुन्द, अवध विहारी, मास्टर अमीरचन्द, भगत सिंह, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सरीखे क्रांतिकारियों और अनेक वीरों और स्वातन्त्र्य संघर्ष के हुतात्माओं ने जिस राष्ट्र को अपनी रक्तांजलियां समर्पित की थीं, उनका इसी दिन वध हुआ था। **१५ अगस्त १९४७ ही वह दिवस है जिस दिन स्वाधीनता आन्दोलन के प्रेरक राष्ट्रवाद की हत्या हुई थी।**

लाहौर जहां भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव वध स्तम्भ पर हंसते-हंसते झूले थे और जहां लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन केविरुद्ध काले झंडे लहराते हुए ब्रिटिश पुलिस के क्रूरतम प्रहारों को वीरता सहित झेलने के पश्चात अपनी देह मातृ मन्दिर में हवि स्वरूप समर्पित की थी "स्वतंत्र भारत" का अंग नहीं रहा था। यहां तक कि वह रावी भी, जिसके तट पर जवाहर लाल ने "पूर्ण स्वराज" का संकल्प उद्घोषित किया था। अब हमारी सीमाओं और अधिकार से दूर हो गयी थी। सिख मत के संस्थापक गुरु नानक देव की जन्म स्थली ननकाना साहब और हमारी संस्कृति के महान प्रतीक तक्षशिला और मोहन जोदड़ो भी गैर मुस्लिम प्रतीकों और उपासनास्थलों के रूप में उपद्रवियों की आखेट स्थली बनने के लिए छोड़ दिए गए थे।

नियति से विश्वासघात

उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त के वीर मुस्लिम पठान खान अब्दुल गफ्फार खान के सबल नेतृत्व में शेष भारत के अपने सहयोगी देशभक्तों के साथ कंधे से कंधा जुटाकर भारत की मुक्ति के लिए संघर्ष किये थे और एक करोड़ से अधिक हिन्दू और सिख, जिन्होंने सदैव कांग्रेस का साथ दिया था, उन्हें ब्रिटिश शासकों और कांग्रेसी नेताओं ने विश्वासघात कर "भेड़ियों के समक्ष फैंक दिया था।" खान अब्दुल गफ्फार खान को "नियति के साथ किए गए इस विश्वासघात के फलस्वरूप अपने जीवन के शेष दिनों में से अधिसंख्य पाकिस्तान की जेलों और काबुल में बिताने पड़े।

ब्रिटिश अधिनियम की परिणति सामान्य शब्दों में यह थी कि पाकिस्तान की संज्ञा प्राप्त क्षेत्र के निवासी हिन्दू और सिखों को ब्रिटिश गुलामी के बदले में मुस्लिम धर्मान्धिता का उत्पीड़न झेलना होगा। कैसा वीभत्स विश्वासघात था उनसे यह कांग्रेजी नेताओं का? तो क्या इस हकीकत के बावजूद हम

इस बात पर वर्षानुवर्ष हर्षातिरेक की अभिव्यक्ति करते रहे हैं कि हम अपनी पावन मातृभूमि की एकता, अविभाजिता और अखंडता की रक्षा नहीं कर सके कि जो अपने सभी पुत्रों और पुत्रियों के लिए सम्पूर्ण देशभक्ति और राष्ट्रवाद का स्रोत रही थी? क्या हम आंग्ल-मुस्लिम गठजोड़ के साम्प्रदायिक पद प्रहार के प्रतिरोध की अपनी अक्षमता और सामर्थ्यहीनता की अव स्वर्ण जयन्ती मनाएं, जिसका परिणाम स्वदेश के विभाजन और भीषण नरसंहार के रूप में परिलक्षित हुआ था? विश्व इतिहास में झांकने पर किसी को शायद ही कोई ऐसा राष्ट्रीय नायक दृष्टिगोचर हो कि जिसने स्वयं में देशभक्ति का एक अणु मात्र भी रहते हुए अपने देश को स्वेच्छया खंड खंडित होते हुए देखना सहन किया हो और अपने राष्ट्र के विखंडन के दिन पर हर्षोल्लास मनाया हो और ऐसा प्रचंड नाटक अभिनीत किया हो, जैसा कि भारत विभाजन के दिवस पर नेहरू और पटेल ने किया था। अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने गृहयुद्ध (१८६१-६४) में लाख से अधिक सैनिकों और नागरिकों की इसलिए बलि दी थी, ताकि सात दक्षिणी राज्यों को संघ में बने रहने पर विवश किया जाए और इस तरह उन्होंने अपने देश की एकता और अखंडता को अक्षुण रखा था। उन्होंने "सात बहनों" को विभ्रान्त नहीं होने दिया था।

फ्रांस को अपने दो प्रान्त (भाग) अलसास और लौरेन १८७१ में जर्मनी के बिस्मार्क के हाथ गंवाने पड़े थे, किन्तु उसने जर्मनी के इन पर अधिकार को नियति नहीं मान लिया था अपितु जब द्वितीय विश्व युद्ध (१९३९-४५) के समापन पर वर्सेटाइल की संधि हुई तो सर्वप्रथम उन दोनों प्रान्तों को जर्मनी से वापस लिया। आयरिश रिपब्लिकन अलस्टर की पुनः प्राप्ति के लिए ब्रिटेन के विरुद्ध सतत युद्धरत है, जिसे १९२१ में आयरलैंड से पृथक कर दिया गया था।

मैजिनी ग्यूिसेवे (१८०५-१८७३) को इतालवी राष्ट्रवाद का जनक और मसीहा माना जाता है, जिन्होंने अपना समग्र जीवन इतालवी युवकों को उन इतालवी क्षेत्रों को वापस लेने के लिए तैयार करने में लगा दिया था, जिन पर फ्रांस, आस्ट्रिया, पर्सिया और रूस ने कब्जा जमा लिया था। वियतनाम की एकता की स्थापनार्थ हो-ची-मिन्ह ने सर्वाधिक शक्तिशाली माने जाने वाले अमरीका के विरुद्ध संघर्ष किया और भीषण रक्तपात युक्त गृहयुद्ध की विभीषिका झेली थी। हम अपने नेताओं और स्वयं की उन सबसे क्या तुलना करें। क्योंकि हमारे नेता और हम भारत के लोग अपनी मातृभूमि के विभाजन और विखंडन की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं और इस सिलसिले में आयोजित समारोहों पर करोड़ों रुपए उड़ा रहे हैं? कैसा विपर्यास है यह देशभक्ति और राष्ट्रवाद का और संवेदनहीनता तथा खुदगर्जी का?

(शेष अगले अंक में)

संस्थान के स्थापना दिवस पर वेद मन्दिर में यज्ञ

एक मास का योग शिविर भी लगेगा

दिल्ली: दयानन्द संस्थान के स्थापना दिवस और दयानन्द निर्वाण दिवस के प्रेरक अवसर पर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेद मन्दिर लेखराम नगर (इब्राहीमपुर) में ३० अक्टूबर को यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सत्यपति जी ने वेद प्रचार के क्षेत्र में दयानन्द संस्थान द्वारा दिए गए योगदान को अपूर्व बताया। उन्होंने वेद मन्दिर में १५ फरवरी से एक माह का योग शिविर आयोजित किए जानेकी भी घोषणा की। शिविर का समापन मार्च मास में होने वाले दयानन्द संस्थान के वार्षिकोत्सव के अवसर पर होगा।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने भी संस्थान द्वारा वेद प्रचार और वैदिक साहित्य को सामान्यजन तक पहुंचाने का प्रेरक पुरुष महात्मा वेदभिक्षुः को बताते हुए उनके जीवन के कुछ संस्मरण भी सुनाए।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध [illegible] महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम के संचालक श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा ने सुमधुर कंठ से वैदिक गीत प्रस्तुत किए। ब्रह्मचारिणी सुमेधा जी के निर्देशन में वेद मन्दिर में शिक्षा ग्रहण कर रहे बालकों के मंत्र पाठ से भी उपस्थित जन प्रभावित हुए।

संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी ने वेद मन्दिर में निर्माणाधीन यज्ञशाला और शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले वैदिक साहित्य के संबंध में जानकारी दी। यज्ञ में समीपस्थ ग्रामों के निवासियों ने सोत्साह भाग लिया।

कार्यक्रम की सफलता में संस्थान के प्रचार सचिव श्री मदन सिंह, ग्रामीण विभाग प्रमुख श्री बलजीत सिंह मान और राधेश्याम शर्मा का योगदान उल्लेखनीय रहा।

तिरंगे की सौगन्ध

□ डॉ० विजय कुमार मेहता, न्यूयार्क

पचासवीं वर्षगांठ की पावन बेला में
तिरंगे तुम्हें शत-शत प्रणाम है
आज पन्द्रह अगस्त की शाम है
प्राची नभ पर अर्ध चन्द्र उग आया है
गोधूली की मधुरिम बेला में - -
मंद मंद शीतल पवन लहराया है
मेघों के सघन झुरमुटों से देख
ज्योतिर्मय चांद कैसा मुस्काया है
उन राज भवनों पर तेरा लहराना,
मंद मंद सावन के पवन में बल खाना,
उन भवन शिखरों पर तेरा फहराना,
क्या मधुरिम छवि है तिरंगे तेरी,
गर्व से मेरी छाती तनी है,
मस्तक ऊंचा है, भृकुटि तनी है,
निहार रहा हूं तिरंगे तुम्हें बार बार,
आज तेरी छवि को आंखों में भर लूं,
तिरंगे आज तेरे पावन चरण चूम लूं,
तू हमारी मातृभूमि का अभिमान है,
सदियों के बलिदान का वरदान है,
हड्डियां जलाई हैं हमने अपनी,
शोणित की गंगा बहाई है अपनी,
तब तुझे हमने पाया है,
तब तुझे हमने लहराया है,
पर देख तिरंगे तुझे एक बात कहनी है,
कुछ सुननी है, कुछ सुनानी है,
वो अनगिनत वादे वो हजार कसमें,
जो बार-बार दुहराई गई हैं,
उनकी तुमको याद दिलानी है,
याद है तुम्हें आजादी की वह प्रभा,
अरुण की किरणें फूटती विभा,
वो वादे वो कसमें जो दुहराये गए थे,
हर आंखों के आंसू पोछ लेंगे,
सज जाएगी यह पावन धरती,
हर डगमगाती झोंपड़ियों का,
हम अस्तित्व मिटा देंगे,
मधुमय नव प्रभात आया है,
भारत माता अब संवर जाएगी,
असंख्य आभूषणों से लद जाएगी,
उस असहाय अतीत के सारे ऋण,
हमने सदा के लिए चुका दिए हैं,
स्वाधीनता की स्वर्ण रश्मि आई है,
भारत भूमि सजेगी औ संवर जाएगी,
राम की मर्यादा लहराएगी,
कृष्ण की बांसुरी बजेगी
धरती वृंदावन हो जाएगी
शंकर का त्रिलोचन खुलेगा
सब कालिमा धुल जाएगी
पर देख तिरंगे तू देख,
करोड़ों आंखों में आंसू की बूंदें,
आज भी झिलमला रही हैं,
करोड़ों भूखे और वस्त्रहीन हैं,
झोपड़ियां आज भी डगमगा रही हैं
राम की मर्यादा का कहीं नाम नहीं,
लंकेश्वर आज भी स्वच्छंद है
हमारी संस्कृति की जनक सुता,
आज भी कारागृह में बंद है
कृष्ण की बांसुरी तो बजी ही नहीं,
वृंदावन कभी सजा ही नहीं,
दुर्योधन की गदा हिल रही है
शकुनि की द्यूत क्रीड़ा चल रही है,
हजारों द्रोपदियों के केश खुल रहे हैं,
कुंतियां आज भी बेवस और असहाय हैं
लाक्षागृह पुनः जल रहे हैं
तपोलीन शंकर को किसी ने जगाया ही नहीं,
गरल पान के लिए कोई आया ही नहीं,
असुर सुरा पान कर मदमस्त हैं
सोम देवों को किसी ने जगाया ही नहीं
तिरंगे तू भी झूमता रहा शिखरों पर,
इन विक्षिप्त शासकों को तूने भी जगाया ही नहीं,
तो तिरंगे मैं ही चला,
उन महाप्राणों को जगाने,
राम, कृष्ण और शंकर की,
चरण रज को सिर पर लगाने,
पर देख तिरंगे यह कैसी विडम्बना है?
लोग हमारे रास्ते को रोकते हैं,
हमें धिक्कारते हैं, हमें टोकते हैं,
आवाजें आती हैं, दिशायें चरमराती हैं
राम, कृष्ण और शंकर के अस्तित्व का,
कोई जीता जागता आधुनिक प्रमाण लाओ!
अपनी सभ्यता और संस्कृति की,
कोई विश्वसनीय पहिचान लाओ!
प्रमाणित करो यह वही धरती है!
जाओ किसी न्यायालय का फरमान लाओ,
तुम्हारे प्राणों की सांस इस धरती से जुड़ी है,
जाओ कोई वैज्ञानिक अनुसंधान लाओ!
हम आधुनिक धर्म निरपेक्ष शासक हैं,
हमने नए शासन की बागडोर संभाली है,
हमने भारत की नई रूपरेखा संवारी है,
इससे मिलती जुलती हुई कोई
आधुनिक, मानवीय पहिचान लाओ,
तिरंगे तुम्हें इस धरती की सौगन्ध,
देख! तेरी इस पावन धरती को देख!
ले इन दूर्वा दलों को तो पहचान
देख मैंने मलय की धारा तेरी ओर कर दी,
जरा इसमें मेरी सुरभि को तो पहचान,
देख इस धरती की पावन मिट्टी को देख!
क्या यह मेरी अपनी धरती नहीं?
क्या यह राम, कृष्ण और शंकर की धरती नहीं?
क्या मुझे अपने अस्तित्व का प्रमाण देना होगा?
मैं जीवित हूं, क्या इसका कोई प्रमाण देना होगा
तिरंगे तुझे आज सौगन्ध है,
मैं मिट जाऊंगा उन पावन पद चिह्नों पर,
हड्डियां जला दूंगा मैं अपनी,
पर मुझे निराश नहीं होने दूंगा
तू गवाह रहेगा मेरी इस कुरबानी का,
क्या जाने! हमारी कुरबानी कोई रंग ला दे?
क्या जाने शंकर का त्रिलोचन फिर खुल जाए?
क्या जाने कृष्ण का सुदर्शन फिर चल जाए?
क्या जाने राघव का महा धनुष फिर तन जाए?
देखो सामने खड़ा अतीत का इतिहास है,
कितने रत्न, कितनी मणियां
इससे छीन ली गईं
हमारी संस्कृति के कितने महास्तम्भ,
जला डाले गए
हमारी मर्यादा के पवित्र चिह्नों पर,
आक्रामक, बर्बर, ताकतों ने,
अपनी विजय के स्तम्भ खड़े कर दिए,
मैं उसका प्रतिशोध तो नहीं मांगता,
सही धर्म निरपेक्षता का अवरोध तो नहीं मांगता
हर फूल गले मिल जाएं,
इसका विरोध तो नहीं मांगता,
अतीत की उस श्रृंखला से जुड़े
दो चार पद चिह्न ही तो मांगता हूं,
अपने धर्म और संस्कृति के पद चिह्नों पर,
मर्यादा से सिर झुकाने का,
अधिकार ही तो मांगता हूं।

ओ३म् राष्ट्राय स्वाहा। इदं राष्ट्राय इदन्नमम्।

हिन्दी के राष्ट्रीय पाक्षिक–पत्रों में सर्वोत्तम्

देशदृष्टि

- एक अनूठा पत्र। हर अंक पठनीय, संग्रहणीय
- प्रतिमाह पहली तारीख एवं सोलह तारीख को दिल्ली से प्रकाशित
- वर्तमान राष्ट्रीय परिवृत्त, इतिहास, पुरातत्त्व, संस्कृति, अध्यात्म, राजनीति, अर्थतन्त्र, मनोरंजन, साहित्य, वाणिज्य/व्यवसाय, धर्म, महानगर, राज्यों, खेल जगत्, बालोपयोगी, महिलापयोगी, प्रशासन-व्यवस्था, विज्ञान, तकनीक एवं आधुनिक राष्ट्रजन की समस्याओं/स्वप्नों पर ढेरों सामग्री जो ज्ञान बोधक भी है, सूचना संप्रेरक भी है और राष्ट्रीय-चिन्तन एव राष्ट्रीय-चरित्र के निर्माण एवं विकास की दिशा में उत्प्रेरक भी है।
- जन-भाषा, राष्ट्रभाषा, राज्य-भाषा 'हिन्दी' में अपनी सम्पूर्ण अस्मिता एवं राष्ट्रीय ऊर्जा की पहचान कराने वाला एक अनूठा पत्र।
- खरीदिए, पढ़िए, संग्रहीत कीजिए—आप पाएंगे कि राष्ट्रधर्मी संस्कारोत्थान में देशदृष्टि आपको निराश नहीं करेगा।
- वार्षिक/आजीवन सदस्यता उपलब्ध है। एक प्रति का मूल्य दो रुपये।
- वर्तमान पीढ़ी के लिए भरपूर जानकारी।
- भारत और भारतीयता को जानना चाहते हैं तो 'देशदृष्टि' पढ़िए।

मीडिया सर्विसेज प्रा.० लि०, दिल्ली का एक गौरवपूर्ण प्रकाशन

1246ए, अरुणा आसफअली रोड, वसन्त कुंज, नई दिल्ली–70

भारत ने यूरोप को बहुत कुछ दिया है

❑ रामस्वरूप

भारत जब विश्व सभ्यता का केन्द्र था तो स्वाभाविक ही उसका सम्बन्ध संसार की तत्कालीन प्रमुख सभ्यताओं और समाजों से प्रगाढ़ और प्रभावकारी था। जैसा कि भाषाओं के साम्य से स्पष्ट होता है, यूरोप, फारस और भारत परस्पर घनिष्ठता से सम्बद्ध हैं और सम्भवतः इनका मूल भी एकही हो, परन्तु तीनों के समान पूर्वज होने की स्मृति बहुत पहले से विलुप्त है। काल के प्रवाह में यूरोप और फारस ने तो अपने धर्म, अपने देवता, अपनी पुराण कथाएं और अपनी सृष्टि विद्याएं भी खो दीं। इसी कारण अतीत से उनका सम्बन्ध पूरी तरह नष्ट सा हो गया, किन्तु भारत अपनी मूल पहचान को बचाए रखने में समर्थ रहा और आज भी अतीत स्मृति और संस्कार तो उसके भीतर जीवंत हैं ही, साथ ही एक अर्थ में इन यूरोपीय समाजों और फारसी समाज के भी अतीत का महत्त्वपूर्ण अंश भारतीयों की स्मृति और जीवन में सुरक्षित है। लिखित इतिहास के समय में भी हम पाते हैं कि भारत का यूनान से घनिष्ठ रिश्ता रहा और यूनान उन दिनों एशिया का ही हिस्सा था। यूनानी दर्शन, धर्म और साहित्य पर भारतीय प्रभाव सुस्पष्ट है। भारत बुद्धिमता के लिए दार्शनिक दिमाक्रितम, एनाक्सकस और पायरो भारत आए थे। लूसीएनस के अनुसार दर्शन की देवी सबसे पहले सृष्टि के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र भारत पर अवतरित हुई थीं। १०वीं इस्वी में जन्मे महान ग्रीकसंत तायनावामी अपोलोनियस ने भारत की यात्रा की और लिखा– "भारतीय ज्ञानियों के सिरमौर ने अपने विशेष अतिथि से कहा– 'जो भी पूछना चाहो पूछ लो, क्योंकि तुम ऐसे लोगों के बीच आए हो जो सर्वज्ञ हैं।" अपोलोनियस ने पूछा कि क्या भारतीय स्वयं को जानते हैं? महान ज्ञानी ने उत्तर दिया, "हम आत्मज्ञान से ही प्रारम्भ करते हैं, इसीलिए तो हम सब कुछ जानते हैं।" ग्रीक सन्त भारत से बहुत प्रभावित हुए और उनका निष्कर्ष था कि मिश्र और इथियोपिया को भारत से ही ज्ञान प्राप्त हुआ तथा इथियोपिया में रहने वाले निर्वस्त्र दार्शनिक भारत के ही प्रवासी थे। उनका यह भी मानना था कि लगभग ५०० ई० पूर्व के यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस और उनके संप्रदाय ने भारत से ही अपने दर्शन की प्रेरणा प्राप्त की थी।

फिर लगभग एक हजार वर्ष से अधिक समय तक यूरोप ईसाइयत के प्रभाव में दबा रहा तथा उसकी आध्यात्मिक परम्परा और संस्थाएं अतीत से अपना रिश्ता खो बैठीं। उन पर एक वैचारिक आवरण पड़ गया और उनकी अंतश्चेतना अपने अतीत के बोध को बनाए रखने में तो असमर्थ होती चली ही गई साथ ही भारतीय अध्यात्म को समझ पाने में भी अक्षम हो गई। यह विचाराधारात्मक व्यवधान बाद में एक भौतिक व्यवधान द्वारा और गहरा तथा व्यापक हो गया क्योंकि इस्लाम ने यूरोप पर विजय प्राप्त कर ली तथा उन स्थलों, मार्गों और समुद्र मार्गों पर इसलाम का ही आधिपत्य हो गया जो भारत को यूरोप से जोड़ते थे। इस दीर्घ अवधि में भारत और ग्रीक-रोमन विश्व एक-दूसरे के लिए अजनबी से हो गए। यद्यपि कुछ भारतीय प्रभाव जैसे कि शून्य, भारतीय अंक और 'पंचतंत्र' यूरोप पहुंचने में समर्थ रहे। बाद में जब वास्कोडिगामा ने समुद्री मार्ग खोज कर अपने सैनिकों, व्यापारियों और मिशनरियों के साथ १४६८ में कालीकट की धरती को छुआ तब एक अन्य रूप में यह संपर्क सैनिक, व्यापारिक और ईसाई मिशन के उद्देश्य से था तथा किसी भी तरह की बौद्धिक जिज्ञासा से रहित था, इसीलिए इस पुनः सम्पर्क से कोई बौद्धिक संपर्क जीवित नहीं हो पाया।

इन विदेशी यात्रियों के लिए यह कर्त्तव्य निर्धारित था कि वे वापस जाकर यूरोप के अपने स्वामियों और संरक्षकों को अपनी यात्राओं की जानकारी दें। जो जानकारी और वृत्तान्त इन यात्रियों ने जाकर सुनाए, उसमें बहुत कुछ गलतियों से भरा और एकांगी था, जिसे अब पढ़ना बहुत रोचक लगता है। साथ ही यूरोप और उसके मस्तिष्क के बारे में कहीं अधिक पता भी उससे लगता है।

ईसाई मिशनरियों ने भारत यात्रा से वापस जाकर जो रिपोर्टें दीं, वे और भी दिलचस्प हैं। अधिकांश मिशनरी हिन्दुत्व के बारे में धुंधली सी ही जानकारी रखते थे। उन्होंने यहां यह भी पाया कि भारत में एक तरह का एकपंथवाद या एकदेववाद है। उन्होंने माना कि यह यहूदी और ईसाई धर्मों से उधार लिया गया है और अब बहुत अधिक विकृत रूप में भारत में प्रचलित है। बी जीजेनवाल्ग एक लूथर संप्रदाय का ईसाई मिशनरी था। वह भारत में घूमा और फिर उसने लिखा– "प्रकृति का मौलिक प्रकाश दुष्ट ब्राह्मणों द्वारा बाद में धुंधला कर दिया गया और हिन्दुओं ने स्वयं

को शैतान के रास्ते पर भटकने के लिए डाल दिया।"

उन मिशनरियों की अधिकांश रिपोर्टें ब्राह्मणों के बारे में निन्दा और हताशा से भरपूर तथा साम्प्रदायिक विद्वेष से भरी हुई हैं। सेंटजेवियर ने पहले ही यह लक्ष्य किया था कि ब्राह्मण भारत में अत्यन्त प्रतिष्ठित और समादृत लोग हैं तथा उनके ही कारण ईसाइयों को हिन्दू विधर्मियों पर अपना प्रभाव फैलाने में बाधा उत्पन्न होती है और इसीलिए ब्राह्मणों का पूरी तरह वंश नाश कर दिया जाना चाहिए। इसी परम्परा में जीजेनवाला ने लिखा — "ब्राह्मण भयंकरतम पाखण्डी हैं और ईश्वर की धरती पर उनसे अधिक धूर्त नस्ल शायद ही कहीं और रही हो।" राबर्ट नोबली ने इस समस्या को कुछ अलग ढंग से देखा। उनका तर्क था कि ब्राह्मणों का विरोध उचित नहीं होगा, किन्तु उन्हें धीरे-धीरे निष्प्रभावी और उदासीन बना देना चाहिए तथा जो आदर ब्राह्मणों को प्राप्त है, उस आदर का उपयोग करके ईसाइयत को प्रोत्साहन देने के काम में उस भावना को नियोजित किया जाना चाहिए। फलस्वरूप उसने स्वयं यह दावा किया कि एक और भी वेद था, जिसका नाम था 'जेसुर्वेद' यानी ईसा मसीह का वेद। नोबली ने दावा किया कि उस विलुप्त वेद का वही गुरु है और वह स्वयं एक रोमण ब्राह्मण है। उसने तमिलनाडु में ब्राह्मणों से संपर्क कर उनके सामने प्रस्ताव रखा कि मैं तुम्हें यह विलुप्त वेद सिखा सकता हूं। कुछ मिशनरियों ने संवाद भी किए। जीजेनवाला ने मालाबार के ब्राह्मणों से एक संवाद किया और उसकी रिपोर्ट अपने उच्च अधिकारियों को यूरोप में प्रकाशनार्थ भेजी। रिपोर्ट से पता चलता है कि ये ब्राह्मण लोग अत्यन्त उच्च कोटि के धर्मात्मा, नैतिक तथा गौरवसम्पन्न लोग हैं। वह रिपोर्ट पढ़कर अप्रसन्न मालिकों ने जीलेनवाला को चेतावनी दी— 'ध्यान में रहे, मिशनरी लोग भारत इसलिए भेजे गए हैं कि वे वहां हिन्दुत्व या भारतीयता के विधर्म (हीदनिज्म) को समूल नष्ट कर सकें न कि उन विधर्मियों की मूर्खताओं (नॉन्सेन्स) को सारे यूरोप में फैलाने के लिए।' एक अरसे तक वह रिपोर्ट दबाकर रखी गई और बहुत बाद में जाकर उसे सामने लाया गया।

कुछ मिशनरियों तथा साधारण यूरोपीय यात्रियों ने ऐसी रिपोर्ट भी दी कि भारतीयों का चरित्र बहुत उच्च कोटि का है और ईश्वर के बारे में उनके विचार अत्यन्त श्रेष्ठ हैं। यद्यपि न तो उनका कभी कोई पैगम्बर या मसीहा हुआ और न ही उन्हें कोई इलहाम जैसा कुछ हुआ। ऐसी रिपोर्टों ने एक अर्थ में जो अभीष्ट नहीं था, ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया तथा ईसाइयत विरोधी तर्क को हवा दी। वह एक अलग ही रोचक विषय है। जब क्रूसेड का दौर खत्म हुआ और ग्रीक ज्ञान का पुनरुद्धार हुआ, तब यूरोप में बौद्धिक प्राण आए और उन्होंने कतिपय ईसाई विचारों पर सवाल उठाने शुरू कर दिए। १५६८ में एक पुस्तक आई— "तीन पाखंडियों के बारे में" तीन पाखंडी से आशय था मूसा, ईसा और मोहम्मद। यह पुस्तक बहुचर्चित रही और काफी लोगों ने इसे पढ़ा। फिर यूरोप में एक विचारधारा उभरी जो 'सहजधर्म' प्रवक्त थी और कहती थी कि मनुष्य के पास पर्याप्त विवेक और अंतश्चेतना तथा नैतिक आचरण होना ही उसे धर्मात्मा बनाता है। किसी इलहाम और किसी बिचौलिए की जरूरत नहीं है। ऐसे परिवेश में भारत और चीन के बारे में यूरोप में जानकारी फैली और उसका भरपूर स्वागत हुआ। जर्मन दार्शनिक और गणितज्ञ लाइब्नित्ज ने पाया कि कन्फ्यूशियस दर्शन में परलोक की कोई ललक या आस्था नहीं है और इसलिए उसने अपील की कि चीन के धर्मप्रचारक यूरोप आएं, वहां घूमें और सहज धर्म का प्रचार करें, क्योंकि यह सहज धर्म, सहज बुद्धि और अंतश्चेतना से सम्पन्न नैतिकता पर आधारित है।

फिर नए आयाम खुलते गए। भारत से एक ऐसे धर्म का ज्ञान उन्हें हुआ जो प्राचीनतम था, विवेकपूर्ण था। वाल्टेयर ने लिखा— "भारत ऐसा देश है जिस पर संसार के सभी देश निर्भर हैं, किन्तु जो संसार के किसी देश पर निर्भर नहीं है।" और उन्होंने प्रशा के फ्रेडरिक महान से निवेदन किया— "हमारा पवित्र ईसाई धर्म पूरी तरह प्राचीन ब्रह्म धर्म पर आधारित है।" इस प्रकार भारत के प्रति एक नया ही उत्साह और आवेग उमड़ पड़ा। १७७१-१८१८ के कालखंड में हुए विद्वान एफ मेजर ने लिखा— "इजिप्ट के पुरोहितों और ग्रीस के ऋषियों ने भारत के मौलिक ज्ञानसागर से ही ज्ञान प्राप्त किया था। गंगा और सिन्धु के तटों पर हमारा हृदय एक रहस्यमय अनुभूति करता है।" हर्डर (१७४४-१८०३) ने लिखा— " भारत सभी धर्म पंथों का उद्‌गमस्थल वह स्वर्ग हैं जो हम खो बैठे हैं। वह सभी दर्शनों का स्रोत और मानवता का पालना है तथा मानवता का सनातन आवास है। हमारे भीतर उसके स्रोत छिपे हैं जिनकी साधना हमें करनी है।" शापेनहावर ने लिखा— "उपनिषद अति मानवीय बोध के दस्तावेज हैं और उपनिषद्‌कारों को नश्वर मनुष्य मान पाना कठिन है। भारत समस्त मानव जाति की पितृभूमि है जिसने हमें, हमारी कौम को मूल धर्म दिया।" शापेनहावर ने आशा व्यक्त की, "ऐशिया से आए हुए हम सब यूरोपीय लोग अपने मूल धर्म

को फिर से प्राप्त कर लेंगे।"

एमरी दे रेनकोर्ट ने अपनी पुस्तक 'द सोल ऑफ इंडिया' में लिखा है कि– "भारतीय संस्कृति के प्रति उत्साह व्यापक था। इसने शीलिंग और फिश्ते जैसे दार्शनिकों, गोएथे, शिलर, नोवालीस, टाइएक और ब्रेटनों जैसे कवियों और हेडर तथा श्लेनगल जैसे इतिहासकारों को प्रभावित किया। उन सबने भारतीय संस्कृति का अनुशीलन करते हुए चरम आनन्द की प्रबल अनुभूति की, और कह उठे– "भारतीय संस्कृति और भारत सर्वभौम धर्म का आवास है तथा सर्वोत्तम मानव जाति, समस्त साहित्य, समस्त दर्शनों और समस्त अध्यात्म शास्त्रों का पालना भारत ही है।" भारतीय संस्कृति को उन्होंने उसी स्तर पर प्रतिष्ठित किया जो प्रतिष्ठा बाद में क्लासिकल मूवमेंट ने ग्रीस और रोम के लिए सुरक्षित रखी है। यह भावना जर्मनी तक सीमित नहीं थी, बल्कि रूस सहित समस्त यूरोप में व्यापक थी। मार्कोविच ने लिखा है कि ताल्सताय ने आत्मस्वीकृति (कन्फेशन) सहित अपने समस्त कार्यों की प्रेरणा अंशतः हिन्दू विचारों से प्राप्त की। संस्कृत का ज्ञान यूरोप के लिए एक ऐसी ही महान घटना सिद्ध हुई। हेगल भारत का कोई प्रशंसक नहीं था, परन्तु संस्कृत के बारे में पता लगने पर उसने कहा– "यह इतिहास की एक महान खोज है मानो एक नया ही संसार हमने खोज लिया है।" संस्कृत की जानकारी से यूरोपियों को स्वयं अपनी भाषाओं के बारे में अपनी धारणाएं पूरी तरह बदलनी पड़ीं।

वह मानते थे कि यूरोपीय भाषा का उद्गम 'हिब्रू' से हुआ है परन्तु संस्कृत का पता लगने पर उन्होंने जाना कि वे एक भिन्न परम्परा के उत्तराधिकारी हैं। इसी प्रकार पहले वे समझते थे कि उनकी भाषा तो असंबद्ध शब्दों की संग्रह राशि है किन्तु संस्कृत का पता लगने पर यह धारणा बदल गई और वे धातु तथा निर्वचन के आधार पर और ऐतिहासिक सिद्धान्तों के आधार पर शब्दकोष का निर्माण करने लगे। यूरोप में अनेकविश्वविद्यालयों में उच्चतर अध्ययन के लिए संस्कृत एक अनिवार्य विद्या हो गई। संस्कृत के द्वारा उन्होंने स्वयं अपनी भाषा को बेहतर रूप में समझा और भाषा संबंधी अपने ज्ञान के विस्तार में संस्कृत से उन्हें बहुत सहायता मिली। भारत के संपर्क के बाद पश्चिम में उभरे प्राच्य आंदोलन ने पश्चिम की कई प्रकार की सहायता की। जर्मनी जैसे देशों को उससे एक नया आत्मगौरव मिला। बहुत समय से लैटिन लोग जर्मनी पर यह आरोप लगाते थे कि जर्मन लोग ट्यूटानिक बर्बरों की संतानें हैं। उन बर्बरों की, जिन्होंने महान भूमध्यरेखीय संस्कृति को नष्ट कर दिया था। अब जर्मनी ने एक अधिक प्राचीन सभ्यता और समाज– भारतीय संस्कृति और भारतवर्ष को अपना मूल स्थान बताना शुरू कर दिया। उन्होंने लैटिन नस्लों की श्रेष्ठता को अस्वीकार कर दिया और अपने आत्मगौरव की पुनर्प्रतिष्ठा की तथा अपने निंदकों के समक्ष अपने को हीन मानने के स्थान पर स्वयं को उनके ही समान, बल्कि अधिक ही श्रेष्ठ मूलवाला बताना शुरू कर दिया।

इसी प्रकार चेकोस्लोवाकिया, बुलगारिया, लिथुआनिया जैसे देशों को भारतीय नवजागरण ने उनके राष्ट्रीय आत्मजागरण में सहायता पहुंचाई। उन्होंने ग्रीक-लेटिन संस्कृति के आधिपत्य का विरोध किया और यह दावा किया कि उनकी भाषाएं, प्राचीनतर भाषा संस्कृत से निकलती हैं। भाषाई समता की यह अभिव्यक्ति उनकी राजनीतिक अभिव्यक्ति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष थी।

इस प्रकार भारतीय आंदोलन का प्रभाव बहुत गहरा और टिकाऊ रहा है। उसने पश्चिम के बौद्धिक क्षितिज को विस्तृत किया है। उसने ईसाइयत की उस संकीर्ण बुद्धि वाली आध्यात्मिकता, जो कि एक अकेले आदमी के इलहाम पर आधारित है, के विरुद्ध तर्क और विवेक तथा प्रबुद्ध जागृति की शक्तियों को सहारा दिया। साथ ही १८वीं शताब्दी के सतही तर्क 'बुद्धिवाद' के विरुद्ध भी भारतीय आंदोलन से काफी सहायता मिली। क्योंकि यह पाया गया कि भारतीय अध्यात्म में तर्क, विवेक और रहस्य अनुभूति तीनों ही समन्वित हैं। तथापि प्राच्य आंदोलन के बहुतेरे पक्ष ऐसे रहे जिसके कुछ दुष्परिणाम भी हुए। भारत में रुचि लेने को यूरोप में 'इंडोमेनिया' या 'भारत प्रेम का रोग' कहा जाने लगा और इस आंदोलन को ही 'रोमेटिक' तथा 'फैनेटिक' तक कहा जाने लगा। परम्परागत ईसाई समूहों ने अत्यन्त व्यवस्थित विरोध चलाया। उन्होंने भारत के अध्यात्म, भारत की श्रद्धा और आस्थाओं, उसके सामाजिक रीति-रिवाज और उसके नैतिक प्रतिमानों पर आक्रमण तथा आक्षेप शुरू किए। डेसियर, बाउचे तथा न्यूटन तक ने बाइबिल में वर्णित काल गणना तथा कालक्रम को मूलतः प्रामाणिक मानने की वकालत की, (न्यूटन ईसाई पंथ के शास्त्रीय वाद-विवादों में भी गहरी रुचि रखते थे और यह कम ही लोग जानते हैं) किन्तु अन्ततः इतिहास का ज्ञान और प्राचीन सभ्यताओं का ज्ञान बाइबिल के प्रतिपादनों के विरुद्ध गया। बाद में साम्राज्यवादी शक्तियों ने पूरी प्रबलता से भारत के अध्यात्म और भारतीय श्रद्धा तथा समाज व्यवस्था पर आघात किए। यूरोपीय शक्तियां सजग रूप से साम्राज्यवादी हो रही थीं और अधीनस्थ प्रजाओं के किसी भी प्रकार से श्रेष्ठ होने का विचार उन्हें अपने लिए हानिकर लगता

था, इसलिए उन्हें यह कभी सहन नहीं था कि भारत तथा अन्य प्राचीन देशों-समाजों की सभ्यता और संस्कृति को महान और श्रेष्ठ कहा जाए। उनके भीतर यूरो केन्द्रिकता बढ़ रही थी और वे यह न तो मानना चाहते थे और न देखना सुनना कि यूरोप के बाहर भी कुछ अच्छा पाया जा सकता है। अतः भारत को इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा। यद्यपि भारत में अब भी बहुत से गुण और विशेषताएं बच रहे थे तथा कई क्षेत्रों में भारत यूरोप से अब भी आगे था, परन्तु पुराने तथ्यों की नई व्याख्याएं शुरू हो गईं। उदाहरण के लिए भारत की सांस्कृतिक प्राचीनता को तो मान्यता मिल गई, लेकिन यह कहा गया कि भारत मानवता की आदिम दशा के पालने में अभी अटका झूलता पड़ा है, जबकि यूरोप उस प्राचीन अतीत को पीछे छोड़कर आगे बढ़ चुका है और इस 'अश्मीभूत' भारत में हम यूरोप का अपना अतीत देख सकते हैं। इसी प्रकार हेगल का मत था कि पश्चिमी संसार केसभी लोग भारत से आए हुए प्रवासी हैं, पर यह प्रवास एक भौतिक प्रवास भर था। इस प्रकार वे अपेक्षाकृत कम शक्ति वाले तथा पिछड़े हुए लोग हैं। हेगल ने कहा कि भारत की संस्कृति व्यापक है और वह संसार भर में फैली किन्तु वह एक मौन और निष्प्राण प्रसार था। उस प्रसार और विस्तार के साथ न कोई संहार किया गया, न वंशनाश किया, न बलपूर्वक दूसरों को अपने धर्म में बदला और दीक्षित किया गया और न ही दूसरों पर अपना सांस्कृतिक और राजनीतिक आधिपत्य थोपा गया और इसीलिए भारतीय संस्कृति का यह प्रसार और विस्तार व्यर्थ ही था और उसमें उल्लेखनीय कुछ भी नहीं है, क्योंकि उसने दूसरों का व्यवस्थित, योजनाबद्ध, कठोर रूपान्तरण तो किया ही नहीं।

अन्ततः ईसाई मिशनरी और उपनिवेशवादी शक्तियां विजयी रहीं। भारतीय संस्कृति पर आक्रमण का नेतृत्व अन्य लोगों के साथ जे एस मिल, हेगल, मैकाले, हेवर, कैरे तथा कार्ल मार्क्स सहित अनेक यूरोपीय दिग्गज प्रतिभाओं ने किया। वे सब पूरी तरह यूरोकेन्द्रित थे। हेगल ने अंग्रेजों की प्रशंसा की कि वे संसार को सभ्य बनाने के मिशन की भारी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहे हैं। पादरी हेबर ने कहा कि भारत जैसे देश में प्रकृति की कृपा है। और उस देश में सभी कुछ सुहाना है परन्तु वहां के आदमी हमारे (इसाइयत के) के प्रकाश से वंचित होने के कारण दुर्गुणी और बुरे हैं और उन बेचारे विधर्मियों को उनकी भूलों की जंजीरों से मुक्त कराना आवश्यक है, क्योंकि इसी में उस देश की मुक्ति है। इसी प्रकार मार्क्स का उपेदश है कि यूरोप द्वारा एशिया की विजय एशिया का सौभाग्य है। भारत के बारे में लिखते हुए मार्क्स भारत की स्वाधीनता के विचार को भी अप्रासांगिक मानता है। उसका कहना है कि मुख्य प्रश्न तो यह है कि क्या हम यह पसंद करते हैं कि भारत पर तुर्क लोग, फारसी लोग या रूसी लोग विजय पाते? या अंग्रेजों द्वारा भारत विजय ज्यादा अच्छी है? मार्क्स स्वयं अंग्रेजों द्वारा भारत-विजय के पक्ष में हैं, यद्यपि आज केअधिकांश भारतीय मार्क्सवादी भारत पर इस्लाम की संपूर्ण विजय के अधिक इच्छुक हैं। यूरोप के ये विविध चिंतक परस्पर भिन्न-भिन्न विचार रखते हैं परन्तु भारत के बारे में ये सब एक हैं। वे सब यूरोप की प्रधानता और केन्द्रीयता के बारे में भी एक हैं। साथ ही वे सब यूरोप के पश्चिमी संसार के विविध देशों की राजधानियों में तो बौद्धिकों के बीच लोकप्रिय हैं ही, एशिया में भी राजधानियों में उनकी ही धूम है। यूरोप पिछली कई पीढ़ियों से हमारे शासक समूहों का गुरु है आौर हमारा शासक वर्ग भारत को यूरोप वालों की ही नजरों से देखना सीख चुका है जैसा कि पश्चिम केबौद्धिकों और साम्राज्यवादियों के भीतर है। भारतीयों के प्रति यह अपमान भाव हमारे शासक वर्ग के भीतर बौद्धिक रूप से तथा व्यवस्थित रूप से संस्कार बनकर समा गया है। अनेक हिन्दू 'इलीट' लोगों का हिन्दू विरोध और भारत देश, इसकी संस्कृति, इसके धर्म तथा इतिहास के बारे में ईसाई मिशनरियों और मैकाले तथा मार्क्स की दृष्टि ही वह शक्तिशाली विरासत है जो कि यूरोपीय संपर्क से भारत में शासक वर्ग में जम गई है। साथ ही पश्चिम अभी भी अपने विचारधारात्मक श्रेष्ठता का आग्रही है। भारत के योगदान को गिना ही नहीं जाता। विगत दो शताब्दियों से यूरोप शिखर पर रहा है, यह सही है, तथापि अभी भी ऐसे यूरोपीय विचारक हैं जो हुसर्ल और फुकुयामा की थीसिसों को अतिरंजना मानते हैं। इतिहास में कुछ भी अन्तिम नहीं होता और इतिहास कई बार अपनी चाल से लोगों को धोखा दे देता है। वह अक्सर विपरीत दिशाओं में एक साथ चलता है और अतिचार तथा विफलता उसके लक्षण हैं, जो साथ-साथ घटित होते रहते हैं। यूरोप के बहुत से चिन्तक मानते हैं कि एशिया की हिन्दू और बौद्ध संस्कृतियों से अभी भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। जैसे कि बहुलता का सम्मान, थोड़ी सी अन्तर्मुखता, जीवन और प्राणियों के प्रति तथा परिवेश के प्रति आदर का भाव और पराभौतिक या अतीन्द्रिय आयामों के प्रति जानकारीपूर्ण और अनुशासित दृष्टि का विकास।

(अंग्रेजी से अनुवाद : रामेश्वर मिश्र पंकज)

विश्व में भारतीय सर्वाधिक अग्रणी

❑ जितेन्द्र कुमार (अमरीका के सुप्रसिद्ध ऊर्जा विशेषज्ञ)

भारतीय संस्कृति ही भारत की शक्ति का स्रोत है। सैकड़ों वर्ष की पराधीनता और हजारों आक्रमणों के बाद भी भारत की सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित है जबकि अनेक देश विश्व के मानचित्र से समाप्त हो गये या उनकी संस्कृति बदल गई। भारत का भविष्य हमेशा उज्ज्वल रहा है और रहेगा। यह जो निराशा दिखाई दे रही है यह अस्थायी है इसको समाप्त होना ही है।

भारत के प्रति श्रद्धा

भारत में रहने वाले ही नहीं अपितु अन्य देशों में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों एवं विदेशी युवक-युवतियों में भी भारत के प्रति श्रद्धाभाव. है। विदेशों में रहने वाले भी भारत के लिए कार्य करना चाहते हैं और कर रहे हैं। अभी हाल ही में अमरीका के संघ के दो कार्यकर्ता प्रचारक के रूप में कार्य करने निकले हैं। बड़ी संख्या में विदेशी लोग भारत की प्राचीन संस्कृति के दर्शन करने भारत जाते हैं। उनके मन में भारत के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास है। दुर्भाग्य है कि पश्चिम के अन्धानुकरण के कारण भारत उनकी आशा को पूरा नहीं कर पा रहा है।

हो सकता है अभी कुछ अस्थायी रूप से निराशाजनक स्थिति हो लेकिन मैं हमेशा भारत के बारे में आशावादी रहा हूं क्योंकि भारत में कई सकारात्मक पहलू हैं जो सारे विश्व में नहीं हैं। भारत की सबसे बड़ी शक्ति है वहां की संस्कृति। भारत सब कष्टों से, सब मुसीबतों से उभरेगा और इस समय अमरीका को यदि राजनीतिक स्तर पर कोई चुनौती दे सकता है तो वह भारत ही है।

सारे विश्व में कोई ऐसी तकनीकी संस्था नहीं है, चाहे किसी भी देश में चले जाइये-छोटे से छोटे देश में भी, जहां कम से कम एक भारतीय प्रोफेसर या वैज्ञानिक न हो। भारत में अगर सही लोगों के हाथ में देश नेतृत्व आ गया और एक दिशा तथा योजनाबद्ध ढंग से हम चलें तो हमारा मुकाबला करना किसी के भी लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा।

भारतीय लोग व्यापार में सबसे आगे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के पास समृद्धि एवं साधन हैं फिर भी वे व्यापार में भारतीयों से पीछे हैं। भारतीय कम्पनियों की गति अधिक है। मैंने अमरीका में ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में कार्य किया। व्हाइट हाउस का मैं सलाहकार रह चुका हूं। अनेक बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां, अमरीकी वायु सेना तथा नौ सेना के लिए भी मैं कार्य करता हूं। ग्राहकों को जागरुक करना मेरा उद्देश्य है। वर्ष ८६ से ८८ के बीच मैंने ज्वलनशील गैस पर कार्य किया, अब विद्युत के क्षेत्र में कार्य कर रहा हूं, ज्वलनशील गैस और ऊर्जा के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा पैदा कर उनकी कीमतें घटाने का श्रेय काफी हद तक मुझे जाता है। यही कारण है कि अमरीका में विद्युत तथा ज्वलनशील गैस की कीमत २५-३० प्रतिशत कम हुई है।

भारतीय आगे

अमरीका में अनेक भारतीय हैं जो यहां सर्वोच्च पदों पर हैं। श्री नन्दा अन्तरराष्ट्रीय कानून संस्थान के निदेशक हैं, श्री महेश मेहता एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी के उपाध्यक्ष हैं। दूर संचार एवं उच्च तकनीकी के क्षेत्र में भी भारतीय सबसे आगे हैं। 'आईडियम' नामक एकबड़ी कम्पनी भारतीय मूल के नागरिकों की ही है। वित्तीय क्षेत्र में भी भारतीय आगे हैं। टेलकम इन्वेस्टमेंट कम्पनी सबसे आगे है जो भारतीयों की है। बंगलौर की एकभारतीय कम्पनी साफ्टवेयर बनाने में सबसे आगे है। भारत में उसका सबसे अधिक प्रसार है।

अमरीका के राजनीतिक क्षेत्र में भी भारतीय आगे बढ़ रहे हैं, उपराष्ट्रपति सहित लगभग १५ कांग्रेस (अमरीकी संसद) सदस्यों के प्रमुख सलाहकार भारतीय ही हैं। भारतीय अब अमरीका की राज्य सरकारों में भी चुने जाने लगे हैं, मेरीलैंड के कुमार वर्बे दो बार चुने जा चुके हैं, कुछ वर्षों में केन्द्रीय संसद में भी भारतीय चुने जाएंगे यह विश्वास है।

भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद अमरीका आए एक जापानी प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि यदि भारत जाग गया तो हम सबके लिए कठिनाई होगी और भारत सर्वश्रेष्ठ शक्ति बन जाएगा। उद्योग एवं अर्थ की महाशक्ति अमरीका और जापान भारत से डरते भी हैं।

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

चार घटनाएं-एक शिक्षा

❑ कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

❑ **मोरगंज** की मण्डी में एक गुड़-शक्कर की दुकान है और उसका मालिक है, एक पतला-दुबला दुकानदार। मैं अक्सर देखता हूं कि उसकी दुकान पर दुकान के बाहर सड़क पर, हजारों लाल ततैयों की हवाई उड़ान जारी रहती है और उसके बीच में बैठा दुकानदार अपना काम करता रहता है। मैं उसकी दुकान के सामने से निकलता हूं, पर दूर-दूर और बहुत सावधानी के साथ, हाथ-पैर बचाकर। फिर भी एक दिन एक दुर्घटना हो ही गयी।

मैं बचा-बचा जा ही रहा था कि देखता हूं एक ततैया; सच मानिए, एकदम बमवर्षक सा मेरी ओर बढ़ा आ रहा है। मैं भी अपने को तीसमारखानों में शुमार करता हूं, इसलिए मैंने हथेली की ढाल से उसे पीछे ढकेल दिया, पर मैं अपनी बहादुरी की तारीफ भी अभी न कर पाया था कि देखा वह अपने एक साथी के साथ पूरे वेग से मेरी ओर आ रहा है। आ रहा है क्या वह दोनों आ गये और मुझपर झपटे। मेरे होश गुम पर विपत्ति केसमय भी प्रयत्न करना मेरा स्वभाव है इसलिए मैं अन्धाधुन्ध दोनों हाथ चलाने लगा; जैसे घूंसेबाजी कर रहा हूं।

अब मैं पसीने से तर हूं, विवेक मुझे है नहीं और हाथ बराबर फैंक रहा हूं। अचानक मुझे लगा कि वे दोनों बस मेरी गर्दन पर लिपटने को ही हैं। बस मैंने दोनों कोहनियों के बीच में कर लिया अपना मुंह और गर्दन को लपेट लिए दोनों हाथ बिल्कुल वही मुद्रा, जैसे पाधाजी के यहां बच्चे सबक याद न करने पर कान पकड़ते हैं। 'बाबूजी, आपने यही तो गलती की, जो हाथ हिलाये। हाथ हिलाने से ये और ऊपर आते हैं।' यह एक पल्लेदार की आवाज थी, जो राह चलते इधर आ निकला और जिसने हाथ के एक इशारे से उन दोनों को भगाकर मेरी जान बचायी थी। मैं इतनी देर में काफी अस्त-व्यस्त हो गया और मैं सामने ही देख रहा हूं कि हजारों ततैयों की भीड़ में वह दुकानदार गुड़ तौल रहा है।

एक ततैया उसके कान पर बैठ रहा है, जरूर काटेगा, पर नहीं, वह उड़ गया। एक दूसरा उसकी नंगी खोपड़ी पर बैठ गया। अब भिन्ना जायेगा इसका सिर, पर नहीं, वह भी उड़ गया। वह गुड़ तौल रहा है और मैं देखता हूं कि उसे जो डला तराजू पर चढ़ाना है उस पर दस-बीस ततैये जमा हैं। दुकानदार ने उंगली के हल्के इशारे से वह डला हिलाया और अरे, वे सब उड़कर दूसरे डलों पर जा बैठे।

पानी पी कर मैं चला आया यह सोचता हुआ कि इस दुकानदार को ततैये कीलने का मंत्र सिद्ध है या इन ततैयों से इसकी दोस्ती?

❑ एक बार भगवान बुद्ध सायंकाल समय एक मठ में पहुंचे और रातभर के लिए स्थान मांगा। मठाधीश कट्टर हिन्दू महन्त था। वह बुद्ध को देखकर जल गया और बोला— 'उस नदी तटवाली कोठरी में स्थान है, तुम्हें पसन्द है तो वहां टिक सकते हो।

बात यह थी कि उस कोठरी में सांप रहता था, जो कई आदमियों को काट चुका था। महन्त के यहां जो मालदार यात्री आ फंसता वह इस कोठरी में ठहराया जाता। प्रातःकाल यात्री की लाश नदी में फेंक दी जाती और मालमत्ता महन्त अपनी संदूक में रख लेता। भगवान् बुद्ध ने वहां निवास किया। रात में जब वह भयंकर सांप निकला तो भगवान् ध्यान-मग्न थे। सांप उनके सामने आया, फुंकारा, पर उन्हें क्या? उनका ध्यान न टूटा। सांप क्रोध में अन्धा होकर सिर पटकने लगा और मर गया। प्रभात में जब महन्त भगवान् को नदी में फेंकने आया तब उसने देखा भगवान् अब भी ध्यान-मग्न हैं और सांप मरा पड़ा है। महन्त के रोम-रोम में एक प्रश्न उठा— यह क्या?

❑ मैंने एक कुत्ता पाल लिया। कुत्ता क्या भेड़िया था। उसकी एक ही गुर्राहट में आने वाले की रूह फना हो जाती थी। सुबह-शाम हम उसे घर के भीतर रखते और दोपहर को बाहर छज्जे पर बांध देते। इस छज्जे पर से तीसरी मंजिल में जाने का रास्ता था और दोपहर में ऊपर कोई आता न था।

एक दिन अचानक दोपहर की गाड़ी से चाचा मधुसूदन दास आ गये। उन्होंने मुझे पूछा और ऊपर चल दिये। बच्चों ने

यह देखा और कुत्ते की ओर से उन्हें सावधान किया। पर वे ऊपर की ओर बढ़ चले। उनकी आवाज सुनकर मैं भी (तीसरी मंजिल पर) कमरे के बाहर निकल आया। अब मैं देखता हूं कि वे 'टाइगर' की ओर दृढ़ गति से बढ़े चले आ रहे हैं और वह खड़ा तो हो गया है, पर भौंकता नहीं। मैं बोलने को ही हूं कि वे उसके पास आ गये और बिना उसकी ओर देखे आगे निकल गये। 'टाइगर ने आपको कुछ नहीं कहा?' मैंने पूछा तो बोले– यह तो टाइगर है, हमें तो भइया चोर-डाकुओं में जाना पड़ता है।

जो 'टाइगर' किसी के दहलीज में आते ही हुंकार उठता है, वह चाचाजी के पास आने पर भी क्यों चुप रहा?

❑ क्रान्तिकारी शहीद श्री राम प्रसाद बिस्मिल उस दिन किसी स्टेशन से गाड़ी में चढ़ने वाले थे और किसी तरह पुलिस को यह सुराग मिल गया था। स्टेशन को पुलिस ने घेर रखा था। पर उनमें से कोई बिस्मिल को पहचानता न था। समय पर बिस्मिल साहब आये। सूट, बूट हाथ में हण्टर एकदम साहब। फर्स्ट क्लास का टिकिट और सूटकेस कुली के सिर पर। प्लेटफ़ार्म पर आते ही कुली ठोकर खा गया। अटैची सिर पर से गिरी और उसमें रखा रिवाल्वर प्लेटफार्म पर निकल पड़ा। पुलिस अफसर उधर झपटा और सारी स्थिति बिस्मिल के सामने, पर घबरा गया, तो क्रान्तिकारी क्या? बिस्मिल साहब ने बिना सामान की तरफ ध्यान दिये कुली पर हण्टर बरसाने शुरू किये। कुली पिट रहा है, चीख रहा है और वे चिल्ला रहे हैं– 'सूअर, मेरा माउजर टूट जाता, तो क्या होता?' पुलिस अफसर का सन्देह दूर हो गया और उसने आगे बढ़कर रिवाल्वर अटैची में रखा और कुली से सामान फर्स्ट क्लास में रखा दिया। बिस्मिल ने अफसर को धन्यवाद दिया और अपने डिब्बे में जा बैठे।

शिकार को अपने हाथ में पाकर भी पुलिस अफ़सर क्यों चूक गया?

इन चार उदाहरणों से जो चार प्रश्न उठकर हमारे सामने आते हैं, उनका उत्तर हम एक शब्द में पा सकते हैं और वह शब्द है स्थिरता, यानी संकट का, चिन्ता का समय होने पर भी अपने मन को, सोच विचार की शक्ति को स्थिर रखना।

विपत्तियों को दूर या पास से देखकर हाथ-पैर न फुलाइए। अपने मन को पकड़े रहिए। भगवान बुद्ध की आत्म-साधना हमारे पास भले ही न हो, गुड़ वाले दुकानदार, मेरे चाचा थानेदार और बिस्मिल की स्थिरता तो हम सब मनुष्यों की अपनी ही चीज है। ❑

असतो मा ज्योतिर्गमय

❑ डॉ० कृष्ण लाल

डूबा हूं मैं अन्धकार में, नहीं मार्ग को समझूं जानूं।
भटक रहा औरों के पथ में, लक्ष्य नहीं जिसको पहचानूं ॥
ढूंढ़ रहा तुझको प्रतिमा में, जो स्वयं बनाई है मैंने।
भोग लगाता उसे रिझाऊं नहलाया फिर उसको मैंने ॥
खोया हूं मिथ्या विचार में ॥

भूल गया मैं कैसा भोला जग को सारे वही खिलाता।
वह नहलाता हमें निरन्तर भर भर पानी कितना लगता ॥
सागर में भी नदी धार में ॥

भूल गया मैं उसका मुख तो भूखे प्यासे का ही मुख है।
उसके गुण अपना लूं बस यह उसकी शोभा सच्चा सुख है ॥
वही तो झंकृत तार-तार में ॥

ईश्वर मुझको मार्ग दिखाओ, एक किरण दो निज प्रकाश दो।
सत्य मार्ग का पथिक बना मैं पा लूं तुझको, वह विकास दो ॥
डगमग नौका मध्यधार में ॥

डूबा हूं मैं अन्धकार में, कृपा करो प्रभु बुद्धि मुझे दो।
वेद मार्ग पर चलूं निरन्तर, ऐसी ही प्रभु शुद्धि मुझे दो ॥
भ्रम मिट जाये एक बार में ॥

सूर्योदय हो यहां ज्ञान का, मिथ्या आडम्बर मिट जाये।
ज्योति जगा दो मन अम्बर में, अन्धेरा सभी सिमट जाये ॥
हो प्रभात फिर द्वार-द्वार में ॥

आचार्य संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

गणित के विकास की यात्रा कथा

❑ प्रेमा राय

गणित को आमतौर पर कठिन विषय समझा जाता है। लेकिन गणितज्ञों के लिए इससे मनोरंजक और कोई चीज हो ही नहीं सकती। आधुनिक विज्ञान की नींव ही गणित पर खड़ी है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में प्राचीन काल से ही गणित का स्थान बहुत ऊंचा रहा है। इसकी एक रोचक जानकारी प्रस्तुत है।

आधुनिक विज्ञान की आधारशिला गणित पर ही आधारित है। भारत में प्राचीनकाल से ही गणित का स्थान बहुत ऊंचा रहा है। भारत में अंकगणित, बीजगणित व ज्यामित की शुरूआत बहुत ही पुराने जमाने की बात है। यहां पर प्राचीन काल से ही गणित की शब्दावली बहुत ही उन्नत रही है। वेदों के जमाने में भी आज की तरह ही एक से ९ तक की संख्याओं का तरीका भारत में था। किन्तु १०-२० लिखने के लिए पहले १, २ आदि के लिए शून्य लगाकर १०, २० आदि दहाइयों के निर्दिष्ट चिह्न लिखते थे जैसे १५ को १०+५।

शुरूआत में एक, द्वि आदि जैसे शब्दों की रचना हुई, फिर गणना करने का कार्य उंगलियों से शुरू हुआ। बाद में दूसरों को समझाने के लिए इन दो उंगलियों के स्थान पर एक दो के निशान बनाए गए और इन्हें अंकों का नाम दिया गया। अंक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के आंक (चिह्न करना) धातु से हुई है। अंकों की गणना करने के कारण इसका नाम अंकगणित पड़ा। यह धीरे-धीरे विकसित होकर मानसिक हिसाब में परिवर्तित होता गया। इसके बाद लकड़ी आदि की पट्टी पर हिसाब लगाने का युग आया और इसी कारण अंकगणित का नाम पाटी गणित भी पड़ा।

वेदों में गणित का उपयोग एक साधारण बात है। ऋग्वेद में एक से लेकर अयुत (१००००) तक के गणना सूचक शब्दों का निर्देश है। यजुर्वेद में एक यंत्र (१७।२) है जिसमें हम गिनती को बहुत आगे तक ले जा सकते हैं। इय यंत्र के अनुसार खरबों तक की संख्या को हम लिख सकते हैं जैसे एक दश, शत, सहस्त्र, अयुत ($१०^{४}$), नियुत ($१०^{५}$), प्रयुत ($१०^{६}$), अर्बुद ($१०^{८}$), न्युर्बुद ($१०^{११}$) व परार्द्ध ($१०^{१२}$)। प्रयुत व परार्द्ध आज के अंग्रेजी के मिलियन व बिलियन हैं। बौद्धों ने गणना और संख्यान को अत्यधिक प्रधानता दी। गौतम बुद्ध ने स्वयं अपने बचपन में गणना सीखी थी। ईसा के करीब १०० वर्ष पूर्व ललित विस्तर नामक एक बौद्ध ग्रंथ लिखा गया था। इसमें दो गणितज्ञ अर्जुन और बोधित्सव के बीच संवाद दिया हुआ है। इसमें शत गुणोत्तर पद्धति पर कोटि के बाद की गणना १० तक दी हुई है। जैन समुदाय ने भी गणित के विकास को काफी महत्त्व दिया। भगवती सूत्र ९० पंच भाग और उत्तराध्यन सूत्र (२५, ५, ७, ८, ३८) में लिखा है कि संख्यान (अंकगणित) और ज्योतिष का ज्ञान आवश्यक है।

रेखागणित की तो वैदिक काल में काफी उन्नत हो गयी थी। यज्ञ में वेदियों व कुण्ड बनाने में इसकी आवश्यकता पड़ती थी। वैसे भारत में रेखागणित की परम्परा ब्राह्मण और शल्वसूत्रों के समय से आरम्भ हुई। गणितज्ञ थीबो के अनुसार जो प्रमेय आज पायथागोरस के नाम पर प्रचलित है, वह प्राचीन भारतीय आचार्यों को मालूम था। ब्राह्मण ग्रंथ, बोधायन, तैतरीय संहिता और आपस्थम्व शल्यसूत्र भारत के जो प्राचीन ग्रंथ हैं, उनमें वर्ग, आयत, आदि के नियम और उनके बराबर के क्षेत्रफल वाले अन्य क्षेत्र खींचने के विधान हैं। शल्व ग्रंथों में वर्गमूल व प्राकृत साहित्य में करणी शब्द का उपयोग किया गया है। ईसा से लगभग ३०० वर्ष पूर्व समीकरण धातु के हिसाब से वर्गीकृत होते थे और इन्हें यावत-तावद् वर्गधन और वर्ग कहा जाता था।

रेखागणित सम्बन्धी भारतीय साहित्य में शल्वसूत्र बहुत पुराना (करीब-करीब ४००-२०० ई० पू०) है। यह शल्वसूत्र स्रोत सूत्रों के अंग हैं और उनमें प्रतिपादित रेखागणित ब्राह्मण का विशेष अंग था। इसमें वर्ग, चतुर्भुज भुजाओं के साथ कर्ण का सम्बन्ध, समान क्षेत्रफल वाले वर्ग के क्षेत्रफल के बराबर का वर्ग बनाने और किसी वर्ग के क्षेत्र के बराबर का वृत्त बनाने सम्बन्धी सूत्र भी इसमें दिए गए हैं।

सन् १८८१ में डॉ० हार्नल ने उत्तरी पूर्वी भारत में तीसरी या चौथी सदी में लिखित ७० भोजपत्रों पर शारदा लिपि में लिखित एक हस्तलिपि प्राप्त की। डॉ हार्नल ने यह

हस्तलिपि सन् १९०२ में आक्सफोर्ड के बांडलियन पुस्तकालय को भेंट में दी। इस हस्तिलिपि में शून्य का आविष्कार और इसकी सहायता से दस, शत और सहस्त्र आदि को व्यक्त करना संसार की सबसे बड़ी खोजों में से एक है।

गणित शास्त्र के आचार्यो में सर्वप्रमुख प्रथम आर्यभट्ट थे। इन्होंने एक ग्रंथ 'आर्यभट्ट' लिखा। आर्यभट्टीय में कुल १२१ श्लोक हैं जो चार खंडों में बंटे हैं— गणितपाद, गणितवाद, काल-क्रिया पाद और भूगोलपाद।

इसमें पाई का मूल्य ३.१४१६ का भी उल्लेख है। वर्ग, क्षेत्रफल, घन, घनपाल, वर्गमूल, त्रिभुज का क्षेत्रफल, त्रिभुजाकार शंकु का घनफल, विषय चतुर्भुज के कर्ण से संपति मिलन बिन्दु से भुजा की दूर और क्षेत्रफल तथा सब प्रकार के मध्यम लम्बाई, चौड़ाई जानकर क्षेत्रफल जानने केलिए साधारण नियम भी इसमें हैं।

आर्यभट्ट के अलावा भास्कर प्रथम (५२२) व उसके बाद ब्रह्मगुप्त (६२८ ई०) ने भारत में गणित को काफी आगे पहुंचाया। इसकेबाद कई प्रमुख गणितज्ञ हुए जिन्होंने इस काम को आगे बढ़ाया। इस कड़ी के अन्तिम गणितज्ञ थे, भास्कर द्वितीय (१११४ ई०)। इनकी प्रमुख पुस्तक लीलावती है। ऐसा माना जाता है कि लीलावती इनकी पुत्री थी। इस पुस्तक को कम उम्र के लोग भी समझ सकते हैं। इसका उपयोग अभी भी कई संस्कृत स्कूलों में किया जाता है। (सम्प्रेषण)

(पृष्ठ ३० का शेष)

भारत की आशा

हो सकता है अभी कुछ अस्थायी रूप से निराशाजनक स्थिति हो लेकिन मैं हमेशा भारत के बारे में आशावादी रहा हूं क्योंकि भारत में कई सकारात्मक पहलू हैं जो सारे विश्व में नहीं हैं। भारत की सबसे बड़ी शक्ति है वहां की संस्कृति। जब भी कोई निराशा की स्थिति निर्माण होती है तो कोई न कोई केन्द्र हमारे समाने आ ही जाता है जैसा भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है **'यदा यदा हि धर्मस्य...'** और आधुनिक काल में संघ शक्ति खड़ी हुई है। रा० स्व० संघ आज विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। भारत सब कष्टों से, सब मुसीबतों से उभरेगा और इस समय अमरीका को यदि राजनीतिक स्तर पर कोई चुनौती दे सकता है तो वह भारत ही है।

भारत की प्रतिष्ठा भारत के बाहर भी है। जो लोग भारत की तरफ देखते हैं वह इसलिए नहीं कि वे भारत के आधुनिक राजनेताओं से प्रभावित हैं, बल्कि भारत की प्राचीन संस्कृति में उनकी निष्ठा है उसमें उनका विश्वास है, इस कारण वह भारत की ओर देखते हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि हमने उनकी आशाओं को पूरा नहीं किया और भारत में पश्चिम के अंधानुकरण की लहर सी चल रही है।

अमरीका में संघ के तीन-चार स्वयंसेवक हैं जो काफी अच्छी स्थिति में हैं। जैसे मैं संघ का स्वयंसेवक हूं। मैंने तृतीय वर्ष (संघ का प्रशिक्षण) १९६२ में किया था। श्री नंदा हैं, श्री महेश मेहता हैं। अमरीका में दूरसंचार और उच्च तकनीकी क्षेत्र में इस समय भारतीय मूल के लोग अग्रणी हैं। जैसे 'टाक टेली कम्युनिकेशन' है, ये राजस्थान के लोगों का प्रतिष्ठान है। 'सिलीकान वैली' तो भारतीयों से भरा पड़ा है। रवि टंडन हैं जिनका टंडन कार्पोरेशन है जो हाट केस बनाने वाली सबसे बड़ी कम्पनी है। साफ्टवेयर एवं हार्डवेयर के क्षेत्र में भी भारतीय आगे हैं। साफ्टवेयर का जो विकास है वो बंगलौर में सबसे अधिक है। इस समय भारत साफ्टवेयर का सबसे बड़ा निर्यातक है। और ये काफी बढ़ेगा, अमरीका में कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारतीयों के साथ संयुक्त उपक्रम खड़े कर रही हैं। अधिक से अधिक साफ्टवेयर भारत में बनते हैं। हार्डवेयर में भी भारत ने काफी प्रगति की है। सैम पित्रौदा ने एक कम्पनी बनाई है 'टेली कम्युनिकेशन इंवेस्टमैंट' जो २ करोड़ डालर की वित्त कम्पनी है। यह भिन्न-भिन्न देशों में दूरसंचार क्षेत्र में पूंजी निवेश करती है।

बाकी देशों में भी भारतीय काफी तेजी से अपना व्यापार बढ़ा रहे हैं। जैसे वस्त्र उद्योग में भारतीय सबसे आगे हैं, इसके साथ-साथ उच्च तकनीकी में भी वे तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। ऊर्जा के क्षेत्र में भी कई लोग आगे आ रहे हैं। धीरे-धीरे हमारा प्रभुत्व इस क्षेत्र में बढ़ेगा ऐसा लगता है और हम सर्वश्रेष्ठ होने के काफी निकट आ सकते हैं।

सारे विश्व में कोई ऐसी तकनीकी संस्था नहीं है, चाहे किसी भी देश में चले जाइये— छोटे से छोटे देश में भी, जहां कम से कम एक भारतीय प्रोफेसर या वैज्ञानिक न हो। चीन में चले जाइये वहां भी भारतीय वैज्ञानिक हैं। भारत में अगर सही लोगों के हाथ में देश का नेतृत्व आ गया और एकदिशा तथा योजनाबद्ध ढंग से हम चलें तो हमारा मुकाबला करना किसी के लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा। जितनी जल्दी हमारे राजनीतिक नेता जागेंगे उतनी जल्दी हम बढ़ेंगे। ❑

हिन्दू राष्ट्र नेपाल में आर्य समाज की स्थिति –३

❑ भवानीलाल भारतीय

नेपाल में आर्य समाज की विचारधारा के प्रवेश का श्रेय पं० माधवराज जोशी (१९१६ वि. २००० वि.) को है। इन्हें स्वामी दयानन्द से भेंट करने का अवसर उस समय मिला था जब उनकी आयु सत्रह वर्ष की थी। ऋषि उन दिनों काशी में थे। जोशी जी स्वामी जी के विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्हें स्वीकार किया। १८९५ में उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और वे सर्वात्मना आर्यसमाजी बन गये। पं० माधवराज ने सौ वर्ष पूर्व नेपाल के पोखरा नगर में आर्य समाज की स्थापना की। मेरठ के प्रसिद्ध विद्वान पं० तुलसीराम स्वामी से उन्होंने स्वामी जी के समस्त ग्रंथ मंगा कर उनका गम्भीर अनुशीलन किया। उन्होंने काठमाण्डू के समीपवर्ती पाटन (ललितपुर) में भी आर्य समाज स्थापित किया। नेपाल में आर्य विचारों का यह बीज वपन ही था।

१९५८ विक्रमी में जोशीजी ने नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में भी आर्य समाज की स्थापना कर दी तथा उस देश में प्रचलित वाममार्ग, तंत्र-मंत्र, पशुबलि, मूर्तिपूजा आदि का घोर खण्डन किया। १९६९ वि० में उनकी माता का देहान्त हो गया तो उन्होंने उसकी वैदिक विधि से अन्त्येष्टि की। इस पर पौराणिक ब्राह्मणों ने प्रचार किया कि अनेक श्मशान में होम करने वाला माधवराज नास्तिक है। नेपाली ब्राह्मणों में मांसाहार का प्रचलन है।

१९६२ वि. में पं० माधवराज जोशी का नेपाल के पौराणिक पंडितों से मृतक श्राद्ध की वैधता पर शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ के दूसरे दिन नेपाल नरेश पृथ्वी वीर विक्रम शाह, प्रधानमंत्री चन्द्र शमशेर राणा तथा प्रधान सेनापति भीम शमशेर राणा भी उपस्थित थे। उन दिनों राणा परिवार के पुत्रों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिये पंजाब के एक आर्य समाजी मास्टर गुरुदयाल बी. ए. भी काठमाण्डू आये हुए थे। वे भी आर्य समाजी थे और शास्त्रार्थ में जोशी की सहायता के लिये शास्त्रार्थ स्थल (यह धर्म विचार राजदरबार में ही हुआ था) पर उपस्थित थे। मृतक श्राद्ध के औचित्य को नेपाल के पौराणिक पंडित सिद्ध नहीं कर सके। मास्टर गुरुदयाल ने वेद मंत्रों को उद्धृत कर परमात्मा के निराकारत्व का प्रतिपादन किया और जोश भरे शब्दों में कहा कि सर्वव्यापक परमात्मा की धातु, पत्थर, काष्ठ, मिट्टी आदि की मूर्ति बनाना और जड़ वस्तु में ईश्वर भाव रख कर उसको पूजना सर्वथा अवैदिक है। इस पर राजगुरु प्रयागराज का क्रोध भड़क उठा और उसने प्रधानमंत्री से कहा कि पशुपतिनाथ महादेव को पत्थर कहने वाले इन दुष्टों को पीटने की आज्ञा यदि आप नहीं देंगे तो हम पर्वतीय ब्राह्मण नेपाल छोड़ कर चले जायेंगे। इस पर चन्द्र शमशेर ने संकेत कर आर्यों को पीटने का आदेश दे दिया जिसके फलस्वरूप उपस्थित पौराणिकों ने जोशी जी तथा मास्टर गुरुदयाल को पीट-पीट कर अधमरा कर दिया।

मूर्ति पूजा का विरोध करने वाले माधवराज जोशी को प्रधानमंत्री के आदेश से काल कोठरी में बंद कर दिया गया और पंजाबी अध्यापक गुरुदयाल को नेपाल छोड़ कर चले जाने के लिये कहा गया। इसलिये मास्टर गुरुदयाल को नेपाल छोड़ने का आदेश तो मिला किन्तु वे सुरक्षित स्वदेश पहुंच भी पाये या नहीं, इसमें संदेह है। जैसा कि माधवराज जोशी के जीवनचरित में उनके शहीद पुत्र पं० शुक्रराज शास्त्री ने लिखा है कि इस घटना के बाद मास्टर जी का कोई वृतान्त उपलब्ध नहीं हुआ और न उनके नगर लाहौर से ही उनका कोई समाचार मिला। इससे अनुमान होता है कि राणा शाही ने उन्हें नेपाल की सीमा पार करने का मौका ही नहीं दिया और वे मार्ग में ही समाप्त कर दिये गये। इस अप्रख्यात आर्य शहीद को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए नेपाल के ही एक अन्य आर्य शहीद पं० शुक्रराज शास्त्री ने लिखा था– "हे पंजाब, तुम वीरप्रसू हो। श्रीमान मास्टर गुरुदयाल बी. ए. जैसी सन्तानों को जब तक तुम उत्पन्न करोगे तब तक तुम्हारे नाम को सुनकर राणा जैसे घमंडी, क्रूर और स्वेच्छाचारी शासकों के भी छक्के छूटते रहेंगे।" आज कितने आर्यसमाजी हैं जो आर्य समाज की विचारधारा के लिये स्वयं की आहुति देने वाले इस अज्ञात मास्टर के नाम से भी परिचित हैं। किन्तु ऐसे अज्ञात शहीदों के बलिदान ने ही दयानन्द की विचारधारा को ओज और तेज प्रदान किया है। वे हमारे प्रणम्य है, वन्दनीय हैं उनकी स्तुति में जितने काव्य लिखे जायें कम हैं।

पं० माधवराज जोशी की विपत्ति का भी कहां अन्त हुआ? वे दो वर्ष तक जेल की कालकोठरी में बंद रहे। बाद में उन्हें देश निकाला दे दिया गया और जाति वालों ने उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया। उनके कारागार में रहने की अवधि में जोशी परिवार को घोर विपत्तियों का सामना करना पड़ा। बच्चों की पढ़ाई बंद हो गई। परिवार के लोगों के भूखों मरने तक की नौबत आ गई। जेल से छूटने और देश से निर्वासित होकर जोशी माधवराज भारत आये और अनेक नगरों में रह कर तत्कालीन आर्य विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त किया। अपने पुत्रों शुक्रराज और वाकपतिराज को गुरुकुल सिकन्दराबाद में प्रविष्ट कराया और पुत्री चन्द्रकान्ता को आर्य कन्या पाठशाला मेरठ में शिक्षा दिलाई। *(क्रमशः)*

स्वास्थ्य-चर्चा

"लौंग एक गुण अनेक"

आयुर्वेदिक चिकित्साशास्त्र में लौंग के गुणों का विस्तृत वर्णन किया गया है। उसके अनुसार लौंग दीपन, पाचन, शीतल, कफ, पित्त नाशक होती है। लौंग का प्रभाव पाचन क्रिया पर सबसे अधिक पड़ता है। यदि भोजन में किसी सब्जी में मसाले के रूप में लौंग का उपयोग किया जाय तो भोजन जल्दी हजम हो जाता है। भोजन में भीनी-भीनी महक आती रहती है। और स्वादिष्ट भी लगता है।

लौंग के औषध के रूप में निम्न उपभोग हैं :-

गर्भावस्था के दौरान प्रायः महिलाओं को उल्टी होने लगती है। ऐसे समय में दो-तीन लौंग पीसकर मिश्री मिलाकर खाने से बहुत लाभ मिलता है।

लौंग चबाने से दांतों के दर्द को आराम मिलता है। लौंग और मिश्री को बराबर मात्रा में पीसकर मसूढ़ों और दांतों पर मलने से दर्द दूर हो जाता है।

छोटी उम्र में बच्चों को मिट्टी खाने की आदत पड़ जाती है तो उन्हें एक दो लौंग घिसकर या उबालकर मिश्री मिलाकर पिलाएं।

लौंग को चबाने से मुंह की बदबू दूर हो जाती है और रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

लौंग को भूनकर पीस लें और शहद के साथ मिलाकर खाने से गले की खराश और खांसी में बहुत लाभ मिलता है।

गठिया के दर्द में लौंग के तेल को अन्य तेल के साथ मिलाकर मालिश करने से दर्द ठीक हो जाता है।

यदि शरीर के किसी भाग पर कोई जहरीला कीड़ा, ततैया, कीट आदि काट खाए तो कटे हुए स्थान पर लौंग को घिसकर लगा दें।

अनिल कुमार विश्वकर्मा, बुढ़ाना (मु० नगर) उ० प्र०

इन्हें भी आजमाइए

❑ श्रीमती जसबीर कौर

- ☆ दांत में दर्द होने पर दांत के नीचे लौंग रखने से दांत दर्द में राहत मिलती है।
- ☆ दांत दर्द में थोड़ी सी रूई में नमक रखकर देशी घी में डुबो कर दांत के नीचे रखकर दवाने से दांत में जमा पानी निकल जाने से दांत दर्द में राहत मिलती है।
- ☆ दांतों में दर्द होने पर थोड़े सरसों के तेल में थोड़ा हल्दी, नमक मिलाकर पेस्ट करते रहने से दांतों के कीड़े मर जाते हैं और हिलते हुए दांत को रोकने की क्षमता आ जाती है।
- ☆ सुबह उठते ही २ गिलास पानी पीते रहने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।
- ☆ सुबह उठते ही दो, तीन बार दिन में पानी के छींटे आंखों में मारने से आंखों की रोशनी बढ़ती है।
- ☆ आटे को फ्रीजर में रख देने से आटा दो-तीन दिनों तक ताजा बना रहता है।
- ☆ आटे के टिन, नमकीन, चीनी या किसी खाने की वस्तु में दो तीन लौंग रख देने से चीटियां भागती हुई नजर आएगी।
- ☆ दरवाजे में काले चींटों या तिलचट्टों ने बिल बना लिया हो तो वहां कुछ लौंग रख देने से चीटें भाग जाएंगे।
- ☆ फर्श पर मिट्टी के तेल का पौंछा पानी में मिलाकर मारने से मच्छर, मक्खी भाग जाते हैं और धीरे-धीरे फर्श में चमक आ जाती है।
- ☆ स्टील की बाल्टी या पतीली में पानी के दाग लग जाने पर बालू से मांजने से दाब भी दूर हो जाते हैं और बर्तन में चमक आ जाती है।
- ☆ तांबे में सरसों का तेल लगाकर रख देने से जंग नहीं लगता।
- ☆ प्लासिटक की बाल्टी या किसी बर्तन में मिट्टी का तेल लगाकर थोड़ी देर धूप में रख देने से उसके थोड़ी देर बाद साबुन से धो देने पर बर्तन नया सा लगने लगता है।
- ☆ दरवाजों के कब्जों या हैन्डिलों में सरसों का तेल लगा देने से जंग नहीं लगता।

रामनारायण काबरा एक स्मृति

आर्य समाज के ख्याति नाम श्रेष्ठी सेठ श्री रामनारायण काबरा तप, त्याग, संयम एवं कठोर परिश्रम से पुष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। उनका जन्म "कुचामन" (राजस्थान) में हुआ था। मनुष्य समाज में प्रायः बहुलता उन व्यक्तियों की होती है जो अपनी तथा अपने परिवार की उन्नति एवं उत्कर्ष तक सीमित रहते हैं। "परोपकाराय सतां विभूतयः" दूसरों का हित एवं परोपकार की भावना से जीवन जीने वाले महानुभाव विरले ही होते हैं। वे लोग स्वत्व का ध्यान न रखकर समाज के हित में अपना हित समझते हैं। ऐसे ही उंगलियों पर गिनेचुने लोगों में से एक थे सेठ श्री रामनारायण कावरा, जो ७५ वर्ष की अवस्था में आसोज कृष्ण तृतीया संवत् २०५४ को रात्रि में ११.३० बजे अपने निवास ३५, नेहरू पार्क, जोधपुर में शान्त वातावरण में "ओ३म्" प्रणव का स्मरण करते हुए उसी कृपालु "ओ३म्" भगवान की गोद में चले गए।

जैसे ही यह दुःखद समाचार नगरजनों, परिवारजनों व कुटम्बियों को मालूम हुआ, वैसे ही अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि देने के लिए सब लोग इकट्ठे होने लगे। शोकाकुल वातावरण में उपस्थित सभी लोग इस महान आत्मा की यशोगाथा गा रहे थे। कोई उन्हें दानवीर बतलाता तो कोई दयालु, कोई धार्मिक वताता तो कोई सच्चा प्रभुभक्त। सभी उनके न रहने से दुःख अनुभव करते थे पर परमेश्वर की व्यवस्था के सामने अपने को लाचार समझ कर ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते थे। दूसरे दिन सवेरे उनके निवास स्थान से श्मशान यात्रा निकाली गई, जिसमें अनेक समाजों के धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जन सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री मधुसूदनजी काबरा ने वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ अग्नि प्रज्वलित की तथा घी, चन्दन, कपूर, सुगन्धित सामग्री, नारियल आदि पर्याप्त मात्रा में लगाकर दाह संस्कार सम्पन्न किया। कई उपस्थित महानुभावों ने इस तरह की वैदिक अन्त्येष्ठि पहली वार ही देखी और कहने लगे कि लाखों में एकाध पुण्यात्मा का ही ऐसा संस्कार होता है।

आप अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी को छोड़ गये हैं जो धार्मिक व सामाजिक कार्यों को आपके पीछे छाया की तरह रह कर सुसम्पन्न करती रही हैं। छः सन्तान श्री मधुसूदन जी, श्री वेणीगोपाल जी तथा श्री श्रीनिवासजी व तीन पुत्रियों राजकुमारीजी, मंजूश्रीजी एवं कीर्तिजी। सुयोग्य, सुसंस्कृत एवं उदार विचारों के सन्तान उनके पूर्णतः अनुगामी हैं। पोते, पातियां, दोहते, दोहतीयों का पूरा हराभरा परिवार वे छोड़ गए हैं। सेठ श्री रामनारायणजी काबरा स्वभाव से मधुर, विनम्र, उदार चरित्र व धार्मिक विचारों के धनी थे। विपत्तियों में धीर, तनाव की स्थिति में सागर की तरह गम्भीर एवं वाणी के महान् संयमी थे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को परमपिता परमात्मा सद्गति प्रदान करे तथा परिवार जनों को इस असहनीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

रामेश्वरलाल लाहोटी
न्यासी, आर्य समाज चेरिटेबल ट्रस्ट, सुजानगढ़

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

१. 'जनज्ञान' के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जनज्ञान' के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।) नई सदस्य संख्या भी नोट करें।
२. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
३. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।
४. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य सात रुपये है। वार्षिक शुल्क सत्तर रुपये है। आजीवन शुल्क ५०१ रुपये है।
५. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्ट कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।
६. आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी०पी० द्वारा भेजा जाता है।
७. वी०पी० में अब चौदह रुपये डाक व्यय अतिरिक्त लगता है। जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है। अतः कृपया सूचना मिलते ही तुरन्त मनीआर्डर भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

—सम्पादक

महिमामंडित होता दहेज!!

□ मुकुन्द मणि मिश्र

दिखावा और फैशन की प्रवृत्ति ने सामाजिक मर्यादा की हर लकीर को लांघना शुरू किया है। जो नैतिकता और कानून की दुहाई देते नहीं थकते थे वे खुद इसका शिकार हो चले हैं। कलतक दहेज अभिशाप था। इस पर कानून बने। भाषण हुए। अब तक कितने लेख, उपन्यास, कथा-कहानी, फिल्म इस विषय पर आये। मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। भौतिक आकर्षण से मानवता हार रही है। आदमी का मन पत्थर हो चला है। दहेज फैशन बन गया है। देखते-देखते यह सामाजिक अभिशाप महिमामंडित होने लगा है। आज सहज स्वीकार्य है। हालांकि इसके दुःखद परिणाम की व्यापकता कम नहीं है। इसके साथ नयी आयातित कुरीतियां जुड़ती जा रही हैं।

सामाजिक अवधारणा में दहेज बेटी की विदाई के साथ मिला उपहार है जो यथासामर्थ्य देय था। बेटी के साथ देय उपहारों के पीछे नये घर में मान के साथ वरकुल के मंगल कामना की दृष्टि होती है। अन्न, गाय, वस्त्र, फल, मिष्ठान्न के साथ नगदी, आभूषण सुखद जीवन यात्रा के साधन हैं, शुभ हैं। अक्षत (अन्न) गाय (दूध-दही) स्वर्ण या नगदी (लक्ष्मी) के बिना परिवार का निर्वाह सम्भव नहीं।

दहेज है क्या? दहेज वास्तव में 'अक्षत' (चावल) है जो तिलक में कन्या पक्ष द्वारा हल्दी से रंगकर पीतल (द्रव्य) के परात में वस्त्र, फल, मिठाई के साथ आता है। विवाह में अक्षत का ही महत्त्व था। लोक मान्यता यथावत है। बुजुर्ग आज भी दहेज की मोटी रकम की तुलना में 'अक्षत' को महत्त्व देते हैं। 'अक्षत' सौभाग्य परिवर्तन की कसौटी है। वर कुल में अचानक श्रीवृद्धि होना या एकाएक आये झंझावात का सम्बन्ध अक्षत से है।

जहां सुख-शान्ति, उत्कर्ष से बहू को वाहवाही मिलती है, मान बढ़ता है वहीं बिन बुलाये विपत्तियों का सारा ठिकरा भी बहू के माथे फूटता है। इसके बाद तानों के साथ प्रताड़ना का दौर शुरू होता है। साथ ही इस प्रताड़ना से जुड़ा होता है दहेज में इच्छित वस्तुओं का अभाव। तब साथ आये अन्यान्य सौगात हो या बहू की शिक्षा, शील, सौन्दर्य वर पक्ष उस पर रहम नहीं करता। व्यंग्य वाणों की बौछार से टूट कर बहुएं बहुधा मिट्टी के तेल का सहारा लेती हैं। जो स्वयं नहीं लेतीं उन्हें आग की लपटों को भेंट पति, सास, ननदें चढ़ा देती हैं। सास, ननद भी स्वयं स्त्री होती हैं। यह कैसी विडम्बना है?

लोकधारणा का आधार सुनी-सुनायी बातें होती हैं। जिसे कोरा अंधविश्वास ही कहा जायेगा। 'अक्षत' को आधार बनाकर कन्यापक्ष पर सारा दोष थोपना अमानवीय व्यवहार है। अगर ऐसा ही है तो इसमें अपने भाग्य या कर्मफल का हाथ नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं जो कन्या अपने कुल में सुख पाती रही पतिकुल में दुःख भोगना पड़े तो उसके लिए तो यह कुल ही अशुभ माना जायेगा। सोचने का ढंग ठीक हो तो सब ईश्वरीय इच्छा ही प्रतीत होगी।

विवाह दो आत्माओं का मिलन है। विवाह के साथ हसीन कल्पनाओं की चाहे जितनी उड़ाने जुड़ी हों, जमीनी सच्चाई तो यही है कि लड़की से ही कुल चलता है। तभी जांच-परखकर सम्बन्ध बनते थे। इसमें पैसा गौण था। आज पैसा सब कुछ है। धनलोभियों के लिए न संस्कार का महत्त्व है न सौन्दर्य का। जबकि सौन्दर्य, शिक्षा प्रमुख कारक है। लड़का लड़की दोनों के सपने होते हैं। बेमेल विवाह से कितने घर बर्बाद हुए हैं। रूप का जादू हर युग में चला है। संतो-महंथों के भी मन भटके हैं। तो आज फिल्मी ग्लैमर के युग में कहना ही क्या है?

दहेज से लड़की की मान मर्यादा में फर्क पड़ता है। आज लड़कियां मुखर हैं तथा अपनी पसन्द पिता से जता रही हैं। भ्रूण परीक्षक पिताओं को छोड़कर देखा जाय तो शिक्षित परिवारों में लड़की भी शिक्षा दीक्षा, प्यार सम्मान के अवसर पा रही है। यह शुभ लक्षण है। तभी बेटी को अच्छा घर-वर मिले इस हेतु मोटी रकम के साथ भारी भेंट देने में हिचक नहीं हो रही है। साथ ही दहेज सामाजिक हैसियत की कसौटी बनता जा रहा है। हम किसी से कम नहीं में अनेक फिजुलखर्ची हो रहे हैं। वरपक्ष का खर्च दहेज में प्राप्त राशि से होता है। दूसरे का पैसा खर्चने में क्या सोचना है। जबकि कन्यापक्ष खुद खर्चीला दीखना चाहता है। इसका असर समाज पर पड़ता है तथा दहेज का आकर्षण बढ़ता जाता है। फलां के बेटे को इतना दहेज मिला, सामान मिला, फलाने के घर ऐसी बारात आई यह उदाहरण बन जाता है। जिसकी टीस, कसक मनोवृत्ति को प्रभावित करती है तथा देखादेखी दहेज की प्रेरणा बनता है। □

प्रेरक प्रसंग

सिख भाई द्वारा आर्य साहित्य का अनुशीलन

❑ मनमोहन कुमार आर्य

२७ फरवरी, १९९७ को उदयपुर के नवलखा महल में प्रमुख आर्य संन्यासी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का ३१ लाख रुपये की धनराशि भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर कैप्टन देवरत्न आर्य की प्रेरणा से इन पंक्तियों के लेखक ने स्वामी जी के जीवन पर एकाधिक लेख लिखे। स्वामी जी पर उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करते समय यह तथ्य सामने आया कि स्वतंत्रता के पश्चात पहले गणतन्त्र दिवस पर सार्वदेशिक सभा के निर्णय के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास के आधार पर राजनीति विषय पर एक ग्रंथ हिन्दी एवं अंग्रेजी में तैयार कर माननीय राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी को, आर्य समाज, दीवान हाल, दिल्ली के सामने उस समय भेंट किया जाये जब उनकी शोभायात्रा वहां से गुजरे। गणतन्त्र दिवस में मात्र २८ दिन शेष थे। यह कार्य सभा ने पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित (वर्तमान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती) जी को सौंपा जिसे स्वामी जी ने मात्र २० से भी कम दिनों में पूरा कर दिया। दो भाषाओं में पुस्तक लिखना, उसको कम्पोज कराना, प्रूफ पढ़ना, छपना एवं जिल्द आदि बनाकर मात्र २० दिनों में तैयार होना अपने आप में समय की साहित्यिक जगत् की आश्चर्यजनक एवं रोमांचकारी घटना है। हमें इस पुस्तक को देखने व पढ़ने की इच्छा हुई परन्तु यह उपलब्ध न हो सकी। कादियां में पं० लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह में जाने का अवसर मिला। वहां पुस्तक विक्रेताओं से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि किसी एक के पास यह पुस्तक उपलब्ध है अतः तत्काल इसे ले लिया।

कादियां से अपने मित्रों सहित हम अमृतसर आये। सायं वहां देहरादून के लिए जाने वाली एक रेलगाड़ी की प्रतीक्षा में चाय के स्टाल पर खड़े हम दो मित्र इस पुस्तक के बारे में चर्चा कर रहे थे। वहीं पास में एक वृद्ध सिख बन्धु खड़े हमारी बातें सुन रहे थे। उस समय अपने मित्र को हमने इस पुस्तक की उपर्युक्त बातें कहीं और यह भी बताया कि इस पुस्तक की प्रतियां उस समय प्रत्येक सांसद को भी भेंट स्वरूप भेजी गई थी। पास में खड़े सिख बन्धु ने हमसे वह पुस्तक दिखाने के लिए कहा। उन्होंने पुस्तक देखकर उसे मूल्य लेकर देने के लिए कहा। हमारे द्वारा उन्हें यह पुस्तक भेंट स्वरूप देने के प्रस्ताव को उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस विषय में काफी देर तक बातचीत होती रही और अन्ततः उन्होंने हमें मूल्य दे ही दिया। यह व्यक्ति सरदार जसवन्त सिंह थे। आप पंजाब के सरकारी विभाग में कार्यरत हैं। इससे पूर्व आप अमृतसर एवं गुरदासपुर में भी सेवा कर चुके हैं। आपने बताया कि अच्छी पुस्तकें पढ़ना उनका शौक है। स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व से आप भली-भांति परिचित हैं। स्वामी जी को आपने आदरपूर्वक स्मरण किया। विदा होने से पूर्व आपने उनके द्वारा हमें प्रेषित किए जाने वाले पत्र का उत्तर देने का आग्रह किया।

इस घटना से हमें लगा कि हमारे साहित्य में भी आकर्षण है। अन्य मतावलम्बी महर्षि दयानन्द के बारे में जानकारी रखते हैं। प्रचार के अच्छे तरीके अपना कर एवं अपना व्यवहार आदर्श बनाकर हम लोगों को प्रभावित कर सकते हैं।

१९६ ब्लाक दो, चुक्कूवाला, देहरदून-२४९००१

श्री रामेश्वर 'अशान्त' को महादेवी पुरस्कार

न्यूयार्क : राष्ट्र भाषा परिषद् की मुम्बई शाखा ने विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क के संस्थापक अध्यक्ष श्री रामेश्वर 'अशान्त' को महादेवी पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की है। यह विशिष्ट पुरस्कार हिन्दी के प्रचार प्रसार और प्रवासी हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने वाले कवियों और साहित्यकारों को प्रदान किया जाता है। श्री अशान्त विगत दो दशकों से अमेरिका में हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार में संलग्न हैं। विश्व हिन्दी समिति न्यूयार्क के वे संस्थापक अध्यक्ष हैं। समिति ने न्यूयार्क की प्रथम हिन्दी पत्रिका 'सौरभ' का प्रकाशन किया। श्री अशान्त को यह पुरस्कार २८ फरवरी १९९८ को मुम्बई में प्रदान किया जाएगा। हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि तथा 'समिति' के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० विजय कुमार मेहता के दूसरे काव्य संग्रह "पुष्पांजलि" का विमोचन १७ नवम्बर को सायंकाल पांच बजे विट्ठल भाई पटेल भवन, नई दिल्ली में पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी करेंगे। मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री वसन्त साठे होंगे।

पक्की दोस्ती

❑ विजयकांत मिश्रा

अर्जित और निशान्त नवीं कक्षा के छात्र थे। दोनों में बहुत गहरी दोस्ती थी। वे दोनों साथ-साथ स्कूल जाते और साथ-साथ वापस लौटते थे। स्कूल में अर्जित और निशान्त हमेशा एक साथ रहते थे और हर कार्य एक-दूसरे के साथ करते थे। अर्जित और निशान्त स्नेह भाइयों से भी बढ़कर करते थे। कभी किसी ने उन्हें झगड़ते नहीं देखा था। इसी वजह से उनके अन्य सहपाठी उनसे चिढ़ने लगे थे। कक्षा में एक अन्य शरारती छात्र प्रतीक को अर्जित और निशान्त की दोस्ती फूटी आंख नहीं सुहाती थी। वह हमेशा उन्हें लड़ाने की ताक में रहता था। किन्तु उसे अभी तक सफलता नहीं मिली थी। प्रतीक ने एक योजना बनाई। योजनानुसार वह अवसर की तलाश में रहने लगा, जब उसे अर्जित और निशान्त अलग-अलग मिलें। एक दिन प्रतीक को अर्जित अकेला जाता मिल गया। प्रतीक ने उसे रोककर कहा अर्जित तुम्हें मालूम है निशान्त ने गोलू से क्या कहा है?

क्या कहा है? अर्जित ने पूछा।

उसने कहा कि अर्जित लालची है। मैं उसके साथ रुपये खर्च करता हूं, अतएव वह मेरे पास रहता है। निशान्त कह रहा था कि अर्जित मेरा सच्चा दोस्त नहीं है। वह तो बस रुपये पैसे का दोस्त है। यदि मैं उस पर रुपये खर्च करना बन्द कर दूं, तो वह मेरे साथ एक भी पल न रहे।

यह सुनकर पहले तो अर्जित बौखला गया फिर उसने प्रतीक से कहा।

प्रतीक मुझे विश्वास है कि निशान्त मेरे संबंध में ऐसा कुछ नहीं कह सकता, कभी नहीं कह सकता। तुम किसी गलतफहमी के शिकार हुये हो। यह सुनकर प्रतीक अर्जित का मुंह ताकने लगता। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि अर्जित ऐसा जवाव देगा। अर्जित का उत्तर सुनकर प्रतीकको लगा कि शायद वह अर्जित और निशान्त में फूट डालने के अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाये। किन्तु उसे अभी भी उम्मीद थी किशायद वह निशान्त का विश्वास तोड़ने में कामयाव हो जाये।

मौका पाकर दूसरे दिन प्रतीक ने अकेले में निशान्त से वही कहा किन्तु उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने निशान्त के मुंह से भी यही सुना "अर्जित ऐसा कह ही नहीं सकता। मुझे उस परं पूर्ण विश्वास है। अवश्य ही किसी ने तुम्हें बहका दिया है। अब प्रतीक को अपनी गलती महसूस हुई और उसने सोचा अर्जित और निशान्त को एक-दूसरे पर अत्यन्त विश्वास है और मैं इनके विश्वास को तोड़ने जा रहा था। प्रतीक ने अपने मन में दृढ़ विश्वास किया और निश्चय किया कि अब वह किसी का भी विश्वास तोड़ने में नहीं लगेगा। एक दिन अर्जित और निशान्त हमेशा की तरह साथ-साथ जा रहे थे, प्रतीक उनका रास्ता रोक कर खड़ा हो गया और बोला, अर्जित और निशान्त मुझे मांफकरना, मैं तुम दोनों में फूट डालने जा रहा था किन्तु तुम्हारे परस्पर अडिग विश्वास ने मुझे सफल नहीं होने दिया। मैं अपने इस कृत्य पर शर्मिन्दाा हूं। क्या तुम मुझे दोस्त बनाओगे? हां-हां क्यों नहीं। तीनों के हाथ दोस्ती हेतु आगे बढ़ चुके थे।

"जन-ज्ञान" प्रसार अभियान में योगदान ऋषि भक्तों-हिन्दुत्वनिष्ठों से आह्वान

- ❑ 'जनज्ञान मासिक' मात्र एक पत्रिका ही नहीं अपितु आन्दोलन है।
- ❑ राष्ट्रद्रोही तत्वों के षड़यन्त्रों का भण्डाफोड़ और राष्ट्रभक्तों को सुस्पष्ट समर्थन ही हमारी नीति है।
- ❑ देव दयानन्द की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हमारा संकल्प है।
- ❑ "सत्य के अर्थ" का प्रकाश हमारा व्रत है।
- ❑ वैदिक संस्कृति और हिन्दुत्व की मानव- कल्याणकारिणी विचारधारा के हम प्रसारक हैं।
- ❑ राष्ट्र की एकता और अखण्डता तथा सुरक्षा के लिए जन-जागरण ही हमारा कार्यक्रम है।
- ❑ "जनज्ञान" व्यवसायिक नहीं एक वैचारिक मासिक पत्रिका है। वार्षिक शुल्क ७० रुपये है। आजीवन ५०१ रु० है।
- ❑ **अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर हमारा सहयोग करें।**

आपका सहयोग ही जनज्ञान का सम्बल है। हमारा आप सब कृपालु पाठकों से आह्वान है कि राष्ट्रनिर्माण के इस अनुष्ठान को गतिमान रखने के लिए अपने सहयोग का हाथ और बढ़ायें। जनज्ञान को घर-घर में पहुँचाकर वैदिक संस्कृति और हिदुत्वनिष्ठा का प्रकाश फैलाएं।

अपने नगर में जनज्ञान की एजेन्सी स्थापित करें। नियम पत्र मंगायें।

छत्रपति शिवाजी

स्थान : कल्याण (महाराष्ट्र) का दुर्ग। विवाह का वातावरण। सर्वत्र उल्लास। नैपथ्य से मुबारकवाद के स्वर, शहनाई का उभरता स्वर। मंच के एक ओर से शाहजादा मंसूर अपनी नववधू जीनत के साथ जो घूंघट से अपने चेहरे को ढके हुए बढ़ती है तथा इसी ओर से शाहजादी गुलनार हाथों में हार लिए उनके समक्ष आती है।

गुलनार : भाईजान मुबारक हो, आपको यह हसीन खुशकिस्मत शादी मुबारक हो। सल्तनत के तमाम आवाम् की तरफ से लाख-लाख बधाइयां।

मंसूर : शुक्रिया गुलनार।

गुलनार : भाभीजान की आमद का खैर मकदम हम तहेदिल से करते हैं। भाईजान अब साथ ही भाभीजान से हमारे मन की कह दीजिए न।

मंसूर : अरे भई जब आप ननद-भाभी दोनों आमने-सामने हैं तब खुद क्यों नहीं कर देती।

गुलनार : लेकिन अभी तो बीच में बहुत बड़ी दीवार है। जब तक उसे हटाने के लिए नहीं कहेंगे तब तक हम अपनी भाभीजान से कैसे रू-ब-रू हो सकेंगे, कैसे कुछ कह पाऐंगे?

मंसूर : गुलनार तुम पहेलियों में बात करने में बड़ी माहिर हो। किले और घरों की दीवारें इसलिए मजबूत बनाई जाती हैं ताकि कोई दुश्मन पार न कर सके। अन्दर रहने वालों की हिफाजत हो सके। प्यार भरे रिश्तों में दीवारें नहीं खड़ी की जाती। बोलो तुम किस दीवार की बात कह रही हो?

गुलनार : अरे भैया छोटी सी बात कही थी। तुम इतना भी नहीं जान पाए हम किस दीवार का जिक्र कर रहे हैं। देखो आपके इन हाथों ने कई जंग फतह की हैं, आपकी इन हथेलियों और उनकी रेखाओं में हमारे खानदान का आफताब मुस्कराता है। रात के अन्धेरों में यही हाथ जब वो ही दीवार .... बड़ी लाज से बड़ी हया से तब कहीं....

मंसूर : तब कहीं .... (हंसता है) गुलनार तुमने बात पूरी नहीं की। अरे क्या सोचेगी तुम्हारी ये भाभी? कैसी है ये शोख-शरारती हमारी ननद जो आधी बात पेट में और आधी जुबां में रखने में माहिर है। अरे भाई जो लोग आधी बात पेट में रखने में माहिर होते हैं उन्हें बदहजमी हो जाती है (मंसूर हंसने लगता है।)

गुलनार : बदहजमी हो हमारे दुश्मनों को, हमें क्यों? हमारा दिल बहुत साफ और पाक है। जिसका दिल हो दुरुस्त वो हमेशा तन्दुरुस्त। (दोनों ठहाका लगाकर हंसते हैं)

मंसूर : लगता है अपनी भाभी की तुम सबसे बेहतर सहेली बनोगी।

गुलनार : रिश्ते तो वो ही बरकरार रहते हैं जिनमें दोस्ती की महक होती है। यकीनन हम अपनी भाभीजान से ऐसी ही मोहब्बत की उम्मीद रखते हैं। क्यों भाभीजान आपको मंजूर है हमारी दोस्ती का बढ़ाया हुआ ये हाथ। (जीनत घूंघट में हां के लिए गर्दन हिलाती है।)

मंसूर : लो इन्होंने तो हां कर दी आप दोनों में दोस्ती हो गई।

गुलनार : भाईजान आज रात जो दीवार आपने हटा कर किसी गुल के दीदार करने हैं वो हया और लाज की दीवार हम भी हटाकर जरा देख लें... कौन सा हुस्ने-चिराग कल्याण सल्तनत में इन ऐवानो को रोशन करने के लिए लाए हो।

मंसूर : घूंघट हटा कर देखने की गरज है (हंसते हुए) अपनी भाभीजान की मुंह दिखाई के लिए कोई तौहफा लाई हो क्या?

गुलनार : (थाल की डिबिया में से एक अत्यन्त सुन्दर हीरों का जड़ा हार निकाल कर दिखाते हुए— आपकी बहन हूं यहां की शहजादी हूं इतनी

बात तो हम भी जानते हैं। भाभीजान की मुंह दिखाई के लिए तोहफा तो देना ही है अब आप हमें इजाजत दें और अपनी नवेली दुल्हन को हुक्म दें वो अपना घूंघट हटाए ताकि हम उनके मुबारक दीदार कर सकें।

मंसूर : अपनी दुल्हन जीनत से) जरा घूंघट हटा के दिखाओ हम कौन सा नूर लाए हैं, नाजुक गुल के दिल में खुशबू भरपूर लाए हैं।

गुलनार : बड़ी इतमीनान से जीनत का घूंघट हटा कर मुंह देखती है जिसे देखकर वो हैरान रह जाती है। या अल्लाह! कितनी खूबसूरत हो। हुस्न का महेताब हो.... लगता है कोई मल्लिका-ए-हुस्न अभी चांदनी में नहा कर आई है। भाईजान मुबारक हो।

मंसूर : यह-यह कैसा शोर मचा है?

गुलनार : (घबराकर) हाय अल्लाह! ये कौन सा बेवक्त कुहराम है? जंग सी आवाजें किले की दीवार से सुनाई दे रही हैं तभी हाथों में तलवार संभाले कामिल आता है। वह बहुत परेशान है)

कामिल : मंसूर भाई जल्दी भागो— गुलनार जल्दी भागो— मराठों की फौज ने हम पर धावा बोल दिया है उनके सिपाही किले में घुस आए हैं।

मंसूर : (अत्यन्त क्रोध में) क्या यही वक्त मिला था इन दगाबाज मराठों को। कैसी बदशुकनी का आलम बना दिया है—गुलनार जल्दी करो। ये वक्त सोचने का नहीं।

जीनत : (घबराकर गुलनार से) मैं कैसे भाग सकती हूं। हाथों और पांवों में गहनों का बोझ। ये अब जंजीर बन गए हैं।

कामिल : मंसूर भाई— ये वक्त सोचने का नहीं है अब! एक ही छलांग में दुश्मन हमारे महलों में दाखिल हो जाएंगे। जल्दी करो गुलनार जल्दी करो। कहीं दुश्मन के नापाक हाथों पड़ गई तो बहुत मुश्किल होगी सारी इज्जत पलभर में खाक हो जाएगी।

(नेपथ्य से जय मां भवानी, अल्लाह हो अकबर आदि के स्वर युद्ध की विभीषिका की गहरायी देता संगीत)।

गुलनार का हाथ थामकर कामिल भागता है। मंसूर भी भागता है जीनत अकेली घबराई हुई रह जाती है।

जीनत : (घबराकर) या अल्लाह ये कैसा कहर बरपा है। चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा छा गया है। गुल होने लगे हैं हमारी उम्मीदों के चिराग। कैसी बदकिस्मत हूं कितनी मनहूस हूं, कैसे पांव पड़े हैं मेरे इस सल्तनत की जमीं पर, बरबादियों के अन्धड़ चलने लगे। यहां दुल्हन बनकर आई थी। सौंपा था सब कुछ मेरे घरवालों ने जिसके हाथों अब वो चला गया है या खुदा मेरी इज्जत की हिफाजत करना। कहीं दुश्मनों की सिपाहियों के नापाक हाथों में आ गई तो कहीं की न रहूंगी। सक कुछ लुट लाएगा। (तभी दो मराठा सैनिक हाथों में तलवार लिए उसकी ओर बढ़ते हैं। जीनत घबरा पीछे हटने लगती है। सहम कर...)

जीनत : नहीं .... नहीं खुदा के लिए नहीं .... (पीछे हटने लगती है)

सैनिक (क) : (ऊंची आवाज में) रुक जाओ, एक कदम भी पीछे हटाया तो समझना तुमने खुद अपनी बरबादियों को न्यौता दिया है।

सैनिक (ख) : (पास आकर) मां भवानी की कसम आज तक हमने इतनी सुन्दर इतनी खूबसूरत औरत नहीं देखी। अंग अंग में सुगन्ध है।

सैनिक (क) : (सैनिक ख को रोकते हुए) महाराज छत्रपति शिवाजी पूछेंगे, कल्याण के इस दुर्ग से कौन सा मूल्यवान रत्न, कौन सी दौलत लूटकर लाए हो तब दिखाएंगे इस हीरे को। जब यहां की लूट के खजाने भरे दरबार में पेश किए जाएंगे तो विश्वास करो भरपूर मनचाहा ईनाम पाएंगे।

सैनिक (ख) : (जीनत से) तुम्हारे जैसे नगीने से, तुम्हारे जैसे चिराग से यकीनन छत्रपति का रणिवास जगमगा उठेगा। तुम्हारी उपस्थिति से महलों की छटा और निखर उठेगी।

सैनिक क : भरे दरबार में महाराज ऐसी अलौकिक अप्सरा की छवि देखकर ठगे रह जाएंगे। विश्वास करो

मनचाहा ईनाम पाने के अधिकारी हैं हम। (सैनिक परस्पर वार्तालाप करने लगते हैं।)

जीनत : (रोने लगती है सिसकियां) अल्लाहताला के लिए गुनाह न कीजिए। देखिए मैं एक मासूम औरत हूं परवरदीगार हम पर कहर न बरपा दिखा दे तू रहम दिल है, नहीं.... नहीं हार गई मेरी किस्मत हार गई हूं मैं, हार गई हूं (रोने लगती है)

शिवाजी छत्रपति का सजा-संवरा दरबार। दरबारीगण व अष्ट प्रधान अपने-अपने आसनों पर विराजमान हैं। नेपथ्य से पहरेदार का स्वर उभरता है

स्वर : सावधान, हिन्दू राष्ट्र के गौरव, धर्म रक्षक, समाज संरक्षक, न्यायप्रिय महराजाधिराज छत्रपति शिवाजी दरबार में पधार रहे हैं।

(छत्रपति शिवाजी दरबार में आकर सिंहासन पर विराजमान होते हैं। सभी दरबारीगण उनका अभिवादन करते हैं।)

वालाजी : (उठकर) परम श्रद्धेय, मराठवाड़ा की जन-जन की आस्थाओं और विश्वास की कीर्ति पताका फहराने वाले हिन्दू राष्ट्र केशिरोमणि आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी, पूरे मराठवाड़ा को खुशी होगी हमारे सैनिक ने कल्याण राज्य के दुर्ग पर भगवा ध्वज फहरा दिया है।

सभी दरबारी : महाराज छत्रपति शिवाजी की जय
मराठा सैनिको की जय
मां भवानी की जय

वालाजी : प्रसन्नता की बात है हमारे सैनिकों के हाथों कल्याण राज्य और नबाव का अथाह राजकोष लगा है। हमारे सैनिकों ने जिस शौर्य और वीरता-साहस का परिचय देते हुए यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। ऐसे शुभअवसर पर मैं आप सबको बधाई देता हूं।

शिवाजी : प्रिय साथियो, मां भवानी की कृपा से आज हम अपनी पूज्य माता जीजाबाई की मनोकामना को अपने सैनिकों के समर्पण, त्याग और बलिदान की भावना से ये महत्त्वपूर्ण गौरवशाली विजय श्री प्राप्त करने में सफल हुए हैं। हम अपने सैनिकों और अधिकारियों के प्रति पूर्ण सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करते हैं। सेनापति जी विजयी सैनिकों का समुचित स्वागत और सम्मान करें।

सेनापति : महाराज इस सैनिक अभियान में एक महत्त्वपूर्ण रत्न हमें प्राप्त हुआ है जिसे एक उपहार केरूप में हम आपको भेंट करना चाहते हैं। हम चाहते हैं आप इस रत्न को अपनी माला में पिरो लें, अपनी मुद्रिका में सजा लें।

शिवाजी : लगता है कोई अद्वितीय और अलौकिक वस्तु आपके हाथों में लगी है। आपके इस उपहार का हम सम्मान करते हैं। जो कुछ भी सैनिक अभियान में प्राप्त किया श्रद्धाभाव से प्रस्तुत किया। सेनापति जी आपको अनुमति है आप जिस रत्न को हमें भेंट करना चाहते हैं सरे दरबार प्रस्तुत करें।

सेनापति : महाराज जैसी आपकी आज्ञा। (सेनापति के निर्देश पर दो सैनिकों के पीछे घूंघट में जीनत दरबार में लाई जाती है। सेनापति जीनत को अभिवादन का निर्देश देते हुए) महाराजाधिराज छत्रपति शिवाजी को प्रणाम करो। (जीनत झुककर सलाम करती है)

शिवाजी : (हैरान होकर) सेनापति जी, ये कौन हैं इन्हें किसलिए आप हमारे दरबार में लाए हैं।

सेनापति : महाराज यही वो अमूल्य रत्न है, इसकी अद्भुत चमक, सुन्दरता, सुकोमलता अनुपम है।

प्रधानमंत्री : महाराज अगर आपकी आज्ञा हो तो हमें भी इस सौन्दर्य के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है।

(तभी मराठी परिवेश में एक युवती आकर जीनत का घूंघट हटा कर उसकी मोहक छवि देखती है। सभी दरबारीगण जीनत केसौन्दर्य को देखकर चकित रह जाते हैं)

शिवाजी : अद्भुत छवि है तुम्हारे सौन्दर्य की। निसंदेह तुम आकाश से अवतरित कोई देवी हो। मैं मराठा साम्राज्य का अधिपति तुम्हारा सम्मान

करता हूं। काश! मेरी मां, मेरी जननी जीजाबाई भी तुम्हारे तुल्य सुन्दर होती तो मैं भी उसका कितना सुन्दर पुत्र होता। घबराओ नहीं देवी, लज्जा के असह्य बोझ से अपने आपको परेशान मत करो। हे मातृशक्ति मैं आपका आदर करता हूं। मैं आपको अभयदान देता हूं तुम भयमुक्त हो जाओ बहन। तुम किसी शत्रु के पक्ष में कैद नहीं वरन अपने भाई के घर में सुरक्षित हो।

सेनापति : क्षमा करें महाराज, हमने तो समझा था इनका साथ आपके विश्राम, मनोरंजन और आनन्द का एक स्रोत बन जाएगा।

शिवाजी : नहीं नहीं नहीं धर्म की नींव पर खड़ा ये साम्राज्य नारीत्व के अपमान, अबलाओं के अभिशाप का अधर्म कैसे झेल सकता है। स्मरण रहे हमारी प्राचीन श्रुतियों में जो कहा गया है उसका धर्मानुक्रम से हम आचरण करें यह अनिवार्य है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" वो ही शासक सफल माना जाता है जिसके राज्य में नारीत्व का समुचित सम्मान हो, वहीं देवताओं का निवास होता है।

सेनापति : महाराजाधिराज हम अपनी इस भूल और अपराध के लिए क्षमा चाहते हैं।

शिवाजी : सेनापति जी, कृपया इन्हें पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था में हमारे परिवार से इनके उपहारों सहित हमारी इस प्यारी बहिन को इसके परिवार में भेजने की व्यवस्था करें। वहां भेजने का प्रबन्ध जहां से ये ब्याही गई है।

सेनापति : जैसे आपकी आज्ञा। (चलने लगते हैं)

जीनत : हमने नहीं सुनी थी कभी ऐसा दास्तां, हमने नहीं देखी ऐसी अजमि शख्सियत जो फरिश्तों से भी बढ़कर हो। शिवाजी महाराज आपको लोग तब तक याद करते रहेंगे जब तक फलक में चांद सितारे रहेंगे— ऐ परवरदीगार अपने इस नेक दिल इन्सान की हिफाजत करना।

"आज के युग में वेदों की प्रासंगिकता"

—श्री अरविन्द महर्षि के एक अत्यन्त मार्मिक, ज्ञानवर्धक, खोजपूर्ण निबन्ध का हिन्दी रूपान्तर

३२ पृष्ठ की नयनाभिराम कवर युक्त ग्रंथिका के लिए डाक व्यय सहित १५/- अग्रिम भेजें

वेद सम्बन्धी श्री अरविन्द के अन्य ग्रन्थ

- वेद रहस्य पूर्वार्ध — १००/- मय मार्ग व्यय
- वेद रहस्य उत्तरार्ध — १००/- मय मार्ग व्यय
- दिव्य जीवन — १६०/- मय मार्ग व्यय
- योग-समन्वय — २१५/- मय मार्ग व्यय

Le Logos, 6562/9 Chamelian Road, Delhi-110006 (INDIA)

Sponsored by

Sri Aravind Chetana Samaj, Educational Trust Delhi

देवता स्वरूप भाई परमानन्द श्रद्धांजलि विशेषांक

महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घोषित वेद के आह्वान 'कृण्वन्तो विश्मार्यम्' को साकार करने के लिए दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज का संदेश सर्वप्रथम गुंजाने वाले महान मनीषी थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द।

लाला हरदयाल जैसे तपस्वी और मनस्वी को निराशा से उबार कर क्रांतिपथ को अपनाने के लिए प्रेरित करने वाले प्रेरणा पुंज थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द!!

सशस्त्र क्रान्ति पथ के पथिक करतार सिंह सरावा सरीखे क्रान्तिधर्मी के मानस में राष्ट्र प्रेम की ज्वाला धधकाने वाले क्रान्ति स्वरूप थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द!!!

भारतीय इतिहास के सत्य स्वरूप को अपनी लोह लेखनी से उद्घाटित करने वाले महान इतिहासकार थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द!!!

फांसी के फंदे ने भी युग के उस चमत्कारी पुरुष से हार मान ली थी। अंडमान की क्रूर कारा में यम यातनाएं झेलते समय मुस्कुराने वाले उद्भट मनस्वी थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द!!!

अमर हुतात्मा राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक तथा लाहिड़ी और रोशन सिंह को अंग्रेज सरकार से टकराने के लिए प्रेरित किया था जिसने अपने तप, त्याग से, वह कर्मयोगी थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द!!!

भगत सिंह को मातृ मन्दिर में आरती उतारने में जीवन वारने का महामंत्र प्रदान करने वाले महान शिक्षक थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द।

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के अनन्य सहयोगी के रूप में हिन्दू राष्ट्रवाद को एक प्रखर आंदोलन में परिणत करने वाले युग पुरुष थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द!!!

जिनका विस्तर सिर पर धारण कर महात्मा गांधी ने स्वयं को धन्य माना था, जिन्होंने सबल हिन्दू राष्ट्र के निर्माण हेतु डॉ० केशवराव बलिराव हेडगेवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य विस्तार में तन, मन, धन से सहयोग दिया था वह राष्ट्र नायक थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द। तुष्टिकरण की राजनीति के फलस्वरूप देश के विभाजन की अनेक वर्ष पूर्व चेतावनी देने वाले युग पुरुष थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द।

दिसम्बर मास उस युगदृष्टा, युग सृष्टा के आत्मार्पण की स्मृतियां सहेजे आता है। जनज्ञान दिसम्बर मास का अंक उस युग पुरुष की स्मृति में श्रद्धांजलि विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। इस अंक के पन्नों को पावन करेगा उनका आग्नेय जीवन वृत्त। वे शोभा पाएंगे उस महान चिंतक के दर्शन से और सुगन्धित होंगे, देव दयानन्द की स्वदेश स्वातन्त्र्य आकांक्षा को साकार रूप प्रदान करने हेतु मनसा, वाचा कर्मणा समर्पित रहे महान् राजनेता के प्रति उनके समकालीन राजनीतिज्ञों और सामाजिक क्षेत्र में अग्रगण्य रहे कर्मनिष्ठों द्वारा समर्पित श्रद्धा सुमनों से।

जनज्ञान का यह विशेषांक संग्रहणीय होगा। इसे अधिकाधिक हाथों में पहुंचाने के लिए हमें पाठकवृंद से अतिरिक्त प्रतियों के आदेश की प्रतीक्षा रहेगी। प्रतीक्षा करेंगे हम अपने उदार और साधन संपन्न सहयोगियों से अपने अथवा अपने मित्रों के व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापनों की भी। *व्यवस्थापक*

कार्यालय : "जनज्ञान" (मासिक) २२८६, आर्य समाज मार्ग करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

दूरभाष : ५७२४७४१

खेल जगत्

पोलो जगत् का सिरमौर रही जयपुर पोलो टीम

ब्रिटिश हुकूमत के दौरान १९३३ में जब अंग्रेज भारत की आजादी के दीवानों पर अपना दमन चक्र चला रहे थे, ठीक उसी समय भारतीयों का एक दल अंग्रेजों की जमीन पर गोरी जाति पर एक अलग तरह का कहर बरपा रहा था। फर्क सिर्फ यह था कि भारत में एक राजनीतिक लड़ाई लड़ी जा रही थी जबकि ब्रिटेन में पोलो मैदानों पर खेल की एक रोमांचक स्पर्द्धा चल रही थी। इस स्पर्द्धा में एक ओर गोरी टीमें थी तथा दूसरी ओर थी भारत से गई जयपुर की शाही पोलो टीम।

१९३३ में जयपुर की शाही पोलो टीम ने इंग्लैंड की धरती पर खेले सारे मैच भारी अन्तर से जीते। जयपुर टीम के हैरतअंगेज खेल से अंग्रेजों के छक्के छूट गए और ब्रिटेन के पोलो जगत् में जयपुर आतंक व अजेयता का पर्याय बन गया। उसी समय इंग्लैंड के कार्टूनिस्ट टॉट ने वह विख्यात कार्टून बनाया जिसमें जयपुर टीम के चारों सदस्यों को पोलो स्टिकों के साथ हाथी पर बैठे दिखाया गया और उनके भय से घुड़सवार ब्रिटिश पोलो खिलाड़ी चूहों की तरह इधर-उधर दुबक रहे हैं। कार्टून का कैप्शन था "जयपुर की शान-बचो, हाथी आ रहा है।" जयपुर की इस टीम में थे जयपुर के राजकुमार पृथ्वीसिंह (सात हैन्डीकैप), राव अभयसिंह (आठ हैन्डीकैप), जोधपुर के रावराजा हनूतसिंह (नौ हैन्डीकैप) तथा जयपुर के महाराजा मानसिंह (१० हैन्डीकैप)।

जयपुर की इस शाही पोलो टीम का कमाल तात्कालिक नहीं था बल्कि जयपुर तथा उसकी पूर्ववर्ती रियासत आमेर का शाही परिवार पोलो से अन्तरंग रूप से जुड़े रहने की परिणति थी। रियासती काल में जयपुर में पोलो खूल फला-फूला। मुगल सम्राट अकबर के काल में आमेर के राजा मानसिंह (प्रथम) ने बादशाह के दरबार में रहते हुए चौगान (पोलो) में गहरी रुचि दिखाई। उस समय दरबार में पोलो की विशिष्ट अहमियत थी। अकबर के नवरत्नों में से एक अबुल फजल ने अपनी पुस्तक 'आइने अकबरी' में पोलो की अहमियत का खूबसूरत वर्णन किया है कि मुगल बादशाह नगाड़ों की धुन के बीच सोने व चांदी की छड़ी से मैदान के किसी भी कोने से चमचमाती गेंद पर शॉट लगाने में माहिर हैं। उसी शाही अंदाज में आमेर में भी पोलो परवान चढ़ा। आमेर के सूरत खाने में मौजूद कई चित्रकारियां तत्कालीन शासकों के पोलो के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करती हैं। उन चित्रों में आमेर के राजा और रानियों को हाथी व घोड़ों पर बैठकर पोलो खेलते दर्शाया गया है। राजा मानसिंह (प्रथम) के बाद राजा रामसिंह (प्रथम) आदि भी पोलो की हस्ती के रूप में विख्यात हुए। जयपुर के संस्थापक राजा जयसिंह (प्रथम) ने १७२७ में जब जयपुर की स्थापना की तो पोलो को विशेष दर्जा देते हुए अपने शाही महल के निकट ही पोलो मैदान बनाया और उसका नाम भी रखा 'चौगान'। तब से आज तक यह मैदान इसी नाम से जाना जाता है। चौगान को शानदार पैवेलियन तथा अन्य सुविधाओं से सुसज्जित किया गया, साथ ही खेल देखने के लिए दर्शकों तथा राजपरिवार के सदस्यों के मैदान तक पहुंचने के लिए भी विशिष्ट इन्तजाम किए गए। महल से मैदान तक एक सुरंग बनाई गई और मैदान के दोनों ओर ब्लू पॉटरी से सजी हुई 'चीनी की बुर्ज' और महिलाओं के लिए जनाना बुर्ज बनाई गई। इन बुर्जों में सुराख रखे गए जिनसे खेल का लुत्फ उठाया जा सकता था। अंग्रेजों के देश में आगमन तथा रियासतों में हस्तक्षेप का भी जयपुर के पोलो पर सकारात्मक असर ही हुआ। सवाई रामसिंह (द्वितीय) अश्व पालन और अपनी घुड़सवारी की पोशाक के लिए विख्यात हुए। सवाई माधोसिंह द्वितीय के काल (१८८०-१९२२) में १८वीं शताब्दी के अन्तिम दौर में दरबार के इंजीनियर स्विंटन जैकब ने ९०० गज लम्बा व ५०० गज चौड़ा पोलो का मैदान बनवाया और उसमें करीब एक क्विंटल दूब लगाई। उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत में तैयार इस मैदान पर तब ६००० रुपए खर्च हुए और शानदार समारोह में धूमधाम से उसका उद्‌घाटन हुआ। इस नवनिर्मित मैदान तथा अजमेर के मेयो कॉलेज मैदान पर महाराजा मानसिंह द्वितीय ने पोलो खेलना सीखा और पूरे विश्व में नाम कमाया। महाराजा मानसिंह को मौजूदा मैदान छोटे लगने लगे और एक और मैदान बनाया। इस मैदान पर ही उन्होंने इस 'जयपुर टीम' को प्रशिक्षित किया जिसने १९३३ के इंग्लैंड दौरे में धूम मचाई और अंग्रेज टीम के छक्के छुड़ा दिए। महाराजा मानसिंह ने बाद में अपने शाही महल के निकट एक और मैदान बनवाया 'रामबाग पोलो मैदान'। यह मैदान आज तक पोलो के सर्वश्रेष्ठ मैदान में से एक माना जाता है।

आशुतोष शर्मा

आन्तरिक वस्त्रों में अग्रणी-ग्रोवर सन्स

आजकल के इस कम्प्यूटर युग में महिलाओं की इच्छाओं के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। कल की सुविधाएं आज की जरूरत बन गई हैं इस तरह महिलाओं के रहन-सहन में आधुनिक क्रांति आई है। लेकिन रेडीमेड वस्त्रों में पहला क्रांतिकारी परिवर्तन आज से करीब १०० साल पहले ही हो गया जब फ्रांस के हरनाम रैडशेली ने पैरिस में ब्रेजियर का आविष्कार किया था। तब से आज तक में ब्रेजरी उद्योग में अनेक परिवर्तन हुए हैं। आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व महिलाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए चमन लाल ग्रोवर के नाम से अंतरराष्ट्रीय स्तर के ब्रा एवं पैंटीज का उत्पादन शुरू किया।

ग्रोवर सन्स के ब्रा एवं पैंटीज सादे डिजाइनों के साथ-साथ एक से बढ़कर एक फैंसी डिजाइनों में उपलब्ध हैं। जो सूती, रूबिया, टैरीकाट, कैमारिक तथा विभिन्न सिंथेटिक कपड़ों तथा नायलान लैस के कपड़ों से बनाई जाती हैं। दिल्ली के प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र करोल बाग के ग्रोवर सन्स के डायरेक्टर राकेश ग्रोवर ने एक भेंट में बताया कि ग्रोवर सन्स द्वारा बनाए जा रहे स्पर्श, शालिनी, सरिता ब्रा एवं पैंटीज की फैंसी रेंज के सभी प्रान्तों के हर वर्ग की महिलाओं के फैशन के अनुसार आधुनिक डिजाइन में बनाए जाते हैं।

समाचार दर्शन

पेरु में संस्कृत शिलालेख

एक जर्मन भाषाविद कुर्त शिल्दमन का दावा है कि पेरु और संयुक्त राज्य अमरीका में प्राप्त प्राचीन शिलालेख संस्कृत से मिलते-जुलते हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय नाविक और किसी से पहले अमरीका पहुंच गये होंगे। शिल्दमन पहले जर्मन सरकार की सेवा में थे। तीस वर्ष से अधिक समय तक भाषा सम्बन्धी अध्ययन करने पर और सिन्धुघाटी सभ्यता की लिपि पढ़ लेने पर उन्हें उपर्युक्त समानता का पता चला। इस विद्वान् का आग्रह है कि सिन्धुघाटी की लिपि संस्कृत पर आधारित है। उसका किसी द्रविड़ भाषा से सम्बन्ध नहीं जैसा कि रूसी और फिनलैंड के भाषाविदों और इतिहासज्ञों ने प्रचारित किया हुआ है।

श्री शिल्दमन कहते हैं कि "संस्कृत का अध्ययन मेरा सबसे बड़ा अनुराग है।" वे अब ८८ वर्ष के हैं और बॉन के उपनगर हाइडरहोफ में रहते हैं। उनका दावा है कि उन्होंने सिन्धुघाटी की लिपि को पढ़ लिया है। (हिन्दुस्तान टाइम्स, ८ सितम्बर १९९७ के अंक से साभार)

अनु० डॉ० कृष्णलाल, आचार्य संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

आर्य समाज सान्ताक्रुज का ५४वां स्थापना दिवस सम्पन्न

मुम्बई : आर्य समाज सान्ताक्रुज का ५४वां स्थापना दिवस समारोह २ अक्टूबर को सोत्साह सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल ८ बजे से डॉ० सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। पश्चात डॉ० सोमदेव शास्त्री, श्री ओंकारनाथ आर्य, श्री विमल स्वरूप सूद एवं श्री महाशय चमनलाल ने आर्य समाज के उद्देश्य और आवश्यकता पर विचार प्रकट किये। ५ अक्टूबर को प्रातःकाल ८ बजे आचार्य बलदेव के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ तत्पश्चात १० बजे से पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार समारोह आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज मुम्बई में सानन्द सम्पन्न हुआ। इस वर्ष यह पुरस्कार तपोनिष्ठ विद्वान आचार्य बलदेव जी— गुरुकुल कालवा, जीन्द (हरियाणा कोरुपये ११००१/, रजत ट्राफी, चन्द्रहार, शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। अध्यक्षता महाशय चमनलाल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ० रामरूप मिश्र, आचार्य मुम्बादेवी संस्कृत महाविद्यालय मुम्बई एवं श्री झाऊलाल शर्मा, प्रधान आर्य समाज काकड़वाड़ी मुम्बई थे। दिल्ली से आये हुए पं० महेन्द्र शास्त्री ने वेद मंत्रों द्वारा मंगल कामना की।

सत्संग एवं वेदों का उपदेश

पानीपत। आर्य समाज हुड्डा पार्ट-२ पानीपत का दसवां वार्षिकोत्सव १४ नवम्बर से १६ नवम्बर तक आर्य समाज परिसर में महान सत्संग एवं वेदोपदेश का आयोजन किया जा रहा है जिसमें संन्यासी, महात्मा, विद्वान एवं मधुर भजनों के संगीतज्ञ पधार रहे हैं। १२ नवम्बर को ५.३० से ७ बजे तक आर्य समाज से प्रारम्भ होकर प्रभातफेरी हाऊसिंग बोर्ड कालोनी में निकाली जाएगी। १४, १५ और १६ नवम्बर को आर्य समाज परिसर में सत्संग एव मधुर भजन होंगे।

गोरक्षा बलिदानी स्मृति दिवस

दिल्ली। ७ नवम्बर, १९६६ के गोभक्त शहीदों को श्रद्धांजलि प्रातः ११ बजे संसद भवन के सामने गोल चक्कर पर अर्पित करने का आयोजन किया। भारत गोसेवक समाज के मंत्री श्री प्रेमचंद गुप्ता ने गोभक्तों से अधिकाधिक संख्या में श्रद्धांजलि सभा में भाग लेने का आग्रह किया है।

उ० दिल्ली वेद प्रचार मंडल

दिल्ली। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल की बैठक १९ अक्टूबर को हुई। अनेक आर्य समाजों के प्रधान, मंत्रियों एवं अन्य अधिकारियों ने बैठक में स्वतंत्रता की अर्धशताब्दी के उपलक्ष्य में मथुरा से दिल्ली लाई गई ज्योति यात्रा सफल आयोजन पर बधाई दी। दयानन्द निर्वाणोत्सव २ नवम्बर को आयोज़ित करने पर भी विचार हुआ।

जिसके घर में वेद नहीं
वह हिन्दू का घर नहीं

(परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 1600/– रु०
अभी लेने पर 1200/– रु०

(मन्त्र–शब्दार्थ–छन्द–स्वर–देवता आदि सहित)
23×36 से०मी० साइज में, पृष्ठ 2200
बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन लगभग 8 किलो

श्रेष्ठ बढ़िया पेपर पर 3000/– रु० अब 2250/– रु० में प्राप्त करें

आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा ½ धन अवश्य भेजें।

पं० राकेशरानी–अध्यक्ष **दयानन्द संस्थान**

वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, दिल्ली–110036

सम्पर्क कार्यालय : 2286, आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली–110005, दूरभाष–5724741

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर —महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो. आ. मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३६

कार्तिक २०५४
नवम्बर 1997

Posted at N. D. PSD on
Date 5 & 6-Delhi Postal
Registration No DL-11185/97
R. N. 10719.65

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य 1600 रु.
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड)	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने हुये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	35 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	65 रु.
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या	60 रु.
6.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	6 रु.
7.	धरती का स्वर्ग	6 रु.
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र)	50 रु.
9.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	10 रु.
10.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	6 रु.
11.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	4 रु.
12.	वैदिक सम्पत्ति	151 रु.
13.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	6 रु.
14.	योगासन	4 रु.
15.	योग और ब्रह्मचर्य	6 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	Concept of God	50 रु.
18.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
19.	Light of Truth	100 रु.
20.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	10 रु.
21.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	50 रु.
22.	संक्षिप्त महाभारत	50 रु.
23.	संक्षिप्त रामायण	15 रु.
24.	ऋग्वेद शतकम	6 रु.
25.	वैदिक सान्ध्य गीत	6 रु.
26.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	3 रु.

100 रु० से अधिक साहित्य पर 15 प्रतिशत 300 रु० से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 रु० से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारूल इस्लाम बनने देंगे?	1.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षुः	1.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? - वेदभिक्षुः	1.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं- वीर सावरकर	1.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? "राकेश रानी"	1.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ - जहीर नियाजी	1.00 रु.
7.	हिन्दू जागो! देश बचाओ	1.00 रु.
8.	इस्लाम - एक परिचय	1.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षुः	1.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	1.00 रु.
11.	बाईबल की चुनौती	1.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	1.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	1.00 रु.
14.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	1.00 रु.
15.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	1.00 रु.
16.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	1.00 रु.
17.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा।	1.00 रु.
18.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे
19.	वीर सावरकर - संक्षिप्त जीवन परिचय	4.00 रु.
20.	मोपला (उपन्यास) - वीर सावरकर	6.00 रु.
21.	जनज्ञान का 'सावरकर विशेषांक'	6.00 रु.

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक - दयानन्द संस्थान
2286-आर्य समाज मार्ग, नई दिल्ली-5